1903



। गौरी शङ्करायण ।

जिसको

भागलपुरान्तर्गत आदमपुरग्रामनिवासी श्रीमिश्रश्रीलालमिश्रात्मज

श्रीगौरीप्रसादमिश्र जी

पूर्व्वगतमुनसिफ भागलपुर, मुंगेर, जमुई, बिहार, हाजीपुर इत्यादि

तथा

वर्त्तमान वकील अदालत जजी भागलपुर

ने

शिवपुराण से कवित्त मे वर्णन करके श्रीरामचन्द्र मिश्र प्रिन्टर

सेन्ट्रलप्रेस भागलपुर द्वारा छपवाकर

प्रकाशकिया

BHAGALPUR

Printed at the Central Press by Ramchandra Misra

& Published by the author.

1903.

३-२-१९०३ } प्रथमबार १००० कौपी



। गौरी शङ्करायण ।

जिसको

भागलपुरान्तर्गत आदमपुरग्रामनिवासी श्रीबिरञ्चीलालमिश्रात्मज

श्रीगौरीप्रसादमिश्र जी

पूर्व्वगतमुनसिफ भागलपुर, मुंगेर, जमुई, बिहार, हाजीपुर इत्यादि

तथा

वर्त्तमान वकील अदालत जजी भागलपुर

ने

शिवपुराण से कवित्त मे वर्णन करके श्रीरामचन्द्र मिश्र प्रिन्टर
सेन्ट्रलप्रेस भागलपुर द्वारा छपवाकर
प्रकाशकिया

BHAGALPUR
Printed at the Central Press by Ramchandra Misra
& Published by the author.
1903.

३-२-१९०३ } प्रथमबार १००० कोपी

श्री गणेशाय नमः ।



सेन्द्रा देवगणा मुनीश्वरजनाः लोकाः सपालाः सदा ।
स्वं स्वं कर्म्मसुसिद्धये प्रतिदिनं भक्त्या भजन्त्युत्तमाः ॥
तं विघ्नेशमनन्तमच्युतमजं सर्व्वज्ञसर्व्वाश्रयं ।
वन्दे वैदिकतान्त्रिकादिविविधैः शास्त्रैःपुरोवन्दितम् ॥ १ ॥

॥ अथ गौरीशङ्करायण ॥



अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरं ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥२॥

॥ अथ प्रथमखण्ड ॥

॥ सर्वसृष्टि ॥

॥ १ ॥ अथ नारदगर्व्वहरण ।

नैमिष कानन महं, सूतहिं शौनकमुनि, संगलेई ऋषिग ण, पूछै शिरनाई कै ॥
शिवके गुणानुवाद, कहहु हमहिं तात, सुनि गातपुलकि त, कहै सूत गाईकै ॥
नारदहिं विधि एक, बार जेहिविधि कहे, सोई समाचा र सूत, कहत बुझाईकै ।
गौरिपति शिवगुण, महिमा प्रताप यश, सुनिये मुदित मन, कलुष नशाईकै ॥ १ ॥
हिमगिरि निकट, सोहात तब ठामएक, जेहितट सुरस रि, धार बहि गयो हैं प. ।
नारद कियेउ तप, कठिन कठोर जाई, तेहिचोर देखि शं च, पति दुख भयो हैं ॥
कामहिं बिनति कियो, मुनि तपभंग हेतु, भेजे तेहिठाम काम, होय शोक त हैं ।
उपाई अनेक कियो, काम हारि थाकि गये, जीति काम नारद, गुनान गौरि कयो हैं ॥ २ ॥
नारद के उरभयो, भारो अभिमान तब, तजि ज्ञान ध्यान मुनि, शिवलोक गये हैं ।
जेहिविधि काम बश, कियो मुनिवर हर, कहि समाचार म न, हर्षित भये हैं ॥
हत बुझाई शिव, जनि कहु अस मुनि, काम को जितनहार. जनम न लये हैं ।
गु के समीप जाई, कहिहौ न अस मुनि, गौरि शिव नारद, प शो बोध वहुदये हैं ३ ॥

बिधि के निकट तब, गयेउ नारदमुनि, भई पुनि मुनि गर्ब्ब, दूनो मुनिराई कै ।
काम को पराजय को, वृतान्त कह्यो मुनिराज, सुनि बिधि नारदहिं, कह्यो समुझाई कै ।
बिष्णु के निकट तात, कहिहो न एहिबात, सुनि मुनि आये हरि, पुरि हर्षाई कै ।
गौरि देखि मुनिबर, कियो सनमान अति, पूछ्यो कुशलात तब, हरि मुनिराई कै ॥ ४ ॥
कहत नारदमुनि, सुनो महाराज आज, काम को पराजय कियो, तिहरो प्रताप तें ।
सुनि कियो विनति, अनेक विधि नारायण, नारद को चली सुनि, झटपट आप तें ॥
शिव तब अद्भुत, काम कियो तेहिठाम, रचि एक नगर को, विविध कलाप तें ।
शीलनिधि नृप रहे, गौरि तेहि नगर के, जेहि रही ब्याहे योग्य, कन्या गुण झाप तें ॥ ५ ॥
रहे सोई ठाम बैठि, सभाकरि नृप बहु, सुन्दर स्वरूप निज, अनूप बनाईकै ।
नारदहुं लालच, भयेउ तहं गमन कि, गये सभामांझ तब, चित हर्षाईकै ॥
देखि एक सुन्दरी, तुरत गये बिष्णुधाम, मांगि रूप सुन्दर, अधिक गुणगाईकै ।
गौरि कहै नारायण, बैद्य जस रोग हरै, तेहि बिधि रोग तब, दिजिहौं छोड़ाईकै ॥ ६ ॥
तन नर कर अति, सुन्दर आनन पुनि, बानर के पाई मुनि, राई तब चले हैं ।
जाई बैठे तेहि सभा, फूलि मुनिराई तब, जेहिठाम दुई शिव, गण बैठे भले हैं ॥
नारि फिरि गई मुनि, आनन निहारि करि, विकल अधिक मुनि, भलिभांति छले हैं ।
हंसि उठे दोउ शिव, गण तेहि छन गौरि, शिव मायावश मद, नारद के गले हैं ॥ ७ ॥
मुनि तप बल जल, प्रगट कियेउ तहं, देखि मुख वानर, समान कोपे भारा हैं ।
शाप दियो दोउ शिव, गण कहं होहु तुम, राक्षस अघोरो पापी, छली दुराचारी हैं ॥
विष्णु सङ्ग नारि लेई, बहुरि निहारि मुनि, शाप दियो जेहि तें, मानुष तनु धारी हैं ।
नारी के विरह रहो, वानर सहाई पाई, गौरि शिव दयाकरि, मोह दुख टारी हैं ॥ ८ ॥
नारि गई धरणी, समाई गई माया दूर, शिव दियो ज्ञान उर, नारद लजाये हैं ।
गहि पद विष्णु कर, कहत नारदमुनि, अहो शिव खण्ड करु, शाप मोह छाये हैं ॥
विष्णु विनति कियो, छमु अपराध नाथ, सुनि विष्णु नारायण, मुनि समुझाये हैं ।
शिव गुण महिमा, प्रताप सुनि मुनि तब, वेगि गौरि शिवपद, गहन को धाये हैं ॥ ९ ॥
भेंट भई पथ दोउ, शिवगण सन तब, विनति करत दोउ, जन कर जोरिकै ।
चूक छमि महाराज, लाज रखु शरण के, विनय करत मुनि, बरहिं निहोरिकै ॥
सुनि मुनि दियो वर, दान तेहि दया करि, तनु मुनि वीज रज, राक्षस के वोरि कै ।
होइहैं तोहार, संसार से अपार चैन, प्रभु को प्रताप गौरि, दोऊ अनुजोरि कै ॥ १० ॥

सदा शिवभक्ति उर, तिहरो विराजि हैं ।
सृष्टि को विजय करि, भोग भोगि नानाविधि,
शिव अरु विष्णु दोउ, गृह तेरो राजि हैं ॥
अन्तहिं नागर यो, मानुष कर मुक्ति तव,
कहि अस मुनिवर, विधिलोक छाजि हैं ।
दीजिहैं परम गति, ताहि तव दया करि,
मोद भरें सुर नभ, बाजा बहु बाजि हैं ॥ ११ ॥
शिवगुणगान गौरि, नारद विरञ्चि करैं,

॥ नारदप्रति ब्रह्मा का शिवपुराण वर्णन ॥

कहिये बुझाई दया, करि बिस्तारि कै ।
नारद कहत मोहि, शिवगुणगान तात,
पूछि बात नीक तात, हित संसारि के ॥
सुनि विधि जलभरि, कमल नयन युग,
कही विधि बहुविधि, नारद बिचारि कै ।
निर्गुण स्वरूप, अनूप शोभैं शिव जी के,
देत सुनि भवरोग, शोक दुख टारि कै ॥ १२ ॥
गौरि शिव स्वरूप, सगुण वर्णन मुनि,

॥ शिव जी का सगुण स्वरूप ॥

महादेव जी के बड़ो, सुन्दर सुहावनो ।
सगुण को रूप अब, सुनिये सुजन गण,
छावे चांप सदृश, त्रिपुण्ड मनभावनो ॥
शीश पर जटाजूट, गंगा भाल बिधु राजैं,
नैनलाल तीन सोम, अग्नि रवि पावनो ।
श्रवण कुण्डल हेम, कर झलकत अति,
गौरि पंचमुख शिव, जन दरशावनो ॥ १३ ॥
कीरद्रुव नासिका, औ ओष्ठ लाल कुन्दुरु से,
जैसो होत उदय प्रभातकाल मांहि मे ।
प्रथम आनन पूर्व, ओर शोभैं रवि इव,
दुतिया के चांद राजैं, भलो भाल मांहि मे ॥
कमल समान शोभैं, तीनो नैन तेहि कर,
दन्त विकराल तीन, नैन भाल मांहि मे ।
दूजो मुख दच्छिण को, ओर शोभैं शिव जी के,
होंठ फड़कत गौरि, विधु भाल मांहि मे ॥ १४ ॥
शोभत कमान के, समान भौंह शिव जी के,
जेहिमहं तीननैन शोभैं शिव हर के ॥
तीसर आनन राजैं, पश्चिम की ओर भली,
जेहि देखि मोहैं मन, सुर मुनि नर के ॥
भाल अर्द्धचन्द्र शोभैं, मनोहर रूप अति,
श्याम वर्ण केश रहो, फैलि मुख पर के ।
मूंगा के समान शोभैं, चौथा मुख शिव जी के,
रूप हैं अनूप बड़ो, सदा गौरि वर के ॥ १५ ॥
तीनो नैन लाल भाल, दुतिया के चांद राजैं,
करत आनन्द चित, बड़ो भक्त गन के ।
पांचम आनन नीचे, ओर देखैं शिव जी के,
श्वेतवर्ण चन्द्रमा के, रेखा भाल तन के ॥
तीनो नैन शोभैं जनु, कमल विकसि गयो,
शूल धरे कर गले, मुण्डन सुमन के ।
ग्रीवा महं रेखा तीन, हलाहल श्याम रंग,
दश भुज भिन्न मत, रूप वर्णन के ॥ १६ ॥
गौरि चारि भुज पुनि, पंच भुज अष्ट भुज,
हाथ गौरि नाथ के, कमल इव लाल हैं ।
खड्ग खड्ग शस्त्र, लिये कर राजैं हर,
राजत अनूप रूप, कालहुं के काल हैं ॥
अंगुरी भी लाल नख, पेड़वा के चन्द्रवत्,

अष्ट भुज होत जब, शूल असि पवि पुनि, फरसा सोहात दिशि, दाहिनि बिशाल हैं ।
बाम ओर अंकुश, खट्वांग नाग कर लिये, होय बसि गौरि काटि, भव भय जाल हैं ॥ १७ ॥
दश भुज रूप जब, होत महादेव प्रभु, शूल पवि चक्र कर, फरसा है दाहिनो ।
बांमकर नाग घंटा, पाश लिये डमरु हैं, अंकुश हृदय चौड़ो, अधिक सराहिनो ॥
त्रिवलि उदर पड़ो, नाभि हैं गंभीर अति, कटि हैं विचित्र उरु, मन बश लाहिनो ।
कदलि के थंभ द्वब, साफ चमकत वडो, गौरि सोई रूप भव, जन मन भावनो ॥ १८ ॥
पद तल लाल जस, बाल सोम चमकत, श्वेत बर्ण भसम, रमाये शिव साथहीं ।
पांच कला पांच ब्रह्म, सदा बसैं शिव तन, तीनो शक्ति सतत, रहति शिव साथहीं ॥
पांच छः अक्षर से, शरीर शोभैं शिव जी के, गावत हैं बेद औ, पुराण गुणगाथहीं ।
हि रूप ध्यान मेरो, बसहु सकल काल, गौरि युगपाणि बिनय, करुं गौरिनाथहीं ॥ १९ ॥

॥ जगदम्बा रूप वर्णन ॥

प्रगट भयेउ तब, महाशक्ति महामाया, शिव के शरीर तें, अनूप रूपधारी हैं ।
तेज़मय तन किये, षोड़श शृङ्गार माई, श्याम हैं शरीर पुनि, शिर केश कारी हैं ॥
केशर के पुष्पवत, केशर ललाट अर्द्ध, चन्द्र शोभैं जगदम्ब, श्याम कुन्तलारी हैं ।
रत्न के समूह हेम, कुण्डल बिराजैं दोउ, श्रवण पै गौरि नैन, लाल अरुणारी हैं ॥ २० ॥
कमान के समान शोभे, भौंह जगदंब कर, नासिका सोहात जनु, चोंच लाल कीर के ।
ओठ हैं कुन्दुरु सम, मूंगा झल मल करै, वरण के योग्य नहिं कविवर धीर के ॥
कोउ चारि भुज कहै, कोउ अष्टभुज पुनि, धरे कर शस्त्र जो, नाशक भव पीर के ।
धनुष कृपाण शूल, बाण चर्म्म शंख चक्र, गौरि श्वेत हेम रंग, रूप हैं शरीर के ॥ २१ ॥
आदिशक्ति जननि, बिरञ्चि बिष्णु कर सोई, कारण सकल सृष्टि, कर जग अहई ।
संग जगदम्ब लेई, अविमुक्त धाम शिव, अबहुं प्रगट घट, घट मह रहई ॥
काशी सुखराशी धाम, शिव को आनन्द बन, एहिहेतु कोविद, सुजान कवि कहई ।
गौरि छल त्यागि भजु, शिव जगदम्ब नित, काशिहिं मरत जन, मुक्ति पद लहई ॥ २२ ॥

॥ बिष्णु की उत्पत्ति ॥

शिव अनुमति, अनुसार जगदम्ब तब, देखि वाम ओर, एक जन उपजायो है ।
अति रूपवान शील, वान बुद्धिवान पुनि, गुणवान श्यामवर्ण, त्रिपुण्ड लगायो हैं ॥
जलज नयन ओष्ठ, लाल गले कौस्तुभमणि, कंठहि बैजन्ति बन, मालहु सुहायो है ।
चारिभुज शङ्ख चक्र, गदा पद्म धरे गौरि, बिष्णु महाराज रूप, प्रगट जनायो है ॥ २३ ॥

उदर त्रिवलि पीत, वसन सुहात तन, नर सोई बार बार, दण्डवत करि कै ।
खड़ो भयो शिव अरु, शिवा के सम्मुख आई, सादर पुछेउ नाम, सुधारस भरि कै ॥
नाम विष्णु राखि तेहि, कर शिव शिवा दोउ, दियो वरदान बहु, शिव शिवा ढरि कै ।
राज दियो सब कर, मालिक बनायो शिव, जगत सतत गौरि, दया करि हरि कै ॥ २४ ॥
तप करु अधिक, प्रकाश हित निज जाई, कह्यो शिव शिवा तब, विष्णुहिं बुझाई कै ।
विष्णु तप कठिन, कठोर कियो शिव कर, तन से निकसि घाम, जल अधिकाई कै ॥
रहेउ अचेत पड़े, नाम भई नारायण, नाभि तें कमल दियो, शिव उपजाई कै ।
गौरि शिव दाहिनो, भुजाहिं तें विरञ्चि रचि, राखि दियो कमल पै, सहज बनाई कै ॥ २५ ॥

॥ ब्रह्मा की उत्पत्ति ॥

लाल तन चार शिर, चारो ओर शोभि रही, त्रिपुण्ड शुभग तन, विष्णु सम विधि को ।
नाभि मूल गहन, चलेउ नीचे विधि तब, कमल के डांट धरि, भीतर हैं निधि के ॥
शत बर्ष पाछे फिरि, आये विधि हारि गये, सके नहिं करि कछु, काम सोई सिद्धि के ।
गौरि विधि लौटि आये, कमल बिलाई गयो, कथा यह दाता आठो, सिद्धि नव ऋद्धि के ॥२६॥
ध्यान विधि कियो जब, भयो नभ वाणि तब, शिव दुई अच्छर को, प्रगट देखायो हैं ।
सोलह औ एकैस तब, अच्छर सहारे तेहि, बुद्धि बल विधि तब, आपहिं बनायो हैं ॥
सोई काल विष्णु तब, आयेउ सचेत उठि, आपन बडापन को, महिमा जनायो हैं ।
करत बिवाद गौरि, बिधि हरि परिहरि, बोध शिव माया वश, भ्रम कठिनायो है ॥२७॥

॥ शिवप्रादुर्भाव ॥

विधि कहैं बड़ो हम, विष्णु कहैं बड़ो हम, एहि विधि दोउ मिलि, करत लड़ाई हैं ।
नाम गुण महिमा, प्रताप दोउ निज निज, बरणि कहत यश, बिपुल बड़ाई हैं ॥
तेहि काल बड़वानल, प्रगट भयेउ तहं, ज्योति के समूह देखि, दोउ घबड़ाई हैं ।
गौरि वडापन हेतु, खोजवे को आदि अन्त, चले तब विधि हरि, तजि रगड़ाई हैं ॥२८॥
खोजन चलेउ तब, ज्योति कर अन्त हरि, धरि श्वेत शूकर के, रूप नीचे ओर कौ ।
ऊपर की ओर आदि, खोजत विधाता पुनि, गये नहिं पार पाये, ज्योति झकझोर कौ ॥
फिरि दोउ आये, परिहरि बैर भाव तब, ध्यान कियो भयो नभ, वाणि अति शोर कौ ।
गौरि तप आदेश, कियेउ दोउ कहं सोई, प्रणव प्रगट कियो, शिव तेहि ठौर कौ ॥२९॥

॥ सृष्टि ॥

विधि हरि विनति, कियेउ तब शिव जीकी, सगुण स्वरूप शिव, आपन देखाये हैं ॥

विधि कहं बोध देई, सृष्टि हेतु महादेव, विष्णु को पालनहार, सृष्टि के बनाये हैं
बुद्धि जेहि सूत्र अरु, महत्तत्व वेद कहैं, तेहि शिव रुचि पाई, शिवा उपजाये हैं
गौरि बुद्धि जननि, भयेउ अहंकार कर, अहङ्कार तम सत, रज प्रगटाये हैं ॥ ३०
धरणि अकाश भई, तीनो गुण मिलि तब, प्रगट भयेउ एक, अंड सात दलके
सनक सनातन ऋभु, सनन्दन सनत्कुमार, पांच नर रचे विधि, एकहिं सकल के
योगी त्यागी ब्रह्मविद्या, निपुण परम भये, सृष्टि कर चाह नहिं, देखि एको पलके
क्रोध तें विकल विधि, रोदन कियेउ गौरि, भयेउ प्रगट रुद्र, विधि भौंह थल के ॥ ३१
नाम रखि विधि तब, एकादश रुद्र कर, मन्यु मन महन, महान शिव कहते
ऋतध्वज उग्ररेत, वामाधृत व्रत अरु, नाम भव कालश, जो भवरोग दहते
एकादश रुद्राणि को, तेहि संग व्याहे विधि, धृति उष्णा उमा न्युत, श्रुति इला गहते
अंम्वा इरावती सिद्धा, दीक्षादि एग्यारह भई, रुद्राणि भवानी गौरि, रुद्र संग रहते ॥ ३२ ॥
विधि तब पंचतत्व, गिरि मूल कला आदि, कियो उत्पन्न तब, सप्तऋषि जाये हैं
अङ्गिरस विरञ्चि, पुलस्त्य भृगु पुलह अरु, शातातप वशिष्ठ, के नाम जिन पाये हैं
अत्रि क्रतु मरीचि, औ सुर ऋषि दक्ष पुनि, भयो दश पुत्र विधि, अति सुख पाये हैं
दाहिन स्तन से, मनुष्य पाप पीठहिं से, गौरि विधि प्रीति तृष्णा, आदि उपजाये हैं ॥ ३३ ॥
हृदय तें धरम भयो, मोह भयो होठहिं से, क्रोध भयो भौंसे विधि, देखि सुख पाई है
अत्रि भयो तन से, मरीचि भयो मन से, पुलस्त्य भयो कर्ण से, पुलह नाभि जाई है
अंगिरस मुख से, वशिष्ठ भये प्राणहिं से, क्रतु भये त्वचा से, वो भृगु हाथ लाई है
सुरऋषि अण्डकोष्ठ, विधि के वाहर आये, गौरि विधि अंगुष्ठ से, दक्ष उपजाई है ॥ ३४
तारा चन्द रवि दिशा, दिगकरि दिगपति, क्रम से बनाई विधि, तामसि लखाई है
चिन्तित अधिक विधि, रात्रि के कारण भये, क्षुधातुर ग्रसन, राक्षसगण धाई है
भय मय शरीर, वनाये निज विधि काल, प्रगट कियेउ तजि, तन नारि नाई है
गौरि रूप विधि कर, देखि मुनिगण तब, धाये तेहि ऊपर, बिकल अधिकाई है ॥ ३५
तजि तन नारि कर, विधि अन्य रूप धरि, घुटना से असुर, समूह उपजाये हैं
राक्षस के वृन्द रहे, वीर्य्य भरी देखि विधि, लाज तजि काम वश, तेहि पर धाये हैं
ध्यान कियो शिव कर, विधि तब डरि करि, शिव उपदेश सुनि, रूप बदलाये हैं
गौरि तब राक्षस के, वृन्द को अचेत कियो, सांझ काल विधि यह, चरित देखाये हैं ॥ ३६ ॥
रूप भयो चांदिनि को, रात इव शोभामान, तेहि काल विधि तब, नर उपजाओ हैं

दूसर शरीर धरि, राक्षस गन्धर्व यक्ष, गुह्य अरु किन्नर, कंवरीष देखलायो हैं ॥
विद्याधर ईश्वर, औ भूत प्रेत पिशाच औ, वेताल भुअंग ब्रह्म, राक्षस बनायो हैं ।
डाकिनि औ शाकिनि औ, योगिनी कुष्मांड पुनि, कामिनि जनानि गौरि, विधि प्रगटायो हैं ३७
विधि मन तेहु पै, प्रसन्न नहिं भयो जब, ब्रह्मज्ञान शून्य जीव, शिवेच्छानुसार तें ।
बाघ सिंह करि अश्व, वृषभ उष्ट्रादि पशु, उपजाये विधि तब, विविध प्रकार तें ॥
बेद औ पुराण औ, धनुष गान विद्या पुनि, प्रगट कियेउ तब, विद्या गुणागार तें ।
आश्रम औ धर्मशास्त्र, अर्थ धर्म काम मोक्ष, नीति गौरि रचि विधि, बड़ो विसतार तें ॥३८॥

॥ प्रसंगद्वारासृष्टि ॥

सृष्टि जो ऊपर कहि, बरणि सुजन गण, केवल शरीर द्वारा, विधि उपजाये हैं ।
सृष्टि जो प्रसंग तें, प्रगटभयो तेहिकर, सुनिये वृतान्त जेहि, विधि सुर गाये हैं ॥
विधि शिव ध्यान कियो, शिव अर्द्धांङ्ग रूप, दाहिनो पुरुष बाम, नारि दर्शाये हैं ।
शिव शिवा सहित, प्रगट भये एक संग, गौरि विधि हरषि, चरण शिरनाये हैं ॥३९॥
शिव शिवा पृथक, पृथक दर्शन दियो, देखि विधि बिनति, करत बहुवारहीं ।
दक्ष के कुमारि बनु, जगदम्ब मातु तुम, विधि कहि बहु विधि, मातु संसारहीं ॥
सुनि शिवा अङ्गिकार, कियो विधि बिनति को, कहीं नाम सती दक्ष, गृह अवतारहीं ।
गौरि शिव अपमान, दक्ष जब मूढ़ता तें, करिहैं तुरत तन, शिव हेतु जारिहीं ॥ ४० ॥
मैथुन सें जेहि विधि, सृष्टि को उत्पत्ति भई, सुनिये सकल तेहि, सुजन समाज हो ।
पाई शक्ति शिव जी से, पुरुष औ नारि एक, एक रचि अर्द्ध अर्द्ध, तन शुभ काज हो ॥
नाम सुनि स्वायंभुव, पुरुष के विधि रखे, शतरूपा नाम धरि, नारि माया साज हो ।
गौरि दोउ जननि, जनक नर गण कर, रचि दोउ सृष्टि हेतु, विधि महाराज हो ॥ ४१ ॥
योग करि शतरूपा, मनु ऐसो पति पाई, दोउ नर नारि हाथ, आपन मिलाई के ।
विधि के निकट गये, विधि उपदेश सुनि, शिव तप कियो शिव, दर्शन पाई के ॥
राज करु विधि दिन, चतुर्दश अंश तक, तेहि पाछे दिहीं शिव, लोकहिं पठाई के ।
उपजिहैं तोहि सन, तान बहुतेरो गौरि, दियो बरदान शिव, शिवा हर्षाई के ॥ ४२ ॥
प्रथम भयेउ दुई, सुत तीन सुता तेहि, नाम प्रियव्रत औ, उत्तानपाद पायो हैं ।
प्रथम दुहिता अन, बति तीय रुच सुनि, यज्ञदीचा दुई सुत, जोड़ि उपजायो हैं ॥
दूजी सुता देवहूती, तीया मुनि कर्दम के, गौरि जाके सुत मुनि, कपिल बतायो हैं ।
सूय श्रद्धा शांति अरु, स्मृति अरु कर्मागति, निबर्च बर्हति ब्रहति, ख्याति कन्या जायो हैं ४३

ब्याह भई कला कर, मरीचि ऋषीश्वर सों, सूय की विवाह अत्रि, संग मुनि भई है ।
श्रद्धा पाणि गहे ऋषि, अंगिरस निवर्च कर, शादो मुनि कर्द्दम, पुलस्ति संग दई है ॥
गति को पुलह ब्याहे, योग्य पाणि क्रतु गहे, ख्याति संग शादो भृगु, ऋषीश्वर लई है।
अरुन्धती बशिष्ठ से, श्रो शान्ति पुनि अथर्वणा, संग वरी गई गौरी, धाम ऋषि गई है ॥ ४४ ॥
स्वायंभुव मुनि कर, दुहिता तितर भई, नाम रहो प्रसूति जो, दक्ष वर कियो हैं ।
साठ कन्या प्रसूति श्रो, दक्ष को जनम लियो, तेहि महं दश कन्या, धर्म्मराज लियो हैं ॥
दक्षदियो सताईस, कन्या शशि कहं पुनि, कश्यप तेरह चार, तार्चप को दियो हैं ।
भूत अंगिरस श्रो, कृशश्व कहं दुइ दुई, सुता दियो दक्ष गौरि, अति सुख हियो हैं ॥ ४५ ॥
देव मुनि पक्षि पशु, सकल प्रगट भयो, एहि विधि दक्ष कुल, सृष्टि उपजायो हैं
विधि के निकट तब, दक्ष गये जोरि पाणि, विनति किवेउ विधि, चित हर्षायो हैं ॥
दियो उपदेश विधि, दक्ष को करहु तप, शिव के प्रताप जेहि, सुता अस पायो हैं
गौरि शिवा भई सुता, दक्ष कर सती नाम, वरी शिव लीला सुनि, कलुष नशायो हैं ॥ ४६ ॥
विधि कर लोक नाम, सत्य तेहि ऊपर हैं, लोक बिष्णु जी के तेहि, ऊपर सोहात हैं ।
स्वर्गलोक तेहि पर, राजत सुन्दर अति, सोलह कोटि योयन, परम झलकात हैं ॥
तेहि पर योयन, चौंसठ लोक कार्तिक के, तेहि पर शक्ति लोक सुन्दर सोहात हैं ।
शिवलोक दुई सो, छप्पन कोटि योयन के, तेहि पर शोभै गौरि, शिव जन जात हैं ॥ ४७ ॥
नारद सम्वाद शिव, जगदम्ब रूप पुनि, बिष्णु विधि अवतार, लीला एहि गाई है ।
सृष्टि समाचार शिव, कैलास विस्तार कथा, श्रवण सुजन गण, भक्ति मुक्तिदाई है ॥
शिव के पुराण खण्ड, प्रथम बखानो कहे, पढ़िये मुदित मन, शिव गुण छाई है ।
गौरि शिव शिव शिव, शिव शिव शिव जपु, जपत सतत तेरो, जगत भलाई है ॥ ४८ ॥
शिव शिव शिव शिव, शिव शिव शिव जपु, शिव के प्रताप ते, सकल सिद्धि पैहौ ;
शिव हैं अनादि देव, करता विधाता हरि, भव शोक परि हरि, शुभ गति पैहौ ॥
शिव शिव सुमिरत, कटत सकल पाप, रहिहौ निरोगि धनि, जब लगि गेहौ ।
गौरि तव सहज, नशाई अघ जन गण, शिव के भवन अव, निधि टपि जैहौ ॥ ४९ ॥
शिव शिव शिव शिव, शिव शिव शिव भजु, सोए जागे उठे बैठे, एक शिव नाम को ।
शिव हैं अनादि देव, जेहि विधि हरि सेवैं, शिव नाम जपि जन, जात शिवधाम को ॥
शिव नाम जप नहिं, बिरथ कबहुं होत, शिव शिव जपि जन, पावैं सब काम को ।
गौरि शिव सुमिरत, प्रेम तें प्रगट होत, देत देखलाई शिव, जन सब ठाम को ॥ ५० ॥

गिरि पड़ो शिवलिङ्ग , जेहिकाल भूमि पर , तिहुं लोक जरै लगे , कांपि मही भारी हैं ।
देखि दशा रमापति , अज देवगण मुनि , बिनय कियो जाई शिव , वचन उचारो है ॥
धारण करिहौं लिङ्ग , पूजो यदि जाई तेहि , कहि एहि गुप्त तहं , भयो त्रिपुरारी हैं ।
गौरि बिधि हरि गये , तुरत पताल पुरि , जाई शिवलिङ्ग पूजा , कियो विसतारी हैं ॥५॥
दरशन दियो शिव , लिङ्गयुत तेहि ठाम , बचे तिहुं लोक बिधि , हरि हीरा लेई कै ।
शिवलिङ्ग थापि राखि , "हाटकेश" नाम तेहि , दुख औ कलेश नशें , जेहि पूजि सेई कै ॥
अचरज शिव के , चरित एहि सुमिरन , धन जन सुख यश , भक्त गण देई कै ।
गौरि नाशि भवताप , पाप आप महादेव , अन्त शिवलोक राखें , भाखें हर धेई कै ॥६॥

॥ भौमजनम ॥

एक दिन सती के , वियोग शिव एकासन , वैठि गये मौन साधि , ध्यान शक्ति किये हैं ।
कछुकाल बीते नैन , खोलि महादेव घाम , तन से निकसे एक , शिशु जन्म दिये हैं ॥
रोदन करत भूमि , देखि पृथ्वी नारि रूप , धरो जाई तहं गोद , बालक को लिये हैं ।
गौरि शिव देखि हंसे , लीला अद्भुत निज , राखि भौम नाम भूमि , कूच दुग्ध पिये हैं ॥७॥
लेई तेहि बालक , भवन निज गई मही , शिव की आदेश मानि , चित हर्षाई कै ।
एक समय मधुबन , जाई भौम शिव तप , कियो भारी सही दुख , कष्ट अधिकाई कै ॥
पाये दर्शन हर , दियो वर शुभ घर , ग्रहनाम मङ्गल , परम सुखदाई कै ।
गौरि रविलोक से , ऊपर लोक मङ्गल कों , दियो शिव बसे तहं , भौम सुख पाई कै ॥८॥

॥ अथ पार्वती विवाह ॥

॥ प्रथम रीति ॥

मैना पाई वर घर , फिरि आई समाचार , कह्यो सब जाई , हिमाचल गिरि राई कों ।
सुनि भये मुदित , हजार संसार सुत , उपजाये हिमाचल , बलविपुलाई कै ॥
अन्त सती पैसि गई , उर गिरिराज कर , सोई तेज रहो , मैना उदर समाई कै ।
गौरि माघ सुदि नौमि, मृगशिरा ऋर्द्ध रात्रि, जन्म लियो सती मैना , कोष महं आई कै ॥९॥
भांति भिन्न भिन्न , शिव गिरिजा बिवाह हाल , मति अनुसार शिव पुराण बखानि हैं ।
देखि सुता तरुणि , गुनि मन स्वयंवर , हिमाचल बड़ो भारि , गृह निज ठानि हैं ॥
विधि हरि सुर मुनि , नृप बहुतेरो आये , वरो नहीं उमा उर , सकल लजानि हैं ।
गौरि शिव बालक , स्वरूप धरि गये तहं , देखि सब मारे धाये , परम नदानि हैं ॥१०॥

लेई अस्त्र शस्त्र शची , पति हरि चक्र गहि , सुर नर मुनि सब , मारे तेहि धाये हैं
शिव एकवार तकि , जडवत करि डारे , हारे सब विधि बहु, बिनति सुनाये हैं
हंसि गुप्त भयो सोई , आये महाराज शिव , गिरिजा तुरत तेहि , माला पहिनाये हैं
गौरि वरि उमा शिव , कैलास निवास किये, गिरिजा बिवाह विधि, एहि कोउ गाये हैं ॥११॥

॥ अथ दूसरी रीती ॥

अपर विधान शिव , गिरिजा बिवाह कर , सुनिये सुजनगण , कथा कहौं गाई कै
देखि भई तरुणि , दुहिता मैना पति कहं , कहति ढूंढहु वर , गिरिजा बुझाई कै
सुनि बानि सभा बैठि , पुरोहित डाकि राजा , कहे खोजो वर योग्य , तिहुं लोक जाई कै
गौरि सुरलोक गये , पुरोहित खोजे वर , नहिं कोउ चाहे व्याहे , शक्ति सृष्टि माई कै ॥१२॥
लौटि पुरोहित कहो , वृतान्त सकल सुनि , हिमाचल मन घन , शोच तब भये हैं ।
दैव योग भ्रमत , जगत तेहि छन मुनि , नारद जपत शिव , नाम तहं गये हैं ॥
कहे उमा बर पता , दुहिता तोहार राजा , दिजिहैं बताई सुता , डाकि पिता लये हैं ।
गौरि गिरिराज के , कुमारि सुख पता सुनि , पुरोहित संग , हिमाचल नाई दये हैं ॥१३॥
नापित सहित गये , पुरोहित दूर चले , गिरि पै अकले एक , बैठे योगी पाये हैं ।
गिरिजा ठिकान तें , विरान वन देखि वर , योगासन बैठि ध्यान , कठिन लगाये हैं ॥
खोले शिव नैन जब , तिलक दिये उ तब , पुरोहित कहि सब , हाल समुझाये हैं ।
गौरि सुनि शिव दियो , भसम उठाई कर , लेई दोउ गये घर , हिमगिरि राये हैं ॥१४॥
शिव अवगुण नाई , गाई मचलाई जाई , फेंकि पथ भसम , गये उ निज घर को ।
पुरोहित भवन , भसम पूजि रखिसोए , जागी देखे धन बहु , जैसे नृपवर को ॥
भसम प्रभाव जाई , वरणि सुनाई गिरि , राजा सुनि सुखी भयो , गाई गुण हर को ।
गौरि लिखि पांति , हिमाचल भेजे पुरोहित , आईये बरात लेई , सकल अमर को ॥१५॥
पुरोहित बिदा करि , लीला किये महादेव , भये आपु वृद्ध योगी , बैल बूढ़ो लेई कै ।
शिव शुक श्वान दुई , बालक लिये उ संग , भांग आंक धथुरा , वृषभ पीठ देई कै ॥
कांधे झोली धरि एक , गुदड़ी बसन ओढ़ी , वदन अनोखा रूप , शिव निर्मेई कै ।
गौरि हिमाचल , फुलवारि मे बिवाह दिन , गये पूछि बरात , खवर नारि घेई कै ॥१६॥
नारि गण बदन , निहारि अति चौल करैं , डरैं नहिं कछु शिव , टेरि पकरि कै ।
खूबे घिसिपाई महो , सुनि कै अनूठी बाणि कहो जब योगी वरै , आये उ कुमारि कै ॥

शिव को प्रणाम कियो , सब तजि दच्छ एक , मद बश दच्छ नहिं , शिरहिं नवाये हैं ।
गौरि शिव दच्छ को , प्रणाम नहिं कियो जाई , देखि अपमान दच्छ , कोप उरछाये हैं ॥१२॥
शंकर को शाप दियो , भाग नहिं यज्ञ महं , कबहुं मिलि हैं तोहि , सत्य कहौं बात को ।
सुनि नन्दि शाप दियो , दच्छ कहं तेहि छन , आनन तोहार नशें , भयो अघ घात को ॥
कहि एहिं शिव को , चढ़ाई पीठ नन्दि आये , कैलास उदास पड़ें , रहैं दिन रात को ।
गौरि शिव दरशन , दंडक कानन शिव , गये एक बार संग , लेई जग मात को ॥ १३ ॥
रामहिं प्रणाम कियो , शिव कछु विनय करि , मारग पूछति सती , काहे नमे राम को ।
कहे शिव जाई तुम , आपुहिं परिछा लेहु , विष्णु अवतार राम , भक्त हित काम को ॥
सीता को हरण भई , विरह विवश राम , खोजत फिरत वन , गाई गुणग्राम को ।
गौरी सोई काल सती , सीता रूप धरि पथ , भेंटे राम लछुमन , आई तेहि ठाम को ॥ १४ ॥
जानि महारानि जग , जननि भवानी सती , सीता कर रूप धरि , यांचन को आई हैं ।
नाई माथ जोरि हाथ , पूछें रघुनाथ प्रभु , वृषकेतु तजि कस , विपिन भमाई हैं ।
महिमा सकल बूझि , राम कर सती तब , मानि भगवान मन , अधिक लजाई हैं ।
गौरि शिव राम को , प्रणाम हेतु पूछि सती , कहि रघुपति जेहि , कारण पुजाई हैं ॥ १५ ॥

॥ राम प्रणाम वर्णन ॥

एक दिन शिव धेनु , शाला निज जाई करि , विश्वकर्म्मा डाकि वहु , मन्दिर बनाये हैं ।
शिव के बोलाये आये , बिधि सुर गण मुनि , विष्णु कहं सब पाछे , शंकर मंगाये हैं ॥
तीरथ सलिल लेई , करि अभिषेक हरि , रमायुत शिव हेम , आसन वैठाये हैं ।
गौरि शिव जय जय , कहिके मगन भये , स्वामि विष्णु कहं , सब सृष्टि के बनाये हैं ॥१६॥
तीनो लोक कर राज , देई विष्णु कहं शिव , कियेउ प्रणाम आपु , सवहिं देखाई कै ।
विष्णु पद ऊंचो देई , सब तें पुजाये हर , विधि सुर मुनि गण , सकल बोलाई कै ॥
तेहि के प्रताप शिव , सुनु जगदम्ब सती , कियेउ प्रणाम मोहि , चित बहलाई कै ।
गौरि सुनि सती गई , फिरि पति पास निज , पूछि कुशलात , महादेव मुसुकाई कै ॥१७॥

॥ सती बिछोह ॥

जानि सब हाल शिव , ओढ़ि वाघ छाल तन , कैलास निवास करि , प्रण अस कियो हैं ।
एहि तन मिलन न , सती संग मेरो होई , गोई सोई योगासन , बैठि भांग पियो हैं ॥
देखि सति पति गति , रोदति बिलाप करि , दुख ताप शोच भारि , नित सती हियो हैं ।
गौरि सती कहति , करुणा के बिधाता अब , दीजिये जराई तन , दुख जेई दियो हैं ॥ १८ ॥

॥ दक्ष यज्ञ विध्वंस ॥

कनखल तीरथ, सोहात एक हरद्वार, तेहि ठाम दक्ष यज्ञ. करत बिचारि कै ।
मुनिगण देवगण, विधि हरि भृगु आदि, सकल मंगाये मख, शालहिं हंकारि कै ॥
नेवत पठाये नहिं, शिव कहं वैर भाव, दियो बिपरीत बुद्धि, गति मति मारि कै ।
गौरि तेहिकाल सती, शिव गन्धमादन पै, देखि नभ पथ जात, देव सुरनारि कै ॥ १९ ॥
सोम कहं भेजि सती, बिजया को जानि हाल, कहति कृपाल पति, कहं तहं चलिये ।
कहैं महादेव नहिं, नेवत पठाये दक्ष, बिनु डाके गये तहं, होत नहिं भलिये ॥
मानि न भवानि जब, नन्दिगण बहुतेरो, संग देई भेजे सती, बैठेउ एकलिये ।
गौरि सती गई मख, भवन जनक निज, कियो न आदर कोउ, सखी औ सहेलिये ॥ २० ॥
केवल जननि देखि, दुहिता लगाई तन, लोचन श्रवत जल, प्रेम मन छाई है ।
सुनु सुता पिता तेरो, वैर कियो शिव संग, तेहि तें नेवत देई, तोहि न मंगाई है ॥
एहि कर फल भल, सूझत न मोहि सुता, कहि एहि भांति सती, माई समुझाई है ।
गौरि सती बोलि तब, त्यागि मखशाला अब, जाउं निज लोक, कस बिलम्ब लगाई है ॥ २१ ॥
जननि बहिन सती, सुनि तेहि धरि रखे, सती योग बल तन, दूसर बनाई कै ।
सुरसरि तीर जाई, करि स्नान ध्यान, पूजि गंधमादन पै, शिव स्वामि जाई कै ॥
शिव पद कमल, हृदय धरि जगदम्ब, बैठि ध्यान करि मुनि, गंग तट आई कै ।
गौरि सती गई मख, शाला कोपि तेहि छन, देखि दक्ष शिव निन्दा, कियो अधिकाई कै ॥२२॥

॥ शिव महिमा ॥

सुनि सती क्रोध करि, शिव के गुणानुबाद, गाई जेहि बिधि रूप, मगर के धरे हैं ।
जाई पुर दाबिन, परीक्षा लियो जन कर, मुनि दियो श्राप शिव, तिहुं लोक जरे हैं ॥
भूमिपर लिङ्ग को, गिराई जब महादेव, जीये सब जीव मुनि, गण घन डरे हैं ।
गौरी भूलि गये लीला, शिव कर सब सोई, सुनि नहिं मानि बानि, सती ज्ञान भरे हैं ॥२३॥

॥ सती तन त्याग ॥

श्राप देई सब कहं, सती योग बल तन, अनल प्रगट कियो, हाहाकार भयो है ।
छार भई जरो सती, तेहि छन गङ्ग तीर, सती के शरीर तें, प्राण छुटि गयो है ॥
धाये शिव गण यज्ञ, नाश करे कोपि उर, भृगु होम कुण्ड तें, असुर उपजायो है ।
गौरि कियो घोर युद्ध, दैत्य शिव गण संग, असुर के नाम भू, प्रसिद्ध भृगु दयो है ॥ २४ ॥

॥ दक्ष यज्ञ शिवगण समर ॥

समर हराये शिव, गण कहं दैत्य सोउ, रोई बहुतेरो अध, मारे गण भागे हैं ।

विलखि विलखि कहो , सब समाचार जाई , जोरि युग पाणि गण , खड़े शिव आगे हैं ॥
सती के दहन सुनि , रोदन कियेउ शिव , भई कोप घोर हर ; योग निद्रा जागे हैं ।
गौरि शिव काढ़े एक , जटा शिर निज तब , अवनि पटके दुई , खंड गिरि दागे हैं ॥२५॥
एक खण्ड जटासूल , वीरभद्र महाकाल , काली भेष काली व्याल , आपे उपजाई हैं ।
तीन शिर अग्नि के , समान हैं हजार हाथ , रोम तें अनेक गण , बहो प्रगटाई हैं ॥
दूजो खण्ड जटा से , निकसि महाकाली माई , रूप विकराल नैन , लाल अधिकाई हैं ।
गौरि लह लह़ जिह्वा , काली भेष भूत प्रेत , शाकिनी पिशाच आदि , सङ्ग समुदाई हैं ॥२६॥
शिव के सम्मुख जाई , खड़ो भयो जोरि हाथ , कहे महादेव दोऊ , कहं समुझाई कै ।
दच्छ यज्ञ भ्रष्ट करि , दण्ड देई यथोचित , सब कहं तोड़ि शिर , दच्छ दुखदाई कै ॥
अनल जराई देहु , सुनि चले वीरभद्र , महाकाली गण निज , निज रिसिआई कै ।
गौरि यज्ञशाला जाई , यज्ञ को विनाश कियो , दियो यथोचित दण्ड , सभा समुदाई कै ॥२७॥
भैरव के संग नव , काली मिलि घोर युद्ध , देवगण साथ मारि , कियो सब जीति कै ।
विधि हरि हारि गये , भागे निज लोक दोऊ , वीरभद्र घात कियो , सुजन अदीति कै ॥
मणिमा ने कोपि भृगु , मोछ को उखारि डारि , भृगु नैन काढ़े नन्दि , वीर जो अनीति कै ।
गौरि हंसि दच्छ तें , करान लगे यज्ञ मुनि , शिव अपमान करि , ज्ञान विपरीति कै ॥ २८ ॥
वीरभद्र झट पट , कपट के मूल दच्छ , माथ को मरोरि तोरि , होम कुण्ड डारे हैं ।
विरंचि विलाप बहु , विधि करै रोई रोई , शिव के विरोध हेतु , काल जेहि मारे हैं ॥
वीरभद्र काली गण , लेई तेहि छन तब , शिव के सम्मुख खड़ो , होई शीच टारे हैं ।
गौरि महादेव यह , चरित पुनित कियो , गाई जेहि भवरोग , सकल निवारे हैं ॥ २९ ॥

॥ त्रिशुहार कारण तथा राजा क्षू की कथा ॥

विष्णु यज्ञ रक्षा नहिं , करि सके जेहि हेतु , सुनिये सुजन गण , कथा मन लाई कै ।
एक समय भयो राजा , क्षू के नाम बली बड़ो , राज मद राज पद , बड़ो कहैं गाई कै ॥
रहे तेहि राज एक , सिद्ध विप्र दधीचि जो , गयो एक दिन सभा , क्षू कै हरषाई कै ।
गौरि कहैं दधीचि हैं , बड़ो सदा विप्र नृप , जेहि देखि शीश सब , रहत नवाई कै ॥३०॥
सुनि खिसियाई क्षू ले , बज्र कर मारे तेहि , पड़े भूमि दधीचि , तुरत मुरछाई कै ।
खण्ड खण्ड कियो तन , दधीचि के राजा सोई , शुक्र को सुमिरि लियो , दधीचि बोलाई कै ।
जोरि सब अंग शुक्र , मृत्युञ्जयमंत्रबल , तेहि छन दधीचि को , दिन्हेउ जिवाई कै
गौरि उपदेश मानि , शुक्र के दधीचि तब , कियेउ कठिन तप , शिव कर जोई कै ॥३१॥

दरशन दियो , महादेव तब दधीचि को , मांगी बरदान तन , वज्र मेरो कीजिये ।
अजर अमर करु , नम्र होई केहु सन , बचन कहेउ नहिं , बर हर दीजिये ॥
पाई बर दधीचि , समीप जाई छू को मारि, बाम लात माथ गर्व्व , फल अब लीजिये ।
गौरि परिहरि मद , पद मेरो धरु शीश , लेई मेरो आशिष , सकल भ्रम छीजिये ॥२२॥
मारि वज्र दधीचि को , राजा तब कोपि करि , टूटि गिरे बज्र भूमि , खण्ड खण्ड होई कै ।
जानि सब हाल छू , लजाई मन बन जाई , बिष्णु तप कियो बहु , काल अति रोई कै ॥
प्रगट भयेउ रमा , पति तेहि ठाम आई , हरि पद राजा छू , परेम बारि धोई कै ।
गौरि चरणोदक ले , बिनय बहु भांति कियो , भयेउ रक्षक प्रभु , गये छूप गोई कै ॥२३॥
गये छू समर करै , दधीचि समर संग , कियो युद्ध बहु विधि , कूदि फानि करि कै ।
हारे छू बिकल मन , हरि सुमिरन कियो , आये रमापति लड़े , दधीचि पकरि कै ॥
कियेउ उपाई बहु , जीति नहिं सके हरि , आखिर लजाई कर , छू के दोउ धरि कै ।
गौरि पद दधीचि के , मद तजि नाये माथ , राजा छू नगर गये , हठ परिहरि कै ॥२४॥
जेहि ठाम दधीचि से , कियेउ संग्राम हरि , हरपुर नाम ताके , सब लोग कहते ।
थानेश्वर तीरथ , प्रसिद्ध भयो जग महं , जहं जाई पाप ताप , सहजहिं दहते ॥
किये अभिषेक मिले , चारो फल गये तहं , भक्ति के प्रताप जन , मन काम लहते ।
गौरि मोहि शिव शिवा , चरन अचल रति , रामपद भक्ति देहु , बर एहि चहते ॥२५॥

॥ दक्षजीवदान ॥

दक्ष यज्ञ भयो जब , भ्रष्ट एहि विधि साधो , मिलि सब सुर बिधि , हरि हर पास को ।
आये गिरि कैलास , देखेउ शिव वीरासन , सति के बियोग सुख , अधिक उदास को ॥
विनय कियेउ बहु , आये महादेव तब , यज्ञ शाला दक्ष कर , देखि मखनाश को ।
गौरि पड़े भूमि शिव , लखास ससुर देखि , माफ कियो कसुर , भुलेउ उपहास को ॥२६॥
तुरत मंगाये शिव , बकरा के शिर तब , जोड़ि दियो देह दक्ष , मृतक जो पड़े हैं ।
दृष्टि पात दया तेहि , पर कियो महादेव , एक बैक दक्ष तेहि , छन उठि खड़े हैं ॥
दक्ष यज्ञ पूरो भयो , बिधि हरि मुनि आदि , गये सब बिदा होई , शिव पांव पड़े हैं ।
गौरि बोध भयो भलो , बिधि दक्ष कहं तब , जाने दक्ष शिव बिधि , हरिहुं तें बड़े हैं ॥२७॥

॥ सिद्धपीठदर्शन ॥

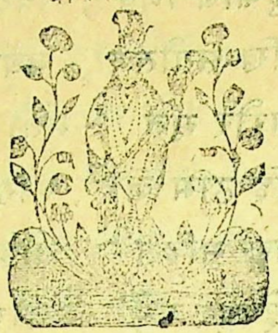
जब सति तन लगि , जरत निकसि एक , ज्वाला मुख बाहर तें , पश्चिम को ओर को ।
गई पड़ी भूमि जहं , पूर्ण कला जगदम्ब , ज्वाला देवि वसति , सतत तेहि ठोर को ।

रही कछुकाल शिव , बिदा मांगी दच सन , गये गंग तट हैं , विवश शोक जोर को ।
गौरि देखि सतीतन , नयन भरेउ जल , विकल अधिक बैठे , सतहिं अगोर को ॥३८॥
लेईके शरीर मृत , सती उन्मत्त चित्त , फिरे चहुं दिशि घूमो , शिव बिलखाई के ।
गिरे जेहि ठाम जेई , भाग तन सती कर , सिद्धपीठ नाम पाई , जगत पुजाई के ॥
शिव लिङ्ग सहित , सोहात सिद्ध पीठ जग , सेवे पूजि देत मन , कामना पुराई के ।
गौरि "देवपुर पड़े" , चरण भवानी कर , "महाभागा" नाम पड़ी , तहं जगमाई के ॥३९॥
"औटयानि" देशमे , नितंव गिरि सती कर , "कात्यायनी" नाम , सिद्धपीठ जग पाई हैं ।
"कामशैल" गिरि पर , योनि गिरि सती कर , "कामेचा" भवानी , "कामरूपा" कहलाई हैं ॥
"जालंधर" गिरि पर , कूच गिरि सती कर , "चण्डी" नाम देवी पीठ , प्रसिद्ध सुहाई हैं ।
गौरि "वागीश्वरीगंग" , तट धुनि कामरूप , पूरव "ललित कान्ता" , नाम बतलाई हैं ॥४०॥
एहि बिधि बहुतेरो , भयो सिद्धपीठ मही , जाहि पूजि धन जन , सुख नर पायो हैं ।
लीला अचरज करि , सतीपति महादेव , गये गिरि कैलास ; विरह शोक छायो हैं ॥
चरित ललित शिव , पुराण के दूजो खण्ड , सुनिये सुजन गण ; यथा शक्ति गायो हैं ।
गौरि शिव महिमा , बखान कियो ध्यान देई , सुनैई जे नाशि पाप, शिव लोक जायो हैं ॥४१॥

श्रीगणेशाय नमः । ॐ नमः शिवाय । श्रीसरस्वत्यै नमः ।







अथ गौरीशंकरायण ।

॥३॥

॥ अथ तृतीय खण्ड ॥

॥ अथ गौरीविवाह ॥

॥ अथ पार्व्वती जनम ॥

स्वधा नारी पितरों की, कन्या उपजाई तीन, मैना धन्या कलावती, सुन्दरि सुहाये हैं ।
एकदिन गयो विष्णु, लोक तीनो रमानाथ, निकट बैठेउ तहं, सनकादि आये हैं ॥
देखि तेहि उठी नही, कियो न प्रणाम पुनि, सनतकुमार कोप, घोर उर लाये हैं ।
गौरि नरलोक जाई, वसु तजि सुरलोक, सुनि शोक चित तीनों, बहिनि के छाये हैं ॥१॥
शाप सुनि चरण, गहेउ ऋषि कर तीनो, देखि दशा सनत, कुमार दया कीयो हैं ।
मैना तोहि विष्णु अंश, हिमाचल गिरिराज, वरि हैं दुहिता तेरो, महादेव तीयो हैं ॥
धन्या तेरो पति युग, त्रेता मे जनक होइ हैं, सुता तेरो राम प्रिया, आपु रमा सीयो हैं ।
गौरि वृषभान नारी, कलावती बनी तुम, राधा तेरी सुता कृष्ण, प्यारी हरि हीयो हैं ॥२॥
देईके आशीष सन, कादि ऋषि गये चले, मैना को विवाह हिमाचल संग भयो हैं ।
विधि हरि सुर मुनि, हिमाचल मैना कहं, तप जगदम्ब हेतु, उपदेश दयो हैं ॥
तप कियो कठिन, विपिन जाई मैंना तव, पाई दर्शन आदि, शक्ति वरलयो हैं ।
गौरी मेरी सुता बनी, होहु शिवरानी माई, जेहि ते वड़ाई यश, नित तेरो नयो हैं ॥३॥

॥ शिवलिङ्गपतन ॥

कहि एवमस्तु जग, जननी भवानी माया, अनूप स्वरूप निज, लिन्हेउ छिपाई के ।
दारुक विपिन एक, दिन शिव नग्न होई, गये धाये मुनि नारि, शिव लपटाई के ॥
गहि शिवलिंग मन, मानो काम कियो नारि, मुनिगन देखि दशा, शाप दियो आई के ।
गौरि मुनि शाप तें, तुरत शिवलिङ्ग गिरे, फारि मही गयेउ, पताल देखलाई के ॥४॥

गिरि पड़ो शिवलिङ्ग , जेहिकाल भूमि पर , तिहुं लोक जरै लगे , काँपि मही भारी है ।
देखि दशा रमापति , अज देवगण मुनि , विनय कियो जाई शिव , बचन उचारी है ॥
धारण करिहौं लिङ्ग , पूजो यदि जाई तेहि , कहि एहि गुप्त तहं , भयो त्रिपुरारी हैं ।
गौरि बिधि हरि गये , तुरत पताल पुरि , जाई शिवलिङ्ग पूजा , कियो विसतारी है ॥५॥
दरशन दियो शिव , लिङ्गयुत तेहि ठाम , बचे तिहुं लोक विधि , हरि हीरा लेई के ।
शिवलिङ्ग थापि राखि , "हारकेश" नाम तेहि , दुख औ कलेश नशैं , जेहि पूजि सेई के ॥
अचरज शिव के , चरित एहि सुमिरन , धन जन सुख यश , भक्त गण देई के ।
गौरि नाशि भवताप , पाप आप महादेव , अन्त शिवलोक राखैं , भाखें हर धेई के ॥६॥

॥ भौमजनम ॥

एक दिन सती के , बियोग शिव एकासन , वैठि गये मौन साधि , ध्यान शक्ति किये हैं ।
कछुकाल बीते नैन , खोलि महादेव बाम , तन से निकसि एक , शिशु जन्म दिये हैं ॥
रोदन करत भूमि , देखि पृथ्वी नारि रूप , धरी जाई तहं गोद , बालक को लिये हैं ।
गौरि शिव देखि हंसे , लीला अद्भुत निज , राखि भौम नाम भूमि , कूच दुग्ध पिये हैं ॥७॥
लेई तेहि बालक , भवन निज गई मही , शिव के आदेश मानि , चित हर्षाई के ।
एक समय मधुबन , जाई भौम शिव तप , कियो भारी सही दुख , कष्ट अधिकाई के ॥
पाये दर्शन हर , दियो वर शुभ घर , ग्रहनाम मङ्गल , परम सुखदाई के ।
गौरि रविलोक से , ऊपर लोक मङ्गल कों , दियो शिव बसे तहं , भौम सुख पाई के ॥८॥

॥ अथ पार्व्वती विवाह ॥

॥ प्रथम रीति ॥

मैना पाई वर घर , फिरि आई समाचार , कह्यो सब जाई , हिमाचल गिरि राई को ।
सुनि भये मुदित , हजार संसार सुत , उपजाये हिमाचल , बलविपुलाई के ॥
अन्त सती पैसि गई , उर गिरिराज कर , सोई तेज रह्यो , मैना उदर समाई के ।
गौरि माघ हदि नौमि, मृगशिरा अर्द्ध रात्रि, जन्म लियो सती मैना , कोष महं आई के ॥९॥
भांति भिन्न भिन्न , शिव गिरिजा विवाह हाल , मति अनुसार, शिव पुराण बखानि हैं ।
देखि सुता तरुणि , ठगुनि मन स्वयंवर , हिमाचल बड़ो भारि , गृह निज ठानि हैं ॥
बिधि हरि सुर मुनि , नृप बहुतेरा आये , वरो नहीं उमा उर , सकल लजानि हैं ।
गौरि शिव बालक , स्वरूप धरि गये तहं , देखि सब मारे धाये , परम नदानि हैं ॥१०॥

लेई अस्त्र शस्त्र शची , पति हरि चक्र गहि , सुर नर मुनि सब , मारै तेहि धाये हैं ।
शिव एकवार तकि , जडवत करि डारे , हारे सब विधि बहु , विनति सुनाये हैं ॥
हंसि गुप्त भयो सोई , आये महाराज शिव , गिरिजा तुरत तेहि , माला पहिनाये हैं ।
गौरि बरि उमा शिव , कैलास निवास किये , गिरिजा विवाह विधि , एहि कोउ गाये हैं ॥११॥

॥ अथ दूसरी रीतीं ॥

अपर बिधान शिव गिरिजा बिवाह कर , सुनिये सुजनगण , कथा कहौं गाई कै ।
देखि भई तरुणि , दुहिता मैना पति कहं , कहति ढूंढहु बर , गिरिजा बुझाई कै ॥
सुनि बानि सभा वैठि , पुरोहित डाकि राजा , कहे खोजो वर योग्य , तिहुं लोक जाई कै ।
गौरि सुरलोक गये , पुरोहित खोजे वर , नहिं कोउ चाहे ब्याहै , शक्ति सृष्टि माई कै ॥१२॥
लौटि पुरोहित कह्यो , वृतान्त सकल सुनि , हिमाचल मन घन , शोच तब भये हैं ।
दैव योग भमत , जगत तेहि छन मुनि , नारद जपत शिव , नाम तहं गये हैं ॥
कहे उमा वर पता , दुहिता तोहार राजा , दिजिहैं बताई सुता , डाकि पिता लये हैं ।
गौरि गिरिराज के , कुमारि मुख पता सुनि , पुरोहित संग , हिमाचल नाई दये हैं ॥१३॥
नापित सहित गये , पुरोहित दूर चले , गिरि पै अकले एक , बैठे योगी पायो हैं ।
गिरिजा ठिकान तें , बिरान वन देखि बर , योगासन वैठि ध्यान , कठिन लगायो है ॥
खोले शिव नैन जब , तिलक दियेउ तब , पुरोहित कहि सब , हाल समुझायो हैं ।
गौरि सुनि शिव दियो , भसम उठाई कर , लेई दोउ गये घर , हिमगिरि राखो हैं ॥१४॥
शिव अवगुण नाई , गाई मचलाई जाई , फेंकि पथ भसम , गयेउ निज घर को ।
पुरोहित भवन , भसम पूजि रखिसोए , जागे देखे धन बहु , जैसे न्रपवर को ॥
भसम प्रभाव जाई , वरणि सुनाई गिरि , राजा सुनि सुखी भयो , गाई गुण हर को ।
गौरि लिखि पाति , हिमाचल भेजे पुरोहित , आईये बरात लेई , सकल अमर को ॥१५॥
पुरोहित विदा करि , लीला कियो महादेव , भये आपु वृद्ध योगी , बैल बूढ़ो लेई कै ।
शिव शुक शान दुई , बालक लियेउ संग , भांग आंक धथुरा , बृषभ पीठ देई कै ॥
कांधे झोली धरि एक , गुदड़ी बसन ओढ़ी , वदन अनोखा रूप , शिव निर्मई कै ।
गौरि हिमाचल , फुलवारि मे विवाह दिन , गये पूछि बरात , खबर नारि धेई कै ॥१६॥

अथ शिवजो से नारीयों का चौल करना
और शिवजो का सुन्दर स्वरूप बदलना ।

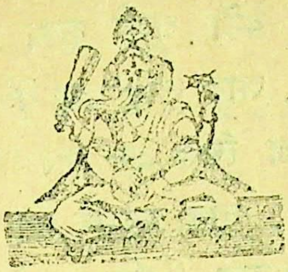
नारि गण बदन, निहारि अति चौल करें, डरें नहिं कछु शिव, टेंगरि पकरि कै ।
खू वे घिसियाई मही, सुनिकै अनूठो बाणि; कही जब योगी वरे आयेउ कुमारि कै ॥
झोलि खोलि भेंड़ि बहु, तुरत उडाये शिव काटै तन नारि गण, भागे तब डरि कै ।
गौरि योगि खेल नारि, गण जाई मैना कहं, कही सुनि हिमाचल, बैठे शोक भरि कै ॥१७
गिरिवर पुची एक, पत्री लिखी शिव कहं, भेजो हाथ विजया के, बांचि शिव हंसे हैं ।
बदलि स्वरूप निज, अनूप बनाई प्रभु, दूर करु माया जेहि, बस सब फंसे हैं ॥
सुरगण संग लेई, रात को बरात नाथ, व्याहि आओ जोड़ि पाणि, चरण पै खसे हैं ।
गौरि उमा पास गई, विजया उत्तर पाई, पढ़ि कै जबाब दुख, गिरिजा के नशे हैं ॥ १८॥
नारद बचन सुनि, यांचे चले हिमाचल, झट पट शिव के, निकट जाई खड़े हैं ।
कियो अचरज खेल, महादेव तेहिकाल, शुक्र शनि रोवत, विकल भू पछड़े हैं ॥
कहै भूख लागि मोहि, भोजन दिजिये शिव, देखि दशा हिमाचल, घबड़ाये बड़े हैं ।
गौरि शिव गिरिनाथ, संग दियो दोऊ करि, मैना पति भनडार, जाई दोऊ पड़े हैं ॥ १९॥
ग्रास कियो अन्न शुक्र, शनि नहिं बचे कछु, नगर अनाज ढेरि, एक बेर खायो हैं ।
राजमद दूर गयो, हिमाचल कर तब, रोवें दोऊ शिशु चुधा, बहुत सतायो हैं ॥
गये हिमाचल लेई, शुक्र शनि दोऊ हर, निकट शंकर कर, धरि बैठलायो हैं ।
गौरि झोलि खोलि एक, बूटि दियो महादेव, खाई जेहि चुधानल, सकल बुझायो हैं ॥२०॥
जानि महादेव मैना, पति आये लौटि घर, शिव तब लेई कर, डमरु बजाये हैं ।
सुनि शब्द घेरि लियो, विधि हरि देववृन्द, मूरति मोहन मन, आपन बनाये हैं ॥
बाजा बजै बहु विधि, झाल औ मृदंग ताल, गगन ते सुरगण, सुमन गिराये हैं ।
गौरि धूम धाम करि, गिरिजा बिबाहे शिव, हरखि बिधाता सुख, तिहुं लोक छाये हैं ॥२१॥

॥ तीसरी गीति ॥

तीसर सुनहु कथा, गिरिजा बिबाह कथा, कहौं शिव पुराण मे, लिखि विधि जेही हैं ।
दिति नारि कश्यप की, गर्भवती एक काल, सोई थी अकेली शची, पति देखि लेही हैं ॥
ढूकि कै उदर उन, चास खंड कियो जाई, बालकहिं गर्भ बीच, गुप्त वायु देही हैं ।
गौरि सोई पवन, उनचास भये सृष्टि महं, जगत सतत जये, अमर सनेही हैं ॥ २२ ॥
तेहि पाछें भयो वज, रंगी नाम सुत दिति, पद गहो इन्द्र को, बजाड़े एक बार को ।
देवगण बिनै कियो, छोड़ि दियो शची पति, भयो तेहि सुत एक, खान बलसार को ॥
तारक बिख्यात नाम, तप कियो शिव कर, पायो दरशन भयो, वर अधिकार को ।
गौरि मोहि अमर, करिये महादेव प्रभु, राज माहि दीजिये, सकल संसार को ॥ २३ ॥

कहे शिव मोहि तजि , दूसर न कोऊ तोहि , सकिहैं बिनाश करि , भरि सन्सार मे ।
देई बर गये हर , तारक जितेउ सब , सुरगण कैद करि , राखे कारागार मे ॥
बिष्णुउपदेश सुनि , नट इव नाचे सुर , कियो निरबन्दि सब , मद अहंकार मे ।
गौरि सुर नर मुनि , तारक पीड़ित भये , पड़े देव बिपद की , उदधि अपार मे ॥ २४ ॥
शंकर बिरह सती , तेहिकाल हिमगिरि , निकट औषधप्रस्थ , ग्राम एक जाई के ।
ध्यान करि बैठे , योगासन महादेव प्रभु , हिमाचल भेजे सुता , योगी सेवकाई के ॥
इन्द्र उर भयो डर , कामदेव भेजे तहं , मदन बिवश शिव , गहे उमा धाई के ।
गौरि जानि काम छल , खोलि के तीसर नैन , दियो शिव मदन के , बदन जराई के ॥ २५ ॥
सुनि बिधि देवगण , विनति अनेक भांति , दियो बरदान शिव , तबै दया करि के ।
गिरिजा विवाह करि , काम को जिवाई दिहौं , तन बिनु अतन , तेहार नाम धरि के ॥
विष्णु अवतार कृष्ण , द्वापर लिजिहैं जब , दिजिहौं सदेह जन्म , तेहि घर हरि के ।
गौरि नाम प्रद्युम्न , प्रसिद्ध होई मार कर , कहि अस कैलास , गयेउ शिव ढ़रि के ॥ २६ ॥
घर गई गिरिजा , बखान कियो सब हाल , शिव के बिशाल तप , कियो बन जाई के ।
दियो दरशन शिव , मांगि बर पति मेरो , बनिये दयालु नाथ , लीला देखलाई के ॥
कहो एवमस्तु शिव , राजे गिरि कैलास पै , कहो बर हाल उमा , माई समुझाई के ।
गौरि हिमाचल उर , हरख अधिक भयो , दियो पुरोहित भेजि , तिलक चढ़ाई के ॥२७॥
पांति लिखि भेजि दिन , विवाह नियत करि , चले शिव अमर , सकल संग लेई के ।
भूत प्रेत आदि बहु , कुरूप बरात गये , शोचि मैना घर बैठि , उमा गोद देई के ॥
शिव तब रूप निज , अनूप बनाये अति , मोहिनी जगत जेहि , रहे सब घेई के ।
गौरि पति गिरिजा , विधान युत पाणि गही , गयो लै कैलास रहे , उमा शिव सेई के ॥२८॥
शंकर विवाह रात , परम विख्यात जग , शिवरात नाम कहो . भये तेहि काल तें ।
फागुन चतुरदश , कृष्णपक्ष ब्रत करि , नाशि पाप नर बचैं , विपद के जाल तें ॥
धन जन बहु होई , भाग्यवान यशो बड़ो , ऊंचो पद राखैं जग , कोटि महिपाल तें ।
गौरि शिव लोक जाई , बसत सतत जन , उबरत फन्द कलि , काल बिकराल तें ॥ २९ ॥
गौरि तजि छल नेम , युत जेते जन जग , आदर सहित एक , चित्त एहि गावई ।
भवरोग शोक ताप , पाप सब नाशि छन , सुखी होई अर्थ धर्म , काम मोक्ष पावई ॥
बन्दी निवरन्दी होई , बांझ को सन्तान मिलै , धन यश सुख तेहि , कुल जग छावई ।
गौरि परिहरि छल , कपट भजहु शिव , जेहि सुर नर मुनि , आठो याम धावई ॥ ३० ॥

श्री गणेशाय नमः । श्री गौरीशङ्कराभ्यान्नमः । श्रीसरस्वत्यैनमः ।





। अथ गौरीशंकरायण ।

॥ अथ चतुर्थखण्ड ॥

॥ अथ गौरीसुतचरित्र ॥

॥ अथ कार्त्तिकजन्म ॥

करत निवास शिव, गिरिजा सहित गिरि, शोभत कैलास ज्योति, परम प्रकाश है ।
करत बिहार उमा, संग महादेव प्रभु, रचत उपाई जातें, तारक बिनाश है ॥
करत जुलुम धूम, तारक असुर खल, सभा बैठे सुरगण, तेहि अवकाश है ।
करत सम्मति सब, पावक बोलाई तब, भेजे देखि उमाधव, गौरी सुखराश है ॥ १ ॥
कपोत के रूपधरि, मन्दिर भीतर गयो, छत पर बन्हि रहो, छुपके लुकाई के ।
देखि शिव शिवा को, बिहार रससार तेज, सुरगण आये तेहि, छन अकुलाई के ॥
हार हर भयो भोर, कहत हरहु पीर, दोउ नैन सौर नीर, शिवसुत गाई को ।
सुनि शिव शिवा तजि, बाहर निकले गौरि, दियो शिव बीज निज, अवनि गिराई को ॥ २ ॥
पाई सैन बिष्णु कर, चाटि लियो कबूतर, तेहि छन अमर, सगर गर्भ धारी है ।
जानि हाल उमा जब, कोप कियो भारी तब, शाप दियो सुर सब, कहत पुकारी है ॥
बांझ तेरो नारि सब, होई हैं अमर अब, कहो शापे अग्नि तब, शिव प्रिय नारी है ।
गौरि जगदम्ब नाई, कहि एहि फिरि आई, रूसि बैठि शक्ति माई, माया खेल भारी है ॥ ३ ॥
तेहि पाछे अमर, सकल गर्भधारी भये, बाढ़ो तेज सही सकै, नहिं कोउ देवता ।
कवन उपाई जाई, रोग दुख पीड़ा गर्भ, विष्णु विधि सुर मुनि, गण मिलि सेवता ॥
भये सब एक मति, चली सुर शीघ्र गति, आये तब अमर, शरण शिव देवता ।
गौरि बहुवार कियो, रोदन पसार विनय, दियो दरशन शिव, जेहि रहे सेवता ॥ ४ ॥
सब कहं शिव कहे, केवल कृशानु तजि, बाहर करहु मेरो, बीज निज मुख तें ।

आनन तें बीज गिरि, भयेउ कंचन ढेरि, केवल बिकल हैं, अनल गर्भ दुख तें
सुनिके बिनति शिव, कहत अनख सन, गङ्गतट हिमऋतु, बैठो जाई सुख तें
गौरि सुरसरि तीर, बैठि गईं अगिन जाई, मुनि नारि अभिषिकि, जात खोई दुख तें ॥ ५
तापि गईं आग सब, भईं गर्भवती तब, गईं मुनि नारि जब, निज निज घर को
देखि कोपि मुनि गण, शाप दियो तेहि छन, बनि उडो पंछि तन, एहि अवसर को
नभहिं बिहंग बनि; उड़ि गईं नारि मुनि, बैठि जाई ऊपर, सकल गिरिबर को
गौरि राखि सकी नहिं, बीज हर पछिगया, भूधर गिराई दियो, बीज उमा बर को ॥ ६ ॥
हिमवत झलकत, बीज तेज शिव कर, चोंच गहि तेहि सुर, सरि मे खसायो है
खलमल भयो जल, गंग के तरंग तेहि, तट पर फेंकि जहं, सरपत छायो हैं ॥
बीज गयो लसकि, बालक एक निकसि, सुन्दर बदन देखि, गाधिसुत आयो हैं ।
गौरि गुह गंगासुत, सेनानी पावकभू, नाम स्कंद आदि, धरि शीश नायो हैं ॥ ७ ॥
आईके अनल दियो, सांगि शक्ति तेहि तब, आशिष अनेक विधि, कही घर गयो हैं ।
ग्रामनारि जल भरि, देखति बालक एक, खेलत सकल तेहि, गोद निज लयो हैं ।
राखि शिशु भवन, मगन भई ग्रामनारि, सेवन पालन महं, तन मन दयो हैं ।
गौरि एक दिन मिलि, बालक अनेक गुह, खेलै गयो विपिन, जो निशिचरलयो हैं ॥ ८ ॥

॥ तारक युद्ध ॥

कार्त्तिकमहिना तिथि, षष्ठी मे जनम तार, गिरिजा कुमार कर, जग महं भई थी ।
कार्त्तिक के नाम से, प्रसिद्ध भयो बसुमति, तारक निधन हित, शिव रूप लई थी ॥
चढ़ि गिरि शिखर, प्रचण्ड शक्ति मारि तेहि, फटि गिरि मारि झुण्ड, राक्षस जो गई था ॥
गौरि कछु अधमारे, भागे कहि बाप बाप, दैत्य जो भूधर के, गह्वर बास लई थी ॥ ९ ॥
गिरि धरि नारि रूप, सुरपुर जाई तब, कहति वृत्तान्त सब, इन्द्रहिं बुझाई कै ।
चले शचीपति युद्ध, हित बाण लेई कर, संग लेई सेना छन, सुर समुदाई कै ॥
मारि बज्र कांख पर, दाहिनो निकालि एक, बालक बलिष्ठ साख्य, नाम तहं आई कै ।
गौरि बाम कांख ते, बिसाख्य नाम शिशु भये, नैगमेय शिशु दियो, उर उपजाई कै ॥ १० ॥
खोलि मुख चारो शिशु, इन्द्र पर धाये तब, भागे शचीपति, बिकराल रूप देखि कै ।
ग्रसन पावक जनु, तिहुंलोक धाये बेगि, अकुलाये सुर रूप, भयङ्कर पेखि कै ॥
बिनति कियेउ शची, पति सुरगण मिलि, शरण गहेउ शिव, रूप तेहि देखि कै ।
गौरि भय रहित, मुदित गये घर फिरि, अमर जपत रहे, गुण शिशु भेखि कै ॥ ११ ॥

॥ कार्त्तिक लीला ॥

एक दिन खेलत खेलत, सुरलोक महं, गयेऊ स्कन्द जहं, विधि हरि देव सब ।
सभा करि बैठे रहे, देखि सोई बालक को, सादर बोलाई नाम, पूछि है विरञ्चि तब ॥
विष्णु को विराट रूप, आपन देखाये गुह, जानि हर बोध कियो, मिटि सब दुख अब ।
गौरि देवगण कियो, पूजन विनति युत, विमान चढ़ायो शिव, रूप जानि तेहि जब ॥ १२ ॥
सुरगण लेई तेहि, कैलास भवन शिव, गये हर गिरिजा, उठाई गोद लियो हैं ।
पूजि देववृन्द राखि, त्वष्टापुर मन्दिरहिं, कार्त्तिक गुणानुवाद, यश रस पियो हैं ॥
शिव तब सेना निज, अस्त्र शस्त्र देव बहु, तारक विनाश हित, गुह कहं दियो हैं ।
गौरि कनकैता नाम, बकरा नदय दियो, धरि बांधे गुह तेहि, सुख सब हियो हैं ॥ १३ ॥

॥ नारद विप्र ॥

एक समय विप्र एक, नारद के नाम धरि, अजमेध यज्ञ प्रण, किये विचारि कै ।
देखि कनकैता को, पकरि लेई गयो विप्र, राखि घर बाहर, गयेउ दिन चारि कै ॥
फिरि आये बकरा, न देखि घर भीतरहिं, खोजत फिरेउ भूमि, तिहु लोक सारि कै ।
गौरि जाई कार्त्तिक को, कहो सब हाल विप्र, वीरभद्र भेजे गुह, बकरा जोहारि कै ॥ १४ ॥
छूटि जब भागि गयो, बकरा गहर होई, भ्रमि तिहुं लोक गयो, विष्णुलोक अन्त को ।
वीरभद्र जाई तहं, गहि लाये बकरा को, चढ़िकै स्कन्द गये, तिहुं लोक अन्त को ॥
फिरि आये भवन को, गिरिजा सुवन जब, मांगि तेहि बकरा को, गहो विप्र अन्त को ।
गौरि गुह यज्ञ फल, दियो तेहि बिनु किये, हरखि फिरेउ गृह, विप्र तब अन्त को ॥ १५ ॥

॥ तारका युद्ध ॥

हरि रबि तनया के, नाम से प्रसिद्ध ठाम, उतरे भवन तें, स्कन्द सेना लेई कै ।
तारका असुर को, सम्वाद कहलाये तब, समर करहु खल, खूब चित्त देई कै ॥
भूमि नभ पवन, खेलाई बहु भांति तोहि, हनिहौं सुदृढ़ कहौं, तोहि परिचेई कै ।
गौरि अद्भुत भयो, युद्ध गुह तारक के, चरित सुमिरि रहे, जन नित येई कै ॥ १६ ॥
तारक खबर पाई, कोपि मन अधिकाई, चले लेई समुदाई, असुर के दल कै ।
रणभूमि जाई कै, उपाई कियो बहुतेरो, युद्ध कियो भारी तहं, माया फन छल कै ॥
लड़ि बहु भांति गुह, हनेउ समूह दैत्य, मारि डाले अन्तहि, तारक दुष्ट खल कै ।
गौरि जै जैकार करि, सकल अमरगण, भये अकचक तहं, देखि गुह बल कै ॥ १७ ॥
रण तजि असुर, बहुत भागे जान लेई, जाई कै पतालपुरि, बास सब कियो हैं ।

बाण नाम तेहि बीच, क्रौंच पर्व्वत पर, बिघ्न करै बहुत, राक्षस दल लियो हैं ॥
देखि दुराचार को, अपार दुष्टताई गिरि, नर बनि गये जहं, सुत शिवा पियो हैं ।
गौरि नाई पद शीश, कहत आपन दुख, हाल सुनि गुह को उपजि कष्ट हियो हैं ॥ १८ ॥
अनल के दियो सांग, छाड़े गुह कोप करि, अग्नि इव धधकि, चलेउ बाण ओर को ।
भयेउ प्रकाश अति, भुवन अकाश गति, सांग जाई गहो बाण, जस धरै चोर को ॥
छनहिं जराई दियो, सेना के सहित बाण, मारे एहि बिधि गुह, असुर कठोर को ।
गौरि गुह शिव लिंग, थापि तेहि ठाम तब, पूजे सब सुर नर, ज्योति झकझोर को ॥ १९ ॥
कपालेश्वर कुमारेश्वर, रामेश्वर प्रतिगेश्वर, शिव लिंग थंभेश्वर, नाम राखि तिन के ।
आठो सिद्धि नवो रिद्धि, चारो फल सहजहिं, मिलत जगत मे, सतत पूजि जिन के ॥
बाण बध सुनि कै, प्रलंब नाम दैत्य एक, कियो उतपात बहु, गये कछु दिन के ।
गौरि शेष सुत नाम, कुमुद तें युद्ध कियो, हराई कुमुद लियो, राज सब छिन के ॥ २० ॥
करत बिलाप गयो, कुमुद स्कन्द पास, सुनि समाचार सब, गुह क्रोधि भारी है ।
सांग कर लेई छाड़े, परम प्रकाश भयो, गयेउ पताल तेहि, नाशे भूमि फाड़ि हैं ॥
असुर के दल को, भसम कियो छन सोई, पावक प्रचण्ड तन, प्रलंब को जारो है ।
गौरि जय जय शब्द रहो, फैलि चहु ओर तब, गावत सकल गुण, गुह बलिहारी है २१ ॥
सांग फिरिआई तब, गुह के निकट छन, सत तीर्थ नाम, तेहि ठाम कर कहते ।
गयेउ पताल पुरि, फांक मही शेष सुत, गाई गुण निशि दिन, शिव सुत रहते ॥
जेहि ठाम होई घुसि, गयेउ कुमुद भूमि, रहो "सिद्धकुल" नाम, कलिमल दहते ।
गौरि गाई गुण गुह, तीरथ दरश किये, जन मन काम सिद्ध, सत्य कहीं लहते ॥ २२ ॥

॥ गणेशजन्मओलीला ॥

हसि घर बैठि, जगदम्ब मौन साधि करि, जब महादेव बीज, अवनि गिराये हैं ।
अनल कपोत बनि, चाटि गई बीज सोई, जेहि ते जनम गुह, बरणि सुनाये हैं ॥
घर की भीतर जाई, हर देखि गिरिजा को; रोष को कारण जाने, सादर मनाये हैं ।
गौरि सुनि शिव बानि, कहति भवानी उमा, तोहि सम स्वामी पाई, सुत नहिं पाये है ॥२३॥
कहत विचारि शिव, शोक तजु महारानि, ब्रत करु गणपति, नेह नेम सार तें ।
कृष्णपक्ष चौथ ब्रत, करि सोम देई अर्घ, गणपति पूजा करु बिबिध प्रकार तें ॥
नेम युत एहि विधि, बरत बरस एक, कीजिये मिलि हैं सुत, शुभग विचार तें ।
गौरि मानि पति बानि, गणपति ब्रत ठानि, जगदम्ब साल भरि, रीति अनुसार तें ॥२४॥

भादो चौथ कृष्ण पक्ष , ब्रत को समाप्त कियो , तेहि रात उमा संग , शिव भोग कियो है ।
बीज के पतन काल , डाकि शिव वृद्ध विप्र , मन्दिर दुआर खड़े , मूख तन छियो हैं ॥
हांक सुनि शिव उठे , शय्या पर बीज गिरे , गिरिजा सहित शिव, बाहर को गयो हैं ।
गौरि मांगि वृद्ध विप्र , भोजन प्रसन्न मन , गिरिजा विविध भोग , तेहि कहं दियो हैं ॥ २५ ॥
भोजन सन्तुष्ट करि , वृद्ध विप्र तेहि छन , आशिष दियेउ तब , सृष्टि कर माई के ।
पूत एक होई हैं , पूजित आदि सब कर , कहि एहि विप्र गयो , तुरत बिलाई के ॥
फिरि घर आई , जगदम्ब देखि शय्या पर , शिशु एक सुन्दर , खेलत हरषाई के ।
गौरि ब्रत फल पाई , छनहिं मगन मन , गिरिजा दिखाई शिशु , शिवहिं बोलाई के ॥ २६ ॥
शिव निज बालक को , देखि मन मोद भरि , नांचि भोलानाथ हाथ, डमरु बजाये हैं ।
बिधि हरि सुर मुनि , योगि ऋषि तेहि छन , गिरिजा सुअन को , देखन तहं आये हैं ॥
तेहि महं शनिस्चर , नैन मून्दे रहे तहं , देखि तेहि उमा कर , मन नहिं भाये हैं ।
गौरि पूछि कारण , नयन शनि मून्दवे को , परिहरि लाज शनि , सकल सुनाये हैं ॥ २७ ॥
चित्ररथ दुहिता , हमारि नारि समय एक , ऋतुवती भई , अभिषेक तब करि के ।
आई मेरो पास बैठि , परम हुलास चित्त , कहो मोहि संग भोग , करु पति ढरि के ॥
रहे शिव ध्यान हम , बैठे नैन मून्दि करि , दियो मोहि शाप नारि , काम बश परि के ।
गौरि यदि नैन खोलि , आज ते देखिहो केहु , जईहैं तुरत शिर , ठाम तेहि हरि के ॥ २८ ॥
तब से नयन मून्दि , रहौं जगदम्ब माई , कहो तोहि कथा सब , आपन बुझाई के ।
हंसि उठि जगदम्ब , महादेव लीला बश , सुनि के अनुठो बानि , बोलेउ जनाई के ॥
खोलि नैन देखो मेरो , सुत कहं शनि तुम , दाहिनो नयन कोण , देखेउ छिपाई के ।
गौरि शनि दृष्टि पात , शिर उड़ि शिशु कर , रोदन करति उमा , अति बिलखाई के ॥ २९ ॥
हाहाकार मचो , उमा शाप दियो शनि कहं , अङ्ग हीन बनो शनि , ग्रह नभ भये हैं ।
सोचि सो बिचारि , त्रिपुरारि कहैं हरि कहं , जीबन उपाई मोहि , सूझि एक नये हैं ॥
जाई लाओ शिर जीव , कर सोई हरि अब , उत्तर शिरहान करि , सोई जोई गये हैं ।
माधव तुरत गये , आये पुष्पभद्रातट , गौरि गज एक सोये , सुत तीय लये हैं ॥ ३० ॥
काटि गजशिर हरि , हथिनी बिनति कियो , दियो शिर दूसर , तुरत जनमाई के ।
उठि बैठि हाथी देखि , हरषि हथिनी तब , चले हरि गज शिर , गरुड़ चढ़ाई के ॥
आये शिव गिरिजा , निकट रमा नाथ तब , दियो शिशु तन शिर , शंकर जोडाई के ।
गौरि उठि बैठि शिशु , आई दौड़ि देखि उमा , हरषे सकल सुर , शंकर दोहाई के ॥ ३१ ॥

गणपति महिमा, बखानि सुरगण तब, पूजे शिव सहित, विरञ्चि हरि तेही को
बर शिव गिरिजा, सहित दियो विधि मिलि, माधव शंकर सुत, गणपति देही को
वेद वो पुराण शास्त्र, काव्य आदि ग्रन्थ महं, शुभकाज यज्ञ आदि, पूजें सब जेही को
गौरि कथा एहि लागें, प्राणहु ते प्यार अति, योगी यति मुनि सुर, शंकर सनेही को ॥ ३२॥

॥ दूसर विधि गणेश जन्म ॥

दूसर विधान शिव, पुराण बखान कियो, सुनिये सुजनगण, कहीं तेहि गाई कै।
गिरिजा नहात रहो, एकबार सखि संग, शिव तेही अवसर, गृह उमा जाई कै॥
बहुत लजाये गिरि, राज की कुमारी कहं, फिरि आये मन्दिर, आपन हरषाई कै।
गौरि उमा मनहिं, विषाद कियो बडो भारि, कहो सखि विजया ने, गिरिजा बुझाई कै॥३३॥
द्वार पर रखिये, नियत करि केहु कहं, जेहि डर शिव अब, बाहरहिं रहि हैं।
महिमा देखाओ माई, रचो गण बहु तेरो, तेहि कर पति सभ, सुर नर कहि हैं॥
हित उपदेश जानि, मानि लियो महारानि, जननि भवानी सोई, काम करै चहि हैं।
गौरि तन मैल को, मिलाई कै बनाई सुत, कहे बैठि रोकु द्वार, जब शिव अई हैं ॥३४॥
गणपति मन्दिर दुआर, चढ़ि बैठि गयो, गिरिजा की गण घन, बलो सभ लेई कै।
शिव तेहि काल आये, देखि तेहि बालक को, द्वार रोकि बैठे हैं, आसन दृढ़ देई कै॥
जान लगे भीतर, रोकेउ गण पति तब, पूछि नाम ग्राम शिव, अति मन भेई कै।
गौरी बकवाद भई, दोऊ तें अनेक विधि, घबड़ाये देखि शिशु, बल विपुलेई कै॥ ३५॥
गणपति संग भयो घोर युद्ध तेहि ठाम, विधि हरि अमर, सकल लड़ि थाके हैं।
शिव लड़ि बहु विधि, अन्त खिसिआये अति, काटे शिर गणेश, सुवन गिरिजा के हैं॥
फेंके माथ उछलाई, तुरत बिलाई गयो, भयो शोर हाहाकार, देखि दशा ताके हैं।
गौरि उमा रोदन, कराति घर मांहिं बहु, महादेव उपाई बताई तब वाके हैं ॥३६॥
मानि उपदेश तब, रमेश गरुड़ चढो, चले शिर लाने शिशि, उत्तर जा सोई है।
वीरभद्रनदीतट, उत्तर सिरहान सोए, हथिनि सहित सुत, हाथी एकठोई है॥
खगपति ऊपर, धरेउ शिरकाटि तार, देखि पति दशा गज, नारि अति रोई है।
गौरि सुनि बिनति, हथिनि कर रमापति, दूसर लगाये शिर, तेहि सम जोई है ॥३७॥
हाथी जीयो, खुशी भये हथिनि समेत सुत, गये हरि शिरलेई, सेई शिव पास को।
तुरत उपाई कियो, गिरिजा रमण तब, जोड़े शिर तन लई, परम हुलास को॥
प्रणव उचारि शिव, परम कृपालु भये, उठि बैठे गणपति, सुत सुखराश को।

गौरि जगदम्ब भई , मुदित विशेष मन , शंकर भवानि लीला , जगत प्रकाश को ॥ ३८ ॥
चौथ तिथि कृष्ण पक्ष , भादो मास गणपति , जनम जगत भयो , अति सुखदाई है ।
शिव बिधि हरि सुर , मुनिगण सभ तेहि , पूजे वर दीयो जाते , प्रथम पुजाई है ॥
बहुविधि विनय करि , देवगण घर गये , गिरिजा उठाई सुत , गोद धरि लाई है ।
गौरि गृह गणपति , लीला अद्भुत बड़ो , जननि हरख उर , सीमा नहिं पाई है ॥ ३९ ॥

॥ कार्त्तिकगणेशलीला ॥

एक दिन कार्त्तिक गणेश , दोउ भाई मिलि , शिव उमा चरण , सरोज शिर नाये हैं ।
कहत बिवाह मेरो , दिजिये कराई तात , देरो जनि किजिये , जो बात मन भाये हैं ॥
शंकर सहित उमा , कहे दोउ कहं तब , सृष्टि परिक्रमा करि , प्रथम जो आये हैं ।
गौरि छन ताके आदि , शादि करि दिहौं हम, मोर चढि कार्त्तिक , तुरत उठि धाये हैं ॥४०॥
गणपति मूषक , सवारि देखि शोच कियो , सृष्टि परिक्रमा मे , बिलम्ब अति होई हैं ।
बेद बिश्वनाथ शिव , दिगम्बर हर कहैं , सन्त औ पुराण गावैं , सृष्टि रूप सोई हैं ॥
करि अनुमान अस , त्रिपेक्षण तेहिछन , मातु पिता कर कियो , सृष्टि मय जोई हैं ।
गौरि कहैं महेश को , गणेश नमाई शिर , ताहि परिक्रमा किये , सृष्टि को पुरोई हैं ॥ ४१ ॥
जानि बुद्धिमान अति , भयेउ प्रसन्न हर , आशिष दियेउ शिव , बहुत गणेश को ।
शिव रुचि जानि विश्व , रूप दुई कन्या निज , सिद्धि अरु बुद्धि नाम , सुअन महेश को ॥
बिधि अनुसार व्याह , करि दियो तेहि छन , हरखे गणेश अति , नाशक कलेश को ।
गौरि सिद्धि सुत क्षमा , बुद्धिसुत लाभ भये , गणपति आदि पूज्य , भयेउ हमेश कों ॥ ४२ ॥
कार्त्तिक भ्रमण करि , चहुं ओर सृष्टि कर , फिरि आये पथ , भेंटे नारद मुनीश को ।
नारद बचन , अन कठल अंकथ कहे , रूसि गये गृह नाई , शिव पद शीश को ॥
क्रौंच गिरि जाई वसे , कार्त्तिक उदास होई , त्यागि दियो नेह सुता , जमात गिरीश को ।
गौरि शिव गिरिजा , मनाये बहु भांति सुत , कौतुक सुमिरि , मोह लागत कवीश को ॥४३॥
गुह बसे दूर जाई , क्रौंच तें योयन तीन , शिव तहं प्रति मास , पूर्णिमा को जात हैं ।
तीरथ परम सुख , दाई दुख नाश करे , रोग शोक मोह भ्रम , सकल नशात हैं ॥
एकबार सत्य कहौं , कलुष जनम कोटि , किये दरशन तार , जातहिं बिलात हैं ।
गौरि एहि विधि शिव , पुराण बखान करे , निशि दिन सुर मुनि , नर गण गात हैं ॥ ४४ ॥

॥ सोम अर्घ्य ॥

कारण सुनहु अब , सोम अर्घ्य देन कर , जेहि बिनु व्रत नहिं , पावे निसतार को ।

विधि घबडाई सृष्टि, रचन समय ध्यान, कियो गणपति प्रभु, मंगल के सार को ॥
शुभ बर देई, कै गणेश चले नभपथ, शशि लोक पिछलि, गिरेउ तेहि बार को ।
गौरि शशि हंसि उठे, गणपति कोप कियो, शापदियो तब ; सोम, परम गंवार को ॥४५॥
कहत गणेश तोहि, देखि रहि तिथि चौथ, कृष्ण पच्छ कलंक, लगि हैं जीव धारी कै ।
सोम बहु बिधि कियो, बिनति बचन सुनि, कियेउ प्रसन्न प्रभु, गज मुख धारी कै ॥
कही गणपति प्रभु, चौथ वदि प्रति मास, ब्रत करि दिये अर्घ्य, दिहैं दोष टारी कै ।
गौरि गये गणेश, भवन सुखधाम नाम, लिये छन नाश होत, दुख सनसारी कै ॥ ४६ ॥
अदिति बशिष्ट शत, रूपा राज शेषसेन, शची आदि बहुतेरा, चौथ ब्रत करि कै ।
लहेउ अपार सनसार, मे बिबिध सुख, फैलि रही यश, गणपति जग भरी कै ॥
करि वर बदन, जपत मन काम सिद्ध, पावत सकल भजे, नेह दृढ़ धरि कै ।
गौरि जन मनोरथ, दीजिये पुराई प्रभु, बिनति करेऊं, बहु चरण पकरि कै ॥ ४७ ॥

॥ भजन ॥

शिव शिव, शिव शिव, शिव शिव, शिव शिव, शिव शिव गईये ॥ धुआ ॥
शिव नाम मोच्छ धाम, देखु नित्य काशि ग्राम, वसत गौरि सहित वाम, शंकर शिव गईये ॥१॥
शिव नाम मोच्छ धाम, जपत भक्ति सहित राम, जपहु तात आठो याम, शंकर शिव गईये ॥२॥
शिब नाम मोच्छ धाम, करत शुद्ध सकल चाम, मांगत नहिं कौडि दाम, शंकर शिव गईये ॥३॥
शंकर शिव मोच्छ नाम, भजत सकल सतत ठाम, केवल कलि सुखद नाम, शंकर शिव गईये ॥४॥
शंकर शिव मोच्छ धाम, गौरि नित्य करै प्रणाम, करहु मोर हृदय धाम, शंकर शिव गईये ॥५॥

श्री गणेशाय नमः । श्री गौरीशंकराभ्यान्नमः । श्री सरस्वत्यै नमः ।







अथ गौरीशंकरायण ।

॥ अथ पञ्चम खण्ड ॥

॥ ५ ॥

॥ अथ शंकरसमर ॥

तडितमालि तारकाक्ष, कमलाक्ष तीन सुत, तारक के वध पाछे, घोर तप कियो हैं ।
बिधि बर दियो, तीनों दैत्य मांगे तीन पुर, एकसम मयासुर, रचि छन दियो हैं ॥
छाडि एक बाण, जो बिनाश करै तिहुं पुर, सोई तीनो दैत्य के, परान हरि लियो हैं ।
गौरि मन मानो बर, देई गयो धाता घर, तीनों दैत्य तीनो पुर, बसे मोद हियो हैं ॥१॥
शंकर मन्दिर घर, घरहिं बनाई दियो, तिहुं दैत्य शिव पुजे, प्रजागण लेई के ।
नित शिव पूजत, सकल जन ताके पुर, पूजावत हर दैत्य, डर सब देई के ॥
वेद अनुसार सब, चलत हमेश तहं, तिहुं पुर त्रिपुर के, नाम पाई जेई के ।
गौरी तेज बढ़ो अति, त्रिपुर को धर्म्मबल, सुरगण शिव पास, गये मन भेई के ॥२॥
जोरि कर अमर, कहत शिवशंकर को, त्रिपुर हमार राज, तेजबल पाये हैं ।
हनि तेहि महाराज, कोजिये हमार काज, लाज रखु आज, तव शरन को आये हैं ॥
सुनि बहुबिधि बर, दिये महादेव प्रभु, हरि पहं अमर को, सकल पठाये हैं ।
गौरि रमापति एक, पुरुष बसन मैल, सारो शिर मुडाये को, तहं उपजाये हैं ॥३॥
रचि एक ग्रंथ हरि, दियो तेहि मुंडो कहं, नाम धरि अर्हंस, त्रिपुर को गयो हैं ।
नारदहुं चेला भये, मुंडो कर आई तब, त्रिपुर समेत कुल, मुंडो गुरु कयो हैं ॥
अटपट बचन, बिरुद्ध वेद शास्त्र कर, ग्रंथ रहो लिखो, मुंडो लेकचर दयो हैं ।
गौरी रमापति एहि, बिधि मति फेरि दियो, त्रिपुर बिनाश हेतु, रूप छल भयो हैं ॥४॥
सोलह हजार थो, श्लोक तेहि ग्रंथ कर, जेहि पढ़ो सुनि कै, त्रिपुर मोहे भारी हैं ।

काल वश त्रिपुर , हवन श्रो पूजन तजि , भस पड़ो महादेव , भजन विसारी हैं ॥
नगर निवासी भयो , दुखित दरिद्र अति , माया छल अर्हंण , विपुल पसारी हैं ।
गौरि सुर साथ लेई , बिधि समाचार सव , कहे जाई हर , हरि त्रिपुर विगाड़ी हैं ॥५॥
तेहिछन षडानन , गोद करि लाई उमा , लेई शिव गये निज , मन्दिर भीतर को ।
सुरगण शोचि शिव , मन्दिर को जान लगे , गणपति दंड लेई , बरजे अमर को ॥
विधि सुरगण लेई , परम विषाद उर , जाई समाचार कहो , कमला के बर को
गौरि रमापति मंत्र , हजार दश अक्षरके , रचि बतलाये तब , तेहि अवसर को ॥६॥
चौदह करोड जप , करु एहि जाई सुर , तेहि के प्रताप हर , त्रिपुर को मारि हैं ।
सुनि रमापति वानि , जप कियो सुर सब , शंकर दरश दियो , सुर उपकारि हैं ॥
मांगि वर अमर , त्रिपुर नाश करु प्रभु , सुनि शिव बाण एक , त्रिपुर पै छाड़ि हैं ।
गौरि वाण नाश कियो , निशाचर बहुतेरो , तिहु दैत्य सुधा कुंड , छीपि प्राण धारि हैं ॥७॥
लोह तन होई अति , शब्द कियो दैत्य तिहुं , शिव कहि बिधि हरि , कहं समुझाई कै ।
वत्स बनि जाई दोउ , सुधा कुंड चाटि लेहु , रथ एक देहु मोहि , युद्ध हेतु लाई कै ॥
बनि वत्स बिधि हरि , अमृत के कुंड सब , पीयो जाई तेहि पाछे , रथहिं बनाई कै ।
गौरि सुरगण सब , बिनय करि बहुबिधि , चलेउ त्रिपुर पहं , शंकर चढ़ाई कै ॥८॥
त्रिपुर सम्मुख जाई , विष्णुपति वाण शिव , छाडे एक वार दियो , त्रिपुर जराई कै ।
देवगण सुमन , मगन होई गगन तें , जै जै कहो तेहि छन , दिन्हेउ गिराई कै ॥
बिपद विनाश भयो , सुर वृन्द खुसि भये , बिधि हरि बिनय कियो , शिवगुण गाई के ।
गौरि यह चरित , ललित भई शिव जू के , रही त्रिपुरारी यश , तिहुं लोक छाई कै ॥९॥
शिव अनुमति पाई , हरि कहे अर्हंण को , मरुथल जाई तात , वास अब कीजिये ।
कलियुग महं तेरो , ग्रंथ को प्रचार अति , होई हैं समाज ब्रह्म , उपदेश दीजिये ॥
शिव के आदेश पाई , तलातल रहे मय , दानव अवध हाल , सुनि अब लीजिये ।
गौरि दनु नारि एक , कश्यप जननि मय , तेहि के चरित सुनि , भव भ्रम छीजिये ॥१०॥
काशी जाई मय तप , कठिन कियेउ अति , दियो बरदान शिव , तेहि पर ढरिकै ।
अजर अमर अरु , दैत्य कर गुरु कियो , तेहि तें दानव मय , सकै नहिं जरि कै ॥
सुजन समाज अब , जलंधर बध कथा , सुनिये मुदित मन , ध्यान तनि धरि कै ।
गौरि शिव चरित , पवित नित गान किये , दीन जन भव निधि , सहजहि तरि कै ॥११॥

॥ जलन्धर कथा ॥

एक समय शचीपति , शिव दरशन हित , सभा कियो जेहि महं , रुद्र रवि आये हैं ।
आठो वसु विश्वदेव , तेरह उन्चास पौन , दिग्पाल उपदेव , आदि तहं आये हैं ॥
शिव गये बनि अब , धूत तेहि ठाम तब , शचीधव भूत जानि , निकट बोलाये हैं ।
गौरि तेहि सन पूछे , शिव कहं एहि बेर , राजत कहहु मोहि , भ्रम कुटि आये हैं ॥ १२ ॥
शिव अवधूत रूप , उत्तर न दिये कछु , शची पति बज्र तेहि , उपर चलाये हैं ।
शिव भयो नीलकण्ठ , वज्र गिरि जरि करि , भाल नैन तेज हर , विपुल बढ़ाये हैं ॥
सुरलोक जरे लगे , भयेउ बिकल सब , बृहस्पति जानि शिव , इन्द्र समुझाये हैं ।
गौरि वहु बिनति , कियेउ शचीपति तब , भाल नैन तेज शिव , सागर खसाये हैं ॥ १३ ॥
तेज गिरि निधि जब , निकसे बालक तब , रोदन पसार कियो , शब्द बड़ो करिके ।
बिधि गये निधि तट , झट पट शिशु गह्यो , सागर विरञ्चि हाथ , दियो लाय धरिके ॥
बालक पकरि दाढ़ो , बिधि कर दोऊ हाथ , गिरे बहु जल बिधि , नयन ते ढरिके ।
गौरि बिधि आशिष , दियेउ बरदान तेहि , राखि नाम जलंधर , शिवहिं सुमरिके ॥ १४ ॥
सुनहु सागर तब , सुअन प्रचण्ड अति , करिहैं जगत राज , सब कहं जीतिके ।
बिधि गये घर तब , जलंधर वास कियो , जालंधर पुरि जाई , राज कियो नीतिके ॥
धरम परम कियो , भयो पुण्यवान बड़ो , गये कछु काल तार , एहि विधि बीति के ।
गौरि सभा करि एक , बार बैठे जलंधर , पहुंचे नारद मुनि , काल बिपरीति के ॥ १५ ॥
राहू आये तेहि छन , शिरके विहीन देखि , लगि अचरज बड़ो , निधि सुत कहं रो ।
कारण पुछेउ कहे , नारद बुझाई तब , हरि उपदेश सुर , निधि मथे जहं रो ॥
मन्दर पहाड़ ले , मथानी रज्जू बासुकि को , पूछ गहो सुर दैत्य , हाथ माथ महं रो ।
गौरि गणपति पूजा , भूलि गये रमापति , तेहितें प्रगटे विष , हलाहल तहं रो ॥ १६ ॥
लगेउ जरन तिहुं , लोक तेहि विष तेज , शङ्कर दयालु चित , तेहि पान कियो हैं ।
विविध प्रकार रत्न , आदि भये तेहि पिछु , सुरगण मिलि तेहि , छल करि लियो हैं ॥
हरि पुनि रमा कहं , आपन पियारि नारि , लिन्हेउ बनाई सुख , नारायण हियो हैं ।
गौरि मद मदिरा , पियाये हरि राक्षस को , अमृत परोसि पुनि , देवता को दियो हैं ॥ १७ ॥
छौपि करि राहु नाम , दैत्य सुरगण महं , करत रहेउ पान , अमृत चोराई के ।
तुरत रमेश तेहि , असुर के शिर काटि , जलंधर सुनि कथा , कोपे रिसियाई के ॥
समर कियेउ जाई , सुरगण साथ सोई , दियो सब अमर को , समूह हराई के ।

गौरि अकुलाई सुर, माधव पुकार कियो, आई रमापति लड़े, तहं अधिकाई कौ ॥ १८ ॥
थाकि गये लड़ि हरि, कहे वर मांगि लेहु, जलंधर कहे रहु, घर मेरो आई कौ ।
वास करु रमा संग, कही एवमस्तु हरि, कमला सहित वसे, गृह तार जाई कौ ॥
जीति सब कहं एहि, विधि राज कियो जग, आये मुनि नारद, शङ्कर गुण गाई कौ ।
गौरि कहे नारद, सकल रत्न तोहि पास, देखि नहिं नारी रत्न, रहैऊं लजाई कौ ॥ १९ ॥

॥ कीर्तिमुख कथा ॥

शङ्कर मन्दिर एक, रहति सुन्दरि नारि, तेहि बिनु घर नहिं, तिहरो सुहात हैं ।
राहु को पठायो खल, बल करि लानै तेहि, जाई सोई महादेव, खबर सुनात हैं ॥
सुनि हर कोप कियो, राहु को ग्रसन एक, पुरुष कराल रचे, गहौ तेहि खात हैं ।
गौरि सुनि राहु कर, बिनति दयालु शिव, बरजि पुरुष तेहि, राहु को बचात हैं ॥ २० ॥
राहु छाडि महादेव, सम्मुख कहत सोई, दीजिये भोजन मोहि, भूख बड़ लागी हैं ।
कहे शिव हाथ पांव, वदन आपन खाहु, सुनि खाये सब अंग, शिर एक त्यागी है ॥
कीर्ति मुख नाम धरि, शिव कहे बिन पूजे, तोहि मेरो पूजन न, शुभ फल भागी है ।
गौरि तेहि कारण, प्रथम पूजि कीर्तिमुख, पूजत महेश जेते, शिव अनुरागी है ॥ २१ ॥

॥ जलन्धर कथा ॥

राहु आये फिरि, समाचार कहे निधि सुत, दैत्य के समूह लेई, कैलासहिं गयो हैं ।
हरगण जाई कै, लड़ाई कियो बहुताई, असुर के दल तें, विकल सब भयो हैं ॥
शिव तेहि ठाम आई, कियेउ संग्राम अति, जलंधर कियो नाद, माया छल मयो हैं ।
गौरि शिव रूप धरि, जलंधर उमा पहं, गयेउ बिलाई शिवा, जानि छल भयो हैं ॥ २२ ॥
फिरि गये असुर, लजाई मन जानि तब, गिरिजा सुमरि लियो, बिष्णुहिं बोलाई कै ।
कहो पतिव्रत बल, जलंधर नारि निज, हरत न युद्ध महं, लड़त रिसाई कै ॥
कालनेमि सुता वृन्दा, नाम तेहि नारि कर, पतिव्रत भंग करु, हरि तहं जाई कै ।
गौरि हरि चले शिव, उर धरि योगी बनि, जलंधर फुलवाड़ी, उतरेउ आई कै ॥ २३ ॥
सपन खराब देखि, वृन्दा उठि प्रात काल, मन बहलान गई, आपन उद्यान को ।
देखि दुई असुर, पथहिं चिक्कार कियो, आगे बढ़ि योगी सोई, देखो सुख खान कों ॥
नाश भयो असुर, हुंकार योगी कर किये, पूछि कुशलात पति, करि गुण गान को ।
गौरि योगी नभ देखि, वानर गिरेउ दुई, जलंधर शिर तन, धरि बिलगान को ॥२४॥

गौरि लेई सुदर्शन, अन्तकाल छाड़े हरि, जरत कुमत तेहि, जीव जात कटो है ॥ ३१ ॥

॥ अथ शंखचूड़ कथा ॥

श्रवण करहु अब, शंखचूड़ बध कथा, कही तेहि गाई शिव, गिरिजा प्रसाद तें ।
शिवलोक निकट, विराजै धेनु लोक एक, जेहि मध्य राध कृष्ण, बसै मरजाद तें ॥
सेवत शंकर धेनु, गोपी गोप गण बहु, सुदामा सुगोप एक, रहैं अह्लाद तें ।
गौरि सोई शंखचूड़, दानव भयेउ जग, कालवश मूढ़ फल, राधिका विवाद तें ॥ ३२ ॥
राधा को पठायो कोउ, दास घनश्याम प्रभु, आपु जाई बिरजा के, संग भोग कियो हैं ।
सुनि समाचार राधा, कोप करि गई तहं, सुदामा भीतर घर, जाने नहिं दियो हैं ॥
भयेउ कोलाहल, बिरजा भयेउ नदी, कृष्ण भये लोप देखि, राधा खेद हियो है ।
राधा लौटि घर गई, बिरजा प्रगटे पुनि, गौरि हरि बहुरि, सुकाम रस पियो हैं ॥ ३३ ॥
भोग करि राधिका, भवन फिरि आये हरि, देखे राधा कोप घर, बैठि रूसो करिकै ।
भयो बकवाद अति, शाप दियो राधा हरि, नर भये तेहि हेतु, काम फन परिकै ॥
राधा शाप दियो पुनि, सुदामा गुआल कहं, दानव बनहु तुम, गयो गोप डरिकै ।
गौरि राधा कहं शाप, सुदामा दियेउ तव, गोपी अनब्याही रही, जग अवतरिकै ॥ ३४ ॥
कारण भयेउ सोई, शंखचूड़ जन्म कर, बिप्रचित दंभासुर, घर अवतरे हैं ।
शंखचूड़ बिधि तप, करि बरदान पाई, धर्मधुज दुहिता, तुलसी पुनि बरे हैं ॥
जीति तिहुं लोक कहं, राज्य कियो बहुकाल, तुलसी के पतिब्रत, बल नहिं हरे हैं ।
गौरि जब शंखचूड़, रूपधारि नारायण, पतिब्रत भंग कियो, शिव हाथ मरे हैं ॥ ३५ ॥
शंकर आयसु मानि, रूप धरि छलखानि, पतिब्रत भंग हरि, कियो जाई जबहीं ।
जानि कै मरम नारि, शाप दियो दनुजारि, बैकुण्ठ बिहारी दियो, दरशन तबहीं ॥
तुलसी भयेउ नदी, गंडकी विख्यात जग, जेहि तट हरि गिरि, टलत न कबहीं ।
गौरि शिला भये हरि, काटि तेज दन्त कृमि, नाम पड़े शालिग्राम, नाम धरे सबहीं ॥ ३६ ॥
शंकर आशिष बल, शंखचूड़हड्डी भल, भयेउ सकल शंख, सुन्दर सुहावनी ।
तुलसी भयेउ तरु, पल्लव तेहार नित, शालिग्राम पर चढ़ै, जग अति पावनी ॥
शंख अरु तुलसी, औ शालिग्राम एक संग, रहत सतत जग, शंकट नशावनी ।
गौरि धन जन लहैं, जगत सगन रहैं, चरित ललित साधु, जन मन भावनी ॥ ३७ ॥

॥ अथ अन्धकासुर बध ॥

अन्धक असुर एक, बिधि तप बल माथ, सहस हजार दुई, हाथ खल पायो हैं ।

देखि वति कर दशा, करति बिलाप अति, योगी मन जोडि दियो, तुरत जिवाई के ।
उठि बैठे जलंधर, योगी तब गुप्त भये, वृन्दा पतिसंग कियो, भोग हर्षाई के ॥
तेहि काल जलंधर, माया कर उमा रचि, शुंभ वो निशुंभ मिलि, मारैं अधिकाई कै ।
गौरि शिव कोप करि, सुदर्शन चक्र लेई, जलंधर प्राण लियो, असुर जराई के ॥ २५ ॥
माधव स्वरूप निज, वृन्दा कहं तेहि छन, छल तजि दया करि, दिन्हेउ देखाई के ।
मरम सकल जानि, शाप दियो हरि कहं, नारि तव लोहैं दुई, असुर चोराई के ॥
नारि के विरह बन, फिरिहो बिकल मन, मिलि हैं बहुरि दुई, बानर सहाई के ।
गौरि कहि एहि वृन्दा, प्राण तजि रचि चिता, पायेउ परम गति, यश रही छाई के ॥२६॥
शङ्कर सकोप कहे, शुम्भ वो निशुम्भ कहं, माया रूप गिरिजा को, मारे जेहि कर तें ।
गिरिजा तिहारो शिर, सहजहिं काटि करि, नाशि हैं समय पाई, जोति कै समर तें ॥
जलंधर वध भये, हरषे सकल सुर, सुमन झरत बहु, नगर अमर तें ॥
गौरि एहि शिव के, चरित नित नेह युत, किये उबरत जन, दुख अवसर तें ॥ २७ ॥
शङ्कर के माया वस, वृन्दा के भसम लेई, बदन लगाये हरि, शोच करि बैठे हैं ।
शिव अनुमति पाई, सुनि नभ बानि पुनि, उमा रमा सरस्वती, सुर घर पैठे हैं ॥
दीयो तीन बीज देवि, हरि कहं बोये सुर, तुलसी औ मालती, औ धात्री वृक्ष उठे हैं ।
गौरि नारि तुलसी, औ धात्री तें मोहेउ हरि, देखि दशा मालती, विवश डाह रूठे हैं ॥ २८।
मालती चढ़ाई जात, शिव पर नहिं तेहि, कारण सुजन गण, पूजन के काल मे ।
हरि लेई तुलसी, औ धात्री कर गही गये, बैकुण्ठ निवास कियो, बड़ी खुशहाल मे ॥
सुनिये जवन विधि, सुदर्शन चक्र हरि, पाये हर ढिग करि, तप कठिनाल मे ।
गौरि समाचार यह, संकट विनाश करे, मेटत कुअङ्क जो, विधाता लिखि भाल मे ॥ २९ ॥

॥ अथ सुदर्शनचक्र कथा ॥

बीति गये कछु काल, जलंधर तपपिछु, जबे तबे असुर, समूह तेहि कुल को ।
जाई युद्ध कियो अति, रमा पति संग सब, हारत न कोउ दोउ, बल समतूल को ॥
गौरि हरि तप कियो, कठिन विपिन जाई, जपत सहस नाम, शिव अनुकूल को ।
गौरि प्रति नाम लेई, पार्थिव हजार पूजे, नमे रखि तेहि पर, कमल के फूल को ॥ ३० ॥
एक दिन महादेव, कमल चोराये एक, विष्णु घबड़ाये अति, देखि फूल घटी है ।
लोचन जलज निज, काढ़ि करि नारायण, शिव को चढ़ाये हीय, शंकर के फटी है ॥
महादेव तुरत, प्रगट भये तेहि ठाम, दान देई सुदर्शन, गुण बहु रटि है ।

जीति तिहुं लोक जग, राज कियो बहु काल, परम कुचालि भये, सुर दुखदायो है ॥
शिव भोंकि त्रिशूल, उपर राखे तेहि जब, निकसि रुधिर हर, विनति सुनायो हैं ।
गौरि दैत्य भाव तजि, शिवगण भयो सोई, पायेउ परम गति, अन्धक सुहायो है ॥ ३८ ॥
अन्धक समर बीच, वीरभद्र शुक्र कहं, पकरि धकरि करि, शिव के निकट को ।
लेई गयो देखि तेहि, उमावर लीलि गये, उदर भीतर राखि, नाशेउ कपट को ॥
शुक्र देखि अद्भुत, चरित ब्रह्माण्ड बहु, निकसेउ लिङ्ग होई, तब झट पट को ।
गौरि शिव नाम तेहि, कारण राखेउ शुक्र, भयेउ असुर गुरु, दैत्य कुल दल को ॥ ३९ ॥

॥ अथ ऊषा वाणासुर कथा ॥

एक दिन नर्म्मदा, तट शिव रचि सभा, सुर मुनि असुर, सकल तहं आये हैं ।
गिरिजा बोलाये एक, गण को पठाये हर, करति शृङ्गार अति, विलम्ब लगाये हैं ॥
देव नारि दैत्य नारि, मोहिनी स्वरूप धरि, गिरिजा स्वरूप तहं, उषा निर्माये हैं ।
गौरि जगदम्ब आई, देखिके लजाई उषा, स्वप्न वर गिरिजा, प्रसाद तब पावे हैं ॥ ४० ॥
करि शिव पूजन, शयन करे गई उषा, वैशाख सुदि द्वादशी को, देखो एक सपना ।
पुरुष सुन्दर एक, श्याम गात मनोहर, आई ढिग रति कियो, जस नारि अपना ॥
प्रेम वश उषा जब, चूंबन करन लागि, जागि उठि देखि नहिं, सपन कलपना ।
गौरि शोचि बैठि उषा, आई सखि चित्ररेखा, दियेउ भरोस तेहि, छूटो है विलपना ॥ ४१ ॥
लिखि सभ कर रूप, सुर नर मुनि भूप, देखि अनिरुद्ध रूप, रही शर्माई के ।
एही सखि चित चोर, गयेउ छिपाई भोर, करेउं निहोर तोर, देहु मोहि लाई के ॥
चली छन नभ पथ, लाई तेहि चित्ररेखा, मिलेउ हरखि उषा, तेहि सन जाई के ।
गौरि बहुकाल बसि, हंसि करि भोग कियो, अनिरुद्ध उषा साथ, चित बहलाई के ॥ ४२ ॥
एक दिन बाणासुर, झट झट पट करि, वीरगण संग लेई, आये उषा घर को ।
शिव के पताका टूटि, पेखि अति शोच कियो. भयेउ कोपित देखि, सुत यदुबर को ॥
सुनि समाचार सभ, युद्ध कियो तेहि संग, नागफांस बांधि लियो, तेहि अवसर को ।
गौरि मुनि नारद, सकल कही जाई तब, चले हरि सेना लेई, अपरि समर को ॥ ४३ ॥
कृष्ण बाणासुर संग, घोर युद्ध कियो जाई, काटे सब हाथ तार, गर्व्व चारकर को ।
विकल अधिक भये, बाणासुर खल जब, ध्यान धरि कियो तब, सुमिरण हर को ॥
आये शिव तेहि ठाम. कियेउ संग्राम अति, छाडे हरि शिव दल, छन शीतज्वर को ।
गौरि हर पीतज्वर, छाडे दोउ लडे बहु, अचरज लगो अति, गगन अमर को ॥ ४४ ॥

ज्वर मिज निज लियो, तुरत संगाई दोऊ, महिमा बखान कियो, चरित सुहान को ।
श्रवण करत जेते, कथा हरि हर युद्ध, नाश होत ज्वर रोग, डर नहीं जान को ॥
लडी बहुताई कियो, शंकर मिताई हरि, भयो बाणासुर पार, यह भगवान को ।
गौरि यह चरित, पवित भवरुज नाश, करत भलाई नित, सकल जहान को ॥४५॥

॥ अथ नागासुर बध ॥

महिषासुर सुत एक, नाम भयो नागासुर, गजासुर तप कियो, बिधि कर भारी है ।
कामजित हाथ बध, बर पाई सुखी भयो, राज करि तिहुं लोक, जीति सुरभारी है ॥
देखि अतयाचार तार, कोपि महादेब प्रभु, त्रिशूल चढ़ाई तेहि, असुर को मारी है ।
गौरि "कृत्तिबास" नाम, सुखद मिलेउ तेहि, भयो शिवगण हर, महिमा प्रचारी है ॥ ४६ ॥

॥ दुन्दुभी दानव बध ॥

दिति कर भाई एक, दानव दुन्दुभी नाम, करि उतपात गयो, खल काशी धाम को ।
देखि शिब भक्त एक, बाघ बनो तेहि पर, झपटे असुर शिव, आये तेहि ठाम को ॥
मारि तेहि महादेव, त्रिशूल चढ़ाई लियो, "हर ब्याघ्र" तीरथ, संग्राम भूमि नाम को ।
गौरि हर लीला यह, गावहु मुदित मन, सुमिरण करु साधो, शिव आठो याम को ॥ ४७ ॥

॥ अथ उतपल, विदल दानव बध ॥

उतपल विदल, दानव दुई बली अति, कियेउ कठिन तप, विधि कर जाई के ।
मानुष के हाथ बध, होई हैं न तेरो तात, दियो बर बिधाता, हरषि दोउ भाई के ॥
पाई बर अमर, सकल जिति लियो खल, मारि तेहि जगदम्ब, रणहिं खिलाई के ॥
गौरि युद्धकाण्ड शिव, पुराण बखान कियो, गाये कथा धन जन, मिले अधिकाई के ॥ ४८ ॥

शिव शिव शिव शिव, शिव शिव शिव शिव, शिव शिव शिव शिव, हरदम जपिये ।
हर हर हर हर, हर हर हर हर, बम बम बम कहि, काल कलि खपिये ॥
भोला शंभु महादेव, नाम जप तप करि, शिव के प्रताप मन, भव निधि टपिये ।
गौरि शिव महिमा, सुजन गण गान करु, जानि मतिहीन मोहि, काव्य दोष क्षमिये ॥४९॥

शिव शिव शिव शिव, शिव शिव विश्वनाथ, शिवाशिव राजत, सतत सब ठाम को ।
शिव शिव शिव शिव, शिव शिव सुमिरण, नाशत सकल रोग, पुरवत काम को ॥
शिव शिव शिव शिव, शिव शिव विश्वनाथ, मेटत कुयङ्क भाल, बसि काशी धाम को ।
गौरि शिवाशिव करि, दया जीव दान देत, लेत जग सुयश, हटाई काल बाम को ॥५०॥

॥ अथ गौरीशंकरायण ॥



श्रीगणेशाय नमः ।



श्रीगौरीशंकराभ्यान्नमः ।



श्रीसरस्वत्यैनमः ।

॥ पष्ठम खण्ड ॥

॥ अथ शिव काशी निवास ॥

॥ अथ विश्वनाथ मिलाप ॥

॥ अथ विश्वनाथकाशी ॥

॥ अथवा ॥

॥ दिवोदास कथा ॥

शिव एक बार बिधि , हरि सुर गण मुनि , गये काशी धाम , विश्वनाथ दरशन को ।
पूजि विश्वनाथ शिव , कियेउ आलाप दोउ , भई पहिचान भल , गिरिजारमण को ॥
विश्वनाथ कहै शिव , गिरिजा सहित इहां , रहिये हमार संग , एकहिं भवन को ।
गौरि विश्वनाथ बानि , मानि महादेव प्रभु , गिरिजा सहित राजे , मुक्ति के सदन को ॥ १ ॥
नाम भई अन्नपूर्णा , गिरिजा भवानी कर , शिव विश्वनाथ भये , मुक्तिपुरी काशी मे ।
विष्णु बिधि सुरगण , मुनिगण शिवगण , उमागण आई बसि , धाम सुखराशी मे ॥
पूजत शंकर उमा , रहत मुदित चित , निज निज लोक जाई , भवरुज नाशी मे ।
गौरि शिव गिरिजा , बिराजि काशी आई जब , काटे दिन काशी गुण , कीबल प्रकाशी मे ॥२॥

॥ दण्डपाणि कथा ॥

भैरो कोतवाल लेई , शिब संग जगदम्ब , एक दिन आनन्द , बिपिन उमा गई है ।
देखि एक बिप्र हरि , कैश नाम तप करे , जाई हर निकट , खबर उमा दई है ॥
छुई तन तार शिव , परम पवित्र कियो , काशी धाम राज बर , शिब सन लई है ।
गौरि दण्डपाणि नाम , राखि काशी राज दियो , परम दयालु चित , शिब शिवा भई है ॥३॥
शंकर दियेउ दुई , गण दण्डपाणि कहं , "संभ्रम उद्भ्रम" नाम , लोग जाको कहते ।
जेहि भक्ति दण्डपाणि , अरु महादेव पद , होत नहिं होय , सोई काशी नहिं रहते ॥

धनञ्जय वैश्य शिव, निन्दक जननि अस्थि, लेई गयो काशी, किन्तु मुक्ति नहिं लहते ।
गौरि देखि गण छन, छीनि के बिलाई गयो, शिव द्रोही पर, दण्डपाणि दण्ड गहते ॥ ४॥
पूर्णभद्र रत्नभद्र, मुनि सुत हरिकेश, कनक कुन्डला नाम, रही तारे माता की ।
पूर्णभद्र गान करि, शिव को रिझाये जब, पायें दरशन तब, दक्ष की जमाता की ॥
मांगि सुत बरदान, भये सनतान तेहि, जेहि कहैं हरिकेश, शिव गुण गाता की ।
गौरि काशी दण्डपाणि, भये हरिकेश मुनि, आदेश रखत नित, शिव जन नाता की ॥ ५॥
दुर्ग नाम दैत्य वध, कियो गिरिराज सुता, विश्व की पहाड़ बसि, जननी भवानी हैं ।
दिवोदास कथा अब, सुनिये सुजन गण, कहौं गाई जैसो शिव, पुराण बखानी हैं ॥
मनु कुल महं एक, राजा रिपुञ्जय नाम, राज तजि काशी जाई, तप भारी ठानी हैं ।
गौरि विधि राज्य वर, दियो सनसार कर, रिपुञ्जय राज्य वर, दूई शर्त मानी हैं ॥ ६॥
सुरगण पृथ्वी पर, बास नहिं करे निज, नाग सब पाताल, बसिहैं जब जाई के ।
राज्य वर तब, अङ्गीकार करौं विधि हम, कहो रिपुञ्जय यह, बिरञ्चि बुझाई के ॥
एवमस्तु कहि तेहि, गये मुख चार घर, रिपुञ्जय कियो काशी, धाम राज आई के ।
गौरि दिवोदास नाम, भयेउ प्रसिद्ध जग, धर्मयुत राज कियो, पुण्य निपुणाई के ॥ ७॥

॥ मन्दर पहाड़ ॥

कुशद्वीप गिरि एक, मन्दर सोहात अति, तप कियो कठिन, शंकर कर सोई है ।
दियो दरशन शिव, वर मांगि गिरि तब, गिरिजा सहित वास, तेहि पर होई है ॥
विधि के बचन मानि, महादेव उमा लेई, बसे तहं बहु काल, काशी धाम खोई है ।
गौरि शिव लिंग रूप, काशी बसे गोई जेहि, अबिमुक्त नाम ताकि, कहैं सबकोई है॥ ८॥
लेई के सकल गण, मन्दर भूधर पर, घर हर आपन, बनाई तहं रहे हैं ।
काशी राज करत, धरम युत दिवोदास, देवगण पृथ्वी तजे, जस विधि कहे हैं ॥
सोम रवि तारा जल, अनल सकल अन्न, रूप धरि दिवोदास, प्रजा संग बहे हैं ।
गौरि विधि हरि सुर, मुनि वृन्द शिव पास, गयेउ मन्दर गिरि, काशी जब चहे हैं ॥ ९॥

॥ दिवोदासधर्म्मपरीक्षा ॥

शिव सुनि विनति, सकल सुरगण कर, धर्म भ्रष्ट करे भेजे, चौंसठ योगिनि को ।
रूप विकराल कोऊ, सूरति सुन्दर कोऊ, धरिके योगिनि थाकि, दिन रैन तिनि को ॥
सको नहीं दिवोदास, धरम डोलाई कछु, घाट मणिकर्णिका मे, रहे सब दिनि को ।
गौरि फिरि आई नहिं, योगिनि मन्दर गिरि, शोचि शिव तब रचे, उपाई नविनि को ॥१०॥

॥ सूर्य्यागमन कथा ॥

शिव तब रवि कहं, भेजे दिवोदास पास, विप्र रूप धरि सूर्य्य, कियेउ यतन को ।
हारि करि उपाई, लजाई रहे बारह ठाम, काशी धाम नाम तीर्थ, सुख बरधन को ॥
उत्तरार्क अरु सूर्य्य, लोलार्क आदित्य नाम, मयूषादित्य खखोलादित्य, अरुणादित्य तन को ।
बृद्धादित्य केशवादित्य, विमलादित्य कनकादित्य, यमादित्य नाम गौरि, रवि के सदन को ॥११॥
फिरि नहिं आये रबि, शिव भेजे विधि कहं, अज विप्र रूप धरि, काशी धाम गयो हैं ।
दिवोदास पूजे तेहि, विप्र हरि सर जाई, गङ्गातट दश, अश्वमेध यज्ञ कयो हैं ॥
दशाश्वमेध नाम तें, सो तीरथ प्रसिद्ध भयो, थापि लिंग शिव नाम, ब्रम्हेश्वर लयो हैं ।
गौरि बिधि लौटि जब, आये नहिं शिव पास, गिरिजा रमण मन, शोच बड़ो भयो हैं ॥ १२ ॥

॥ पैतींस गणागमन कथा ॥

शंकर भेजेउ तब, छनहिं पैंतीस गण, गणहुं न फिरि आये, बसे काशी जाई कै ।
थापि शिब लिंग सब, बिमलोदक ठाम गण, कपर्द्दीश्वर नाम रखि, ताके हर्षाई कै ॥
पिशाचमोचन नाम, तीर्थ सुखधाम भये, गये जहं रोग जात, सकल नशाई कै ।
गौरि तब उमापति, शोचि औ बिचारि बहु, गणपति कहं, काशी दिन्हेउ पठाई कै ॥१३॥

॥ गणेशागमन कथा ॥

धरि बिप्र रूप गये, ज्योतिष निपुण बनि, गणेश मोहेउ चित, सब नर नारि के ।
दिवोदास कहं पुनि, वश कियो गण पति, मानि राजा बचन, तनय त्रिपुरारि के ॥
कहैं गणपति दिन, आठम प्रवीण बिप्र, ऐहैं तव निकट, ज्योतिष अनुसारि के ।
गौरि तोहि बिप्र सोई, कहि हैं बिचारि जोई, मानि लिहो बचन, परम हितकारी के ॥ १४ ॥
गणपति काशी बसि, फिरि नहिं गये जब, शिव तब विष्णु कहं, तुरत पठाये हैं ।
गङ्गा बरुणा दुई नदी, मिलि एक संग जहं, रमा औ गरुड़ लेई, हरि तहं आये हैं ॥
आपन स्वरूप को, पूजन किये नारायण, नाम "आदिकेशव", बिख्यात जग पाये हैं ।
गौरि तीर्थ "पादोदक", परम प्रसिद्ध भये, जाके गुण बहु बिधि, सुर मुनि गाये हैं ॥ १५ ॥

॥ माधवागमन कथा ॥

केशव के छोट अंश, रूप धरि विप्र कर, रमा भई ब्राह्मणी, गरुड़ नर भये हैं ।
शिषत्र बनि हरि कर, काशी के भीतर चले, कहो बात मनोहर, नृप घर गये हैं ॥
जेहि ठाम रमा औ, गरुड़ धरे विप्र रूप, धर्मक्षेत्र पुण्यकीर्त्ति, नाम तीर्थ लये हैं ।
गौरि रमाक्षेत्र भई, गोमोक्ष प्रसिद्ध नाम, काशीधाम खेल किये, नारायण नये हैं ॥ १६

दिवोदास मानि बानि, बिप्र रूप हरि कर, राजी भये शंकर को, आवे काशीधाम को ।
सुरसरि तट जाई, थापि शिवलिङ्ग राजा, पूजन कियेउ रखि, नरेश्वर नाम को ॥
बिमान गगन तहं, आई दिवोदास चढ़े, सहित समाज तरे, फल शुभ काम को ।
गौरि नाम भूपाल श्री, दिवोदासेश्वर लिंग, तीरथ सुखद जग, भयो तेहि ठाम को ॥ १७ ॥

॥ शिव शिवागमन कथा ॥

बिष्णु बसि काशी भेजे, गरुड़ शंकर पहं, चले शिवा शिव दोऊ, अति हर्षाई के ।
आये जेहि ठाम शिव, काशी के भीतर पांच, धेनु खड़ो भयो लोक, सुरभी तें आई के ॥
शिला सुरभी कपिला, सनन्दा अरु सुम्ना नाम, आये दियो कपिला हृद, तीरथ बनाई के ।
गौरि शिवा शिव चले, काशी के भीतर संग, लेई सुर मुनि गण, भक्त समुदाई के ॥ १८ ॥

॥ जैगीषव्य मुनि कथा ॥

जैगीषव्य मुनि एक, रहे निराहार तहं, जबहिं तें शिवा, शिव गये काशी तजि के ।
बिनु शिवा शिव देखे, काशी न अहार करों, प्रण करि मुनि रहे, नित शिव भजि के ॥
शिवा शिव दरशन, दियेउ प्रथम तेहि, छूई तन दियो रूप, मनोहर सजि के ।
गौरि योग शास्त्र के, आचार्य भये जैगीषव्य, चैत्र नाम भई जग, ज्येष्ठेश्वर छजि के ॥१६॥
थापि शिव लिंग जोई, जैगीषव्य मुनि तहं, नाम जैगीषव्येश, भये जग ताके हैं ।
शिव काशीधाम तजे, बिप्रगण दण्ड लेई, खोदो मही मूल तरु, भये कुण्ड वाके हैं ॥
परम पावन थान, पुष्करणी गुण खान, काशी में प्रसिद्ध नाम, कही सब जाके हैं ।
गौरी विश्वनाथ देखी, शिव हर्षाने बहु, आनन्द मङ्गल अति, चित्त गिरिजा के हैं ॥ २० ॥

॥ रत्नेश्वर कथा ॥

विश्वकर्मा कहं दियो, आदेश शंकर तब, मन्दिर बनान लगे, सुन्दर सुहावनो ।
हिमाचल मन्दिर, बनाये एक काशी जाई, रत्न हीरा लिङ्ग थापो, चन्द्रकान्ति पावनो ॥
पाटि एक नाम गोत्र, लिखो तहं साटि दियो, फेंके बांकी रत्न हीरा, लिङ्ग दर्शावनो ।
गौरि देखि ढंडन ओ, मुण्डन कहेउ शिव, देखि जेहि शिवा शिव, मन उमगावनो ॥ २१ ॥
जानि सब हाल गिरि, जेश्वर के नाम धरि, लिंग को प्रसिद्ध कियो, उमा तहं जाई के ।
जेहि ठाम रत्न फेंके, हिमाचल लिंग भये, रत्नेश्वर नाम जग, जन सुखदाई के ॥
बिष्णु को बोलाई शिव, गयो मुक्त मण्डपहिं, कहो कथा तेहि कर, हरिहिं बुझाई के ।
गौरि मुक्त मण्डप, वृतान्त सुनु साधुजन, कहौं मति अनुसार, तेहि हम गाई के ॥ २२ ॥

॥ महानन्द विप्र कथा ॥

कहत शंकर महा, नन्द विप्र काशी एक, द्वापर जनम लेई, धार्म्मिक होई हैं ।
जनक मरण पाछे, काम वश पड़ी सोई, धरम करम सब, सहजहिं खोई हैं ॥
चक्र तीर्थ महं एक, चण्डाल भूपाल आई, करि अभिषेक दान, दिहैं तेहि सोई हैं ।
गौरि महानन्द तब, भागि हैं किलक देश, मारग भेंटि हैं चार, डाकू दुष्ट जोई हैं ॥२३॥
मारि महानन्द मुनि, काशी के प्रभाव डाकू, आई मुक्त मण्डप, छूटि हैं घोर पाप तें ।
महानन्द अस्थि राखि, तारि हैं तिनहुं पुनि, कहि एहि समाचार, महादेव आपतें ॥
गिरिजा को संग लेई, शृङ्गार मण्डप हर, गये तब विश्वनाथ, लिंग पास झापतें ।
गौरि अविमुक्त विश्व, नाथ लिंग शोभै जग, राजत शंकर जहं, पूरण कलाप तें ॥ २४ ॥
मन्दर भूधर पर, राखि लिंग शिव आये, एहि विधि काशी धाम, सुनु चित्त देई के ।
काशी दरशन किये, विश्वनाथ पूजि पुनि, जात शिवलोक नर, मुक्ति कर लेई के ॥
गुप्त रूप रहैं आठो, याम महादेव तहं, सुर मुनि योगी गण, रहैं शिव सेई के ।
गौरि मोहि चरण, कमल रति दीजे हर, वाक सिद्धि दीजे मोहि, यश एक देई के ॥ २५ ॥
शिव शिव शिव शिव, शिव शिव विश्वनाथ, शिवा शिव राजत, सतत सब ठाम को ।
शिव शिव शिव शिव, शिव शिव सुमिरत, नाशत सकल रोग, पुरवत काम को ॥
शिव शिव शिव शिव, शिव शिव विश्वनाथ. मेटत कुअङ्क भाल बसि काशी धाम को ।
गौरि शिवा शिव करि, दया जीव दान देत, लेत जग सुयश, हटाई काल वाम को ॥ २६ ॥







श्री गणेशाय नमः ।



श्री गौरी शङ्कराभ्यान्नमः ।



श्री सरस्वत्यै नमः ।

अथगौरीशंकरायण

॥ अथ सातवां खण्ड ॥

अथ गौरीवरावतार

प्रगट भयेउ जब, विष्णु तें बिरञ्चि आदि, शिव गये निकट, तवहिं भगवान के ।
बोले वरदान लेहु, कहे नारायण प्रभु, लिजिये औतार रूप, सगुण निधान के ॥
बिधि भौंह प्रगटे, तुरत महादेव तव, राजत कैलास गिरि, सुखद जहान के ।
गौरि "रुद्र१" नाम शिव, प्रथम आपन धरे, कियेउ चरित जग, बिविध बिधान के ॥ १ ॥
जब श्वेतलोहित, उन्नैस कल्प सृष्टि भये, शिव धरि बालक, स्वरूप हर पास को ।
आये लेई चार शिष्य, नन्दन सनन्दन उप, नन्दन औ विश्वनन्द, नाम सुखराश को ॥
योग शास्त्र प्रगट, कियेउ जग महं शिष्य, कारण भयेउ भव, भ्रम तम नाश को ।
गौरि अवतार शिव, बालक स्वरूप "श्वेत२, लोहित" के नाम भये, जगत प्रकाश को ॥ २ ॥
रक्त कल्प बीसम, अवतार "बामदेव३ नाम", बालक स्वरूप नैन, गात अति लाल हैं ।
भूषण जेवर लाल, पहिनि कपाल शिव, आये विधि पास जब, सृष्टि रचे काल हैं ॥
बिरज बिबाहु औ, बिशोक विश्वभावन को, प्रगट कियेउ शिव, चार लाल बाल हैं ।
गौरि बिधि शक्ति पाई, सृष्टि के रचन कग, चारो शिष्य योग शास्त्र, शिक्षक विशाल हैं ॥ ३ ॥
जब पीतवास कल्प, एकैसम आये विधि, ध्यान कियो शिव कर, सृष्टि रचे काल मे ।
बालक स्वरूप शिव, संग चार शिष्य लेई, नाम "तत्पुरुष४", प्रगटेउ तेहि हाल मे ॥
पीत रङ्ग बसन, बदन आभरण धरे, योग शास्त्र उपदेश, कियो भव जाल मे ।
गौरि काम क्रोध लोभ, मोह मद भ्रम असि, जात खसि टूटि सब, पड़े योग ढाल मे ॥ ४ ॥
बरष हजार पीत, बास कल्प बीते जब, परिव्रत कल्प तब, सृष्टि आई गयो हैं ।
बिधि ध्यान कियो शिव, बालक बसन काल, उपबीत मुकुट, भसम काल भयो हैं ॥
अघोर स्वरूप शिव, धरेउ "अघोर५" नाम, चार शिष्य संग विधि, दरशन दयो हैं ।

गौरि योग अघोर, प्रगट भये जग तव, सुखद धनद मन्त्र, शुभदाई भयो हैं ॥ ५॥
विश्वरूप तेस कल्प, सृष्टि वुद्धि वर्द्धन को, ध्यान कियो विधि, विश्व रूपा माई आई है
"ईशान६" के नाम धरि, शिव चार शिष्य लेई, श्वेत रंग वदन, भूषन दरशाई है
जटी मुण्डो शिखण्डी, औ अर्द्ध मुण्डो नाम चार, शिष्य के विख्यात भये, बड़ो सुखदाई है
गौरि सृष्टि वुद्धि वर, दान दियो महादेव, योग शास्त्र चारो शिष्य, सबहिं सिखाई हैं ॥६॥
" सर्ब्ब७" रूप धरि शिव, मही भार लिये रहैं, "भव८" रूप धरि जल, भीतर को रहते
"रुद्र६" रूप धरि जग, अनल प्रकाश करैं, " उग्ररूप१०" धरि जीव, जीतो प्राण लहते
"पशुपति११" रूप धरि, चेतन्न सुखद जग, "ईशान१२" स्वरूप सूर्य्य, ज्योति सृष्टि गहते
"महादेव१३"रूपधरि, सोमहिं विराजैं शिव, "भीम१४" रूप नभ गौरी, अष्ट मूर्त्ति कहते ॥७॥
विधि जब सृष्टि कर, वृद्धि नहिं देखे तब, मौन साधि तप कियो, नभ वाणी भयो हैं
सृष्टि उत्पन्न करु, मैथुनी विधाता अब, सुनि विधि तप शिव, शंकर के कयो हैं
अर्द्ध नारी नर रूप, "अर्द्धाङ्गी१५" प्रगटे शिव, नर नारी भिन्न शिव, शिवा दरशायो हैं
गौरि शिवा शक्ति भींह, प्रगटि मैथुनी सृष्टि, हैतु बरदान विधि, मनमानो दयो हैं ॥ ८॥
वैवस्वत मनु जब, भयेउ वाराह कल्प, प्रतियुग द्वापर मे, व्यास अवतरते
श्रुति शाखा पुराण, बनाये संसार हित, तेहु पे अचेत मूढ़, जीव भ्रम करते
व्यास के विनति सुनि, ग्रन्थ को प्रचार करे, शिव संसार हित, रूप आप धरते
गौरि सोई अवतार, सुनिये सुजन गण, सुनि शिव महिमा, विपद नर हरते ॥ ६॥
द्वापर पहिले, मन्वन्तर सहं विधि भये, व्यास बेद चार भाग, करि प्रगटाये हैं
ऋक यजुः साम अरु, अथर्वण वेद चार, शाखा को वढ़ाई पुनि, पुराण बनाये हैं
वीतिगयो द्वापर, प्रसिद्ध नहिं व्यास मत, पुराण कछुक भये, कलियुग आये हैं
गौरि विधि व्यास रूप, शिव कर ध्यान कियो, कीजिये सहाई प्रभु, अधिक मनाये हैं ॥१०॥
हिम गिरि भाग एक, छागला भूधर रहै, विप्र गृह शिव अव, तार जाई लियो हैं
"श्वेत१६" नाम शिव कर, भयेउ विख्यात जग, प्रगट अगम योग, हर करि दियो हैं
चार शिष्य श्वेत अरु, श्वेत शिष्य श्वेताश्व, नाम श्वेत लोहित, विख्यात, जग कियो हैं
गौरि शिव विधि पर, ढ़रि करि अवतरे, महादेव महिमा, वसत व्यास हियो हैं ॥ ११॥
सत्यनाम युग दूजो, द्वापर मे व्यास भये, प्रजापति अवतार, पुराण बनाये हैं
बेद भाग कियो शाखा, निष्फल भयो सब, व्यास मत केहु कर, चित्त नहीं भाये हैं
व्यास जी दुखित चित्त, ध्यान कियो शिव कर, शिव अवतार नाम, "सुतार१७" सुहाये हैं
गौरि शिष्य चार सत्य, रूप केतुमान ऋचिक, दुन्दुभी सहारे व्यास, मत को फैलाये हैं ॥१२॥

द्वापर तीसर मर्हं, शुक्र अवतरे व्यास, शिव 'मदमन"१८ नाम, धरि अवतरे हैं ।
बिशोक विकेश व्यास, अरु सुप्रकाश शिष्य, योगशास्त्र पुराण, विख्यात जग करे हैं ॥
द्वापर चौथम, बृहस्पति अवतरे व्यास, शिव अवतरे नाम, "सुहोत्र"१६ कै धरे हैं ।
सुमुख दुर्मुख दुर, मद दूर्त्तिक्रम गौरि, व्यास मत योग युत, जग विसतरे हैं ॥ १३ ॥
द्वापर पांचम मर्हं, रवि अवतरे व्यास, शिवनाम "कनक"२०, औतार जग भाये हैं ।
सनक सनातन औ, सनन्दन सनत्कुमार, चार शिष्य व्यास मत, जग समुझाये हैं ॥
प्रभु बिभु निर्म्मम, निरहंकृत कोउ नाम, तेहि चार शिष्य कर, बरणि बताये हैं ।
गौरि सूर्य्यरूप व्यास, आस रखि हर कर, वेद शास्त्र पुराण, जगत प्रगटाये हैं ॥ १४ ॥
द्वापरछठम मनु, लियो अवतार व्यास, नाम राखि महत, पुराण कौं बनाये हैं ।
शिव अवतरे नाम, आपन "लोकाक्ष२१" रखि, सुदामः बिरज शंख, अम्बुज प्रगटाये हैं ॥
द्वापर सातम शत, क्रतु अवतरे व्यास, शिव अवतरे नाम, "जैगीषव्य२२" पाये हैं ।
गौरि सारस्वत मेघ, नाद पराहन अरु, सुवाहन चार शिष्य, तहं उपजाये हैं ॥ १५ ॥
द्वापर आठम मर्हं, बशिष्ठ अवतरे व्यास, शिव कर नाम, "दधिवाहन२३" सुहाये हैं ।
कपिल असुरि पंच, शिखा शालबल पुनि, चार शिष्य हर संग, व्यास गुण गाये हैं ॥
द्वापर नवम, सारस्वत अवतरे व्यास, शिव अवतरे नाम, "ऋषभ२४" कै पाये हैं ।
गौरि परासर गर्ग, भार्गव अङ्गिरस चार, शिष्य शिव बनौ व्यास, मत दृढ़ लाये हैं ॥ १६ ॥
द्वापर दशम ब्यास, नाम त्रिधारा भये, शिव अवतार नाम, 'भृगु"२५ मुनि भये हैं ।
निरामृत गुप्तशृंग, तपोधन जगबोधन, शिष्य चार ब्यास मत्त, सिद्ध करि दये हैं ॥
ग्यारह द्वापर मर्हं, त्रिब्रत भये ब्यास, शिव "तप"२६ नाम धरि, अवतार लये हैं ।
लम्बोदर लम्बकेश, लम्बाक्ष प्रलम्ब चार, शिष्य शिव कर गौरि, ब्यास मत धये हैं ॥ १७ ॥
द्वापर बारह मर्हं, भारद्वाज भये ब्यास, शिव अवतरे नाम, "अत्री"२७ कर लेई कै ।
सरोज समबुद्धि साधु, सर्ब्ब चार पुत्र तार, कियेउ प्रचार ब्यास, मत ध्यान देई कै ॥
द्वापर तेरहम धर्म्म, नारायण भये ब्यास, "बालि"२८ नाम शिव भये, बाल खिल्य जेई कै ।
सुधामा बरजा काश्यप, बशिष्ठ चार शिष्य भये, गौरि ब्यास मत, सन्सार दियो छेई कै ॥१८॥
द्वापर चौदह रच्छ, बिभ्रि अवतरे ब्यास, शिव अवतरे नाम, "गौतम"२६ कै धरि कै ।
अत्रि देव सत अरु, अबल सहिष्णु चार, सुत ब्यास मत को, प्रचार दियो करि कै
द्वापर पन्द्रह त्रह्म, रुणि अवतरे ब्यास, "वेदसर"३० नाम शिव, धरे अवतरि कै ।
गौरि गुण गुणबाहु, कुनेत्र कुशरीर चार, शिष्य व्यास मत कहे, सन्सार भरि कै ॥ १६ ॥

द्वापर सोलह, धनञ्जय अवतरे व्यास, नाम "गोकर्ण"३१ शिव, कर तहं पाई है
कश्यप च्यवन उशना, बृहस्पति सुत चार, कियेउ प्रचार मत, व्यास जग छाई है
द्वापर सतरह, कृतञ्जय अवतरे व्यास, "महालयगुफावासी"३२, नाम शिव धाई है
गौरि वामदेव महा, योग महा बल अरु, उतथ्य तनय चार, व्यास मत गाई है ॥ २०
द्वापर अठारह महं, ऋतञ्जय भये व्यास, शिव अवतार नाम, "शिखंडी"३३ सुहाई कै
वाचश्रवा ऋचिक, श्यावाश्व सजनीश्वर चार, सुत व्यास मत दियो, अधिक फैलाई कै
द्वापर उन्नीस महं, भारद्वाज भये व्यास, शिव अवतरे नाम, "जटामाली"३४ पाई कै
रव्यजुष्म कौशल्य, लोकाक्षि गौरि चार सुत, व्यास मत दियो सब, कहं समुभाई कै ॥ २१
द्वापर बीसम महं, गौतम भयेउ व्यास, शिव अवतरे नाम, "अट्टहास"३५ लेई कै
सिमन्त बरबरि बुध, कुगबन्धु किकंधरा, चार शिष्य व्यास मत, कहे शिव सेई कै
द्वापर एकैस महं, व्यास शिव ध्यान कियो, शिव अवतरे नाम, "दारुक" ३६ रखेई कै
गौरि दलभायन, गौतम पुत्र केतुमान, सुत व्यास मत गाये, जग मन देई कै ॥ २२
बाईसम द्वापर महं, शुष्मायन भये व्यास, शिव नाम "लांगलि"३७ के, धरि अवतरे हैं
मधुपुंग श्वेतगुप्त, कान्त औ भक्लि चार, सुत व्यास मतहिं, विख्यात जग करे हैं
द्वापर तेइस, तृणबिन्दु अवतरे व्यास, शिव अवतरे नाम, "श्वेत"३८ निज धरे हैं
औषधि देवल कव्य, बृहदल चार सुत, गौरि व्यास मत कहो, भ्रम नर हरे हैं ॥ २३
द्वापर चौबीस महं, वाल्मीकि भये व्यास, शिव अवतरे "शूलि"३९, नाम शुभदाई है
शालिहोत्रि युवनाश्व, अहिर्बुध्न सहजहोत्र, चारि सुत व्यास मत, राम गुण गाई है
द्वापर पचीस महं, बालमीक भये व्यास, शिव अवतार नाम, "दण्डी मुण्डी"४० पाई है
कुम्भकर्ण कुष्माण्ड, प्रवाहक दहुल चार, सुत गौरि व्यास मत, सकल बताई है ॥ २४
द्वापर छब्बीस महं, पराशर भये व्यास, शिव अवतार नाम, "सहिष्णु"४१ सुहाई है
विद्युत उलूक अम्ब, लायन सम्बल चार, शिष्य व्यास मत तब, जगत फैलाई है
द्वापर सताईस महं, जातूकर्ण भये व्यास, शिव अवतरे नाम, "सौम्यकर्ण"४२ पाई है
सुमुनि कुमार अच, पाद औ उलूक वत्स, नाम चार शिष्य गौरि, व्यास मत गाई है ॥ २५
द्वापर अठाईस महं, विष्णु अवतरे व्यास, पराशर सुत नाम, द्वैपायन पाये हैं
व्यास के कीरति सुनि, "लाकुलीश"४३ नाम धरि, सिद्ध क्षेत्र महं शिव, सब को जिलाये हैं
गर्ग मित्र कुन्य अरु, उसिक भयेउ चार, शिष्य शिव कर व्यास, मत प्रगटाये हैं
गौरि शिव अवतार, व्यास हित भये जग, नारद शारद विधि, शेष हरि गाये हैं ॥ २६

॥ नन्दीकेश्वर ४४ ॥

शिवभक्त बड़ो एक, भयेउ शिलाद मुनि, भक्ति के प्रभाव तें, ऐश्वर्य्यवान बड़ो हैं ।
पुत्रहीन मुनि मन, शोक रहे दिन रात, पुत्र हित इन्द्र के, कियेउ तप बड़ो हैं ॥
इन्द्र से मांगेउ वर, दरशन पाये मुनि, देहो सुत ऐसो जोई, गर्भ नहीं पड़ो हैं ।
गौरि सुत अमर, करिये शचीवर मेरो, मुनि सकुचाई बड़ो, इन्द्र देव खड़ो हैं ॥ २७ ॥
इन्द्र उपदेश मुनि, शिवको कियेउ तप, पाई शिव दरशन, वर मुनि पायो हैं ।
रहेउ करत यज्ञ, शिलाद मुदित मन, शिव यज्ञ भूमि निज, रूप प्रगटायो हैं ॥
सुन्दर स्वरूप तीन, नैन चार भुज शोभैं, शूल टंक गदा असि, लेई दरशायो हैं ।
गौरि जटा मुकुट, कुण्डल दोऊ कान शोभैं, मेघवत वालक, अनूप देखलायो हैं ॥ २८ ॥
आनन्दित चित्त मुनि, नाम "नन्दी"४४ राखि तार, संग लेई चले मुनि, आपन भवन को ।
मारग वदलि रूप, धरे नर तन वपु, नन्दी देखि अचरज, लगि मुनि मन को ॥
माया वश भूलि गये, वालक लायेउ घर, पोसे तेहि सादर, शिलाद सुतधन को ।
गौरि एक दिन मित्रा, वरुण शिलाद मुनि, पहं गये देखि भाल, वोलेउ वचन को ॥ २९ ॥
दशम वरस आज, नन्दी कर वीति गये, आयु अति न्यून अब, नन्दी कर रही है ।
मुनि शोच कियो अति, शिलाद विषाद उर, नन्दी समुझाई वहु, पिता सन कही है ।
जनक आयसु लेई, गयेउ तुरङ्ग नदी, तट वैठि रुद्रजप, करि वर चही है ।
गौरि शिव गिरिजा, दरश देई कूए ताहि, भयो दश भुज तीन, नैन रूप लही है ॥ ३० ॥
शिव कहे नन्दी सन, आप अवतार मेरो, भेद जनि कछु करू, कही कर धरे हैं ।
शिवजटा ऊपर तें, पांच स्रोत जल कर, पांच दिशि वहि गये, शुभ गुण भरे हैं ॥
जटोदक जटक, त्रिस्रोता वृषध्वनि पुनि, स्वर्णोदक नदी तीर्थ, शरमद परे हैं ।
गौरि शिवलिङ्ग नन्दी, थापित प्रसिद्ध जग, भुवनेश्वर नाम मन, काम सिद्धि करे हैं ॥ ३१ ॥
शिव अनुमति पाई, मरुत दुहिता निज, सुयशा सुन्दरी साथ, नन्दीश्वर व्याहे हैं ।
करि अभिषिक गण, सकल वोलाई हर, गण अधिपति करि, नन्दी पै निगाहे हैं ॥
सुयशा सहित नन्दी, सिंहासन राखे शिव, दियेउ भूषण माला, जैसो मन चाहे हैं ।
गौरि रमा मुकुट, रमेश दियो ध्वजा निज, उमा दियो हार नन्दी, प्रण को निवाहे हैं ॥ ३२ ॥
एक दिन सुर मुनि, वैठि करि एक ठाम, कियेउ विचार सृष्टि, कर प्रभु कौन हैं ।
एक मत भई नहिं, गये मेरु गिरि पर, विधि से पूछत कहु, पूर्ण ब्रह्म जौन हैं ॥
विधि कहे पूर्ण ब्रह्म, हमहिं सतत काल, धाता अज आदि नाम, धारी ब्रह्म तौन हैं ।

गौरि तेहि काल विष्णु, प्रगट भयेउ तहं, कहत हमहिं ब्रह्म, सुनि विधि मौन हैं ॥ ३३ ॥
विधि विष्णु दोउ मिलि, करैं बकवाद बहु, निज निज गुण गाई, कहत बड़ाई कै ।
वेद चार प्रणव, सहित समुझाये दोउ, शिव परब्रह्म कहे, शंकर दोहाई कै ॥
सुनि विधि विष्णु हंसि, निन्दा कियो हर कर, ज्योति एक प्रगट, भयेउ तहं आई कै ।
गौरि तेज मही नभ, सकल प्रकाश कियो, तेहितें निकसि शिव, दियो दरशाई कै ॥ ३४ ॥
नीलवर्ण नैन तीन, भाल शशि शीर्ष अति, उरग भूषन हर, वदन लगाये हैं ।
पांचम आनन तें, बिरञ्चि देखि कहे तेहि, तुमतो हमार सुत, रुद्र कहलाये हैं ॥
भौंह तें प्रगट तोहि, कियो हम सृष्टि काल, शरण गहहु मेरो, यदि तोहि भावै है ।
गौरि सुनि शिव एक, पुरुष प्रगट कियो, आपन स्वरूप इव, सुन्दर सुहाये हैं ॥ ३५ ॥
काल इव भयङ्कर, नाम राखे काल राज, "भैरव"४५ अघभच्चण, सम्मुख शिव आईकै ।
कहे महाराज मोहि, आयसु दीजिय अब, करौं तब काज आज, कालहु हराई है ॥
बोले शिव विधि कहं, दंड देहु विधि कर, काशी जाई, वास करु, नित हरषाई कै ।
गौरि पापचारी को, विचारि दंड देई सदा, कोतवाल काशी बनि, रहिये दृढ़ाई कै ॥ ३६ ॥
कहि एहि शिव लियो, तुरत छिपाई रूप, आपन भैरव विधि, पांचम आनन को ।
गहो वाम कर नख, काटि लियो विधि कांपि, अज माथ भैरव के, हाथ सोई छन को ॥
पड़ो रहो छूटत, छोड़ाये नहिं कछु तहं, लगि ब्रह्महत्या शिव, कौतुकसदन को ।
गौरि माथ हाथ लेई, भैरव भ्रमण कियो, हत्या नारी रूप पाछे, छोड़ति न तन को ॥ ३७ ॥
लोक तिहुं भ्रमण, कियेउ विधि माथ लेई, भैरव तीरथ कियो, पाप नहीं छूटो हैं ।
आये काशी निकट, बिलाई गई हत्या नारी, गिरो विधि माथ मही, ब्रह्महत्या टूटी हैं ॥
तीरथ प्रसिद्ध नाम, कपालमोचन भये, भैरव बिराजे तहं, शिव माया बूटी है ।
गौरि तहं भैरव, चतुर्दशी रवि वार, अष्टमी पूजन किये, पाप माथ फूटो है ॥ ३८ ॥
भैरव अवतार मार्ग, शीर्ष कृष्ण अष्टमी को, भयेउ कहेउ शिव, पुराण बखानि कै ।
काशी जाई भैरव, पूजन पाप दूर होत, अन्त बसै नर शिव, लोक सुख खानि कै ॥
महिमा बिशाल शिव, विधि हारि देखि करि, भयेउ लज्जित बड़ो, ब्रह्म शिव मानि कै ।
गौरि निशि दिन शिव, जपत विधाता भलो, नारायण शिव रटे, लीला पहिचानि कै ॥ ३९ ॥
सुनि सती दाह शिव, कोप करि जटा एक, शिला पर मारि जटा, दुई फांक भयो हैं ।
प्रथम खण्ड जटा तें, प्रगट भये "बीरभद्र"४६, चार भुज तीन नैन, बल मदमयो हैं ॥
दूसर तें महाली, निकली औसर तेहि, शिव के आयसु मानि, दक्ष यज्ञ गयो हैं ।

सुर मुनि दुष्ट जन, गण को विविध विधि, उपद्रव करि गौरि, यज्ञ नष्ट कयो हैं ॥ ४० ॥
दिक्पाल शचीपति, अनल वरुण यम, पवन कुवेर सोम, वसु हारि भागे हैं ।
अजि दक्ष बिनति, श्रवण करि रमापति, युद्ध कियो वहु बीर, भद्र काको आगे हैं ॥
हारे हरि भागि गये, हरिणो स्वरूप सख, धरि तेहि शिर काटि, होम कुण्ड पागे हैं ।
गौरि दक्षशिर को, समोरि डारि होम कुण्ड, देखि दशा अचरज, सव कहं लागे हैं ॥४१॥
विधि हरि सुरगण, शिव को मनाई तव, लेई गयो यज्ञभूमि, शिव तहं गये हैं ।
दक्ष तन बकरा के, शिर को मिलाई दियो, तुरत जिवाई शिव, सुखो अति भये हैं ॥
विरनि बिनति सुनि, दक्ष यज्ञ पूरो कियो, वीरभद्र अवतार, शिव ऐसो लये हैं ।
गौरि वीरभद्र के, चरित्र दुख नाश करै, लहै मनकाम जो, श्रवण चित दये हैं ॥ ४२ ॥

॥ शरभ ४७ ॥

दिति कहं दुई सुत, कनकशिपु कनकाक्ष, सुर नर मुनि जीति, राज जग कियो हैं ।
धर्म सब लोप भये, पाप जग फैलि गये, उपद्रव नानाविधि, दैत्यवल चियो हैं ॥
धरिकै बाराह रूप, कनकाक्ष मारे हरि, चार सुत दानव, कनकशिपु दियो हैं ।
गौरि वड़ा सुत, प्रहलाद हरि भक्त भये, जेहि विष्णु पार्षद, आपन करि लियो हैं ॥ ४३ ॥
विष्णु सन डाह नित, रखत कनकशिपु, एकदिन वालक, प्रहलाद को वोलाये हैं ।
कहै सुत पढ़ि को, सुनाओ तनि पाठ मोहि, तोहि गुरुदेव आज, जोई सिखलाये हैं ॥
सुनि पितु बचन, मगन मन होई करि, राम राम राम राम,, प्रह्लाद गाये हैं ।
गौरि सुनि राम नाम, कोपिउ कनकशिपु, देखि सुत तन मन, घन खिसलाये हैं ॥ ४४ ॥
वोध दियो बहुविधि, सुनेई न प्रह्लाद, जपत सतत तहं, एक राम नाम को ।
गुरु को डपटि कहै, बोलाई कनकशिपु, गुरु तू गंवार वडो, नहि कोऊ काम को ॥
जेहि मोहि वेर रहै, तेहि सुत स्वामी कहै, भक्ति निशि दिन चहै, जपि नाम राम को ।
गौरि यातुधान ओर, देखि करि क्रोध घोर, कहत कनकशिपु, आपन गुलाम को ॥ ४५ ॥
गहि एहि निशिचर, पावकहिं डारि देहो, कहो तजै राम नाम, जप मूढ़ मन तें ।
पकरि धकरि करि, लेई गयो प्रहलाद, राक्षस अनेक गण, घेरि कै कानन तें ॥
बारेउ पावक घूर, कठिन प्रचण्ड क्रूर, कहेउ सुनहु प्रह्लाद, एक छन तें ।
गौरि राम नाम जप, तजिये प्रहलाद अब, नहिं तो जारिहौं तोहि, पिता के वचन तें ॥४६॥
राम नाम प्राण मेरो, हीय मर्ह करे डेरो, कहत प्रहलाद जारि, सकिहौ न मोहो रे ।
सुनि अति नैन लाल, राक्षस को सेन काल, डारे तेहि अनल, शीतल सम सोहो रे ॥

कहेउ पुकारि करि, सुनहु राक्षस झारि, राम नाम गुण मैं, देखाऔं अब तोहीं रे ।
गौरि जाई पितु सन, कहहु जो एहि छन, तकि मोहि करि हैं, उपाई रहै जीहीं रे ॥ ४७ ॥
क्रोध उर तमकि, झमकि कै कनकशिपु, गयेउ देखेउ सुत, अनल पै खाड़ो है ।
राम राम रटत, फिरत चहुँदिशि घूमि, कहत सुनहु तात, राम जो उबारो हैं ॥
काहि एहि बाहर, कुदेउ प्रह्लाद तब, कर गिरि लेई पितु, तेहि पर डारो हैं ।
गौरि तन लगतहीं, टूटि शतखण्ड गिरि, दुन्दुभी बजाई सुर, रामहिं उचारो है ॥ ४८ ॥
गही पद सुत कर, पटना शिखर पर, राखि तेहि देई धक्का, उदधि खसायो हैं ।
तनिको न जब डूब, भयेउ प्रह्लाद छूब, मन निधि अवनि, अजिर सी सुहायो हैं ॥
गौरि राम नाम की, प्रताप आप बिहरतु, बाप छनगतु मन, परम छकायो हैं ।
राम नाम सुखदाई, पिता के निकट जाई, प्रह्लाद राम नाम, महिमा देखायो हैं ॥ ४९ ॥
राम नाम अरि कंस, जगत परम डंस, निशिचर अवतंस, सदन पधारो हैं ।
प्रह्लाद निशिचर, गण गहि बेगि घर, लाई पितु ढिप धरि, नयन उघारो हैं ॥
कहै सुनो सुत मेरो, काल चढ़ी शीश तेरो, तजो राम नाम, न तो एही छन मारो हैं ।
गौरि हँसी सुत कहै, होई हैं जो राम चहै, राम नाम जप मोहि, किये मतवारो हैं ॥ ५० ॥
जननि पकरि हाथ, सुत लेई गई साथ, कर धरि निज माथ, कहै पछिताई रे ।
राम नाम परिहरि, जनक मुदित करि, राज करो मन भरि, तजि कपटाई रे ॥
नाहिं तो बेरथ तव, निकसि हैं प्राण अब, हित जानि बात सब, कहीं समुझाई रे ।
गौरि कहै प्रह्लाद, राम के गुणानुबाद, पावक शीतल गिरि, फूल बनि जाई रे ॥ ५१ ॥
सागर अवनि सम, लागि है जननि मम, गम उर तजो मोहि, राम रखवारो हैं ।
सुनि अस कंस करि, कोप गाड़ि चार खंभ, कर पद सुत बांधि, असि ले पुकारो हैं ॥
सुत उर आसन, मारन तेहि जब चहै, राम नरसिंह खंभ, तुरत बिदारो हैं ।
गौरि असि खसि नर, हरि खोलि जन फांस, कंस कर उदर, विकट नख फारो हैं ॥ ५२ ॥
वध करि दैत्य हरि, कोप को बढ़ाये अति, रूप बिकराल धरे, अधिक भयावनो ।
प्रलय जनु करैं चहैं, सहस चरण लेई, सहस नयन लाल, परम डरावनो ॥
तीनो अग्नि रबि तेज, शेष सेज देखलाई, नाशन चहत सृष्टि; बिधि के बनावनो ।
गौरि सुर मुनि वृन्द, धाता लेई शिव पहं, कहै जाई सब हाल, सुख बिलखावनो ॥ ५३ ॥
शिव सुनि बीरभद्र, डाकेउ तुरत तहं, भेजे तेहि नरहरि, पहं समझान को ।
बीरभद्र जाई कै, बुझाई बहु विधि हरि, भयंकर रूप प्रलय, काल के समान को ॥

दोऊ वहुभांति बक ; बाद कियो परस्पर , नर हरि हठ कियो , नाशन जहान को ।
गौरि तेहि काल शिव , ज्योति तें प्रगट भये, अनदेखि अचानक , रूप भयखान को ॥ ५४ ॥
आधा रूप सिंह कर , पंख दुई चोंच लाल , शोभत हजार हाथ , जटा जूट शीश हैं ।
भालहिं बिराजै सीस , दशन डशनहार , नख बडा वज्र सम , जमात गिरीश हैं ॥
कंठ एक पद आठ , नैन लाल रवि सम , केवल हुंकार शब्द , करत गौरीश हैं ।
ओंठ काटैं दांत से , स्वरूप धरे भयंकर , गौरि शिव दर्शन , पायेउ ओश हैं ॥ ५५ ॥
युद्ध करि बहु विधि , गही नरहरि कहं , पूछहिं पकरि ताहि , गये नभ ओर को ।
भूतल पटकि पुनि , गयेउ गगन उड़ि , पुनि मही आई रहे , तोड़ि मद डोर को ॥
नरहरि शिर काटि , माला कै सुमेरु शिव , आपन बनाये चर्म, ओढि तन कोर को ।
गौरि नाम शरभ , भयेउ गौरि दर कर , अवतार धरे हरे , हरि गर्व्व घोर को ॥ ५६ ॥

॥ यक्षेश्वर ॥

सागर मथन काल , सुरासुर युद्ध कियो , सुर गण जीति लियो , असुर के दल को ।
बैठि एक ठाम विधि , हरि सुरपति आदि , देव गण सहरात , निज निज बल को
धरि यक्ष रूप हर , गये मद नाशन को , तृण एक फेंकि कहे , शंकर सकल को ।
गौरि रहि तृण दुई , खंड करि सको यदि. जानिहौं बलिष्ठ तेहि , हम सोई पल को ॥ ५७ ॥
सकै नाहिं तृण तोडि , कोउ सुर इन्द्र सहं , चरित्र विचित्र लखि , अमर लजाये हैं ।
भई नभ बानि जानि , मरम सकल सुर , "यक्षेश्वर" ४८ शिवपद , गहे सब धाये हैं ॥
शिव कहं सब तें , अधिक माने सुर गण , देव मद महादेव , सहज नशाये हैं ।
गौरि यक्ष अवतार , बलशाली भयो शिव , सुखद अनद गुण , धनद सुहाये हैं ॥ ५८ ॥
दश महाकाल शिव , औतार सुनिये अब , "महाकाल" ४९ प्रथम , औ शक्ति महाकाली है ।
दूजो "तार" ५० अवतार, शिव शक्ति तारा भई, तीजो शिव अवतार, कर नाम "बालौ ५१ है ॥
शक्ति भुवनेश्वरी , चौथस "त्रिपुरेश" ५२ शिव , शक्ति नाम विद्या भई , परम कुशाली हैं ।
गौरि भयो पांचम , "भैरव" ५३ अवतार शिव , शक्ति भई भैरवी जो , रूप विकराली है ॥ ५९ ॥
छठम भयेउ शिव , "छिन्नमस्त" ५४ अवतार , शक्ति छिन्न मस्ता नाम , भई महामाया को ।
"धुमावत" ५५ अवतार, सातम भयेउ शिव , शक्ति भई धुमावती , रूप धूम काया को ॥
"बगलामुख" ५६ नाम भये, आठम औतार शिव, शक्ति नाम बगलामुखी, भयो गिरिजाया को ।
नवम "मातंग" ५७ गौरी, मातंगी सहित भये, दशम "कमल" ५८ शिव, कमला शक्ति छाया को ॥ ६० ॥

॥ एकादश रुद्र ५९-६९ ॥

एक दिन देवासुर, युद्ध भयो बड़ो भारो, हारि गये सुर गण, भागे तजि रण को ।
दैत्य उत्पात सब, बरणि सुनाये सुर, जाई गहे देव गण, कश्यप शरण को ।
कश्यप कठिन तप, कियो महादेव कर, देखि हर बोले मुनि, मधुर बचन को ।
गौरि सुत मेरा बनि, सुर दुख दूर करु, एवमस्तु कही शिव, गयेउ भवन को ॥ ६१ ॥
कश्यप की नारी नाम, सुरभी को रहो गर्भ, समय पूरो भये, एकादश सुत जनी है ।
"कपाली पिंगल भीम, विलोहित शस्त्रभृत, अभय अजपाद शंभु, अहिर्बुध्न" भनी है ॥
"विरूपाक्ष६८ "भव ६९ नाम, एकादश रुद्र कर, लेई अवतार दल, दानव को हनो है ।
गौरि सुर राज पाये, संकट नशाये सब, एकादश रुद्रबल, लीला अति घनी है ॥ ६२ ॥

॥ दुर्वासा ॥

सुतहित अत्रि मुनि, तप कियो बिन्ध्यातट, शिव विधि हरि तेहि, दरशन दियो हैं ।
सुत बरदान बहु, बिनय करि अत्रि मुनि, कहीं अभिलाख मन, मांगो तहं लियो हैं ॥
विधि अंश विधु भये, हरि अंश दत्तात्रेय, शिव अंश दुर्वासा, लीला बहु कियो हैं ।
गौरी दुर्वासा के, चरित सुनु साधु गण, सुनि शिव महातम, सुख नित हियो हैं ॥ ६३ ॥
अम्बरीष राजा विष्णु, भक्त एकादशी व्रत, राखि करि द्वादशी मे, पारन करत रहे ।
एक दिन दुर्वासा, गये नृप निकटहीं, जब अम्बरीष व्रत, पारन करन चहे ॥
भोजन दीजिये मोहि, भूखो महाराज हम, सुनि मुनि बचन, भोजन करै तेहि कहे ।
गौरि शिष्य सहित, तुरत दुर्वासा मुनि, गये नदी तीर, जहं अभिषेक करि रहे ॥ ६४ ॥
द्वादशी बीतन जब, रहो कछुकाल नृप, शोच कियो दुर्वासा, मुनि नहिं आये हैं ।
विप्र अनुमति पाई, पारन कियेउ व्रत, सुनि दुर्वासा ऋषि, घोर खिसलाये हैं ॥
चले नृप पास कोप, अनल प्रकाश करि, हरिचक्र नाशै मुनि, वेगि तब धाये हैं ।
गौरि तिहुंलोक गये, भय बश धाई मुनि, अन्त अम्बरीष नृप, मुनिहिं बचाये हैं ॥ ६५ ॥
भोजन कियेउ मुनि, आशिष दियेउ अति, माया बल आपन, कहेउ समुझाई कैं ।
दूसर चरित, दुर्वासा मुनि कर साधो, सुनिय मुदित मन, कहौं तेहि गाई कैं ॥
विधि एकबार मृत्यु, डाकि भेजे राम पास, कहेउ सम्वाद राजा, निज लोक आई कैं ।
गौरि मृत्यु मुनि रुप, गये राम निकटहिं, मिले मुनि सन राम, उठि हर्षाई कैं ॥ ६६ ॥
कहत सुमन दश, रघ राम कहं मुनि, गुप्त बात तोहि हम, कहबे को आये हैं ।
एकान्त श्रवण करु, तोहि जो आलाप काल, आवे तजि देहो, मुनि राम बाक पाये हैं ॥

लखण को द्वार राखि, कही समुझाई राम, आलाप समय जनि, केहु को पठाये है ।
गौरि मुनि आलाप, समय यदि आवे कोई, तजि हौं तुरत तेहि, आयसु सुनाये हैं ॥ ६७ ॥
कहत सम्वाद मुनि, काल हम विप्र भेष, विधि के पठाये आये, तिहरो निकट को ।
चलु विष्णु लोक अब, अवधि पुरण भये, तेहिकाल दुर्वासा, आये तहं झट को ॥
लखन को कहे मोहि, राम पास जाने देहु, सुनि शोच कियो शेष, लखिउ कपट को ।
गौरि राम पहं जाई, लखन खबर दियो, काल दुर्वासा गुप्त, भयेउ निखट को ॥ ६८ ॥
राम समाचार सब, कहे लछुमन कहं, राम प्रण अनुसार, सरजू के तीर पे ।
लखन समाधि योग, आसन प्राण तजे, गये निज लोक शेष, तब काल चीर पे ॥
अवध निवासी संग, लेई राम नारायण, गये विष्णु लोक को, विमान बेनजीर पे ।
गौरि दुर्वासा लीला, अद्भुत भयो अति, राम गये निज धाम, मानुष शरीर पे ॥ ६९ ॥
एक दिन दुर्वासा, गये कृष्ण मिलन को, पूजे कृष्ण भलो विधि, देखि मुनि राई कै ।
भोजन कराई मोहि, रथहिं चढ़ाई आज, खींचो रुक्मिणी साथ, लाज बिसराई कै ॥
कृष्ण तेहि विधि करि, मुदित कियेउ मुनि, तेहि पाछे कृष्ण कहं, नगन बनाई कै ।
गौरि कृष्ण तन महं, पायस लगाई दियो, वज्र सम अंग कियो, तुरत कन्हाई कै ॥ ७० ॥
एक दिन दुर्वासा, नदिहिं नहात रहे, नदी के तरंग मे, लंगोट भसि गयो हैं ।
द्रौपदी नहात रही, आंचल आपन फाड़ी, दियो मुनि लेई तेहि, आशिर्वाद दये हैं ॥
लाज तेरो तन के, सतत रहै पट ढ़ांपे, कहि एहि दुर्वासा, घर पथ लये हैं ।
गौरि शिव अवतार, दुर्वासा बहु विधि, चरित अमित बहु, मति महं कये हैं ॥ ७१ ॥
मुनि पुनि एक बार. पिंडारक जाई बसे, साम्ब गये तहं पेट, बसन तें ढांपिकै ।
नारि कर रूप धरि, बाल वंश ऋषि सन, पूछी गर्भ फल निज, उदर को ढांपि कै ॥
कहै मुनि एहि तें, मुसल एक निकसि कै, नाशि हैं सकल यदु, वंश साम्ब कांपि कै ।
गौरि कृष्ण कहं जाई, सकल बुझाई कहे, फेंके घसि निधि महं, मुसलहिं चांपिकै ॥ ७२ ॥
गिलि गयो मछली, पकड़ि कै केवट तेहि, लेई गयो भवन, उदर तार चीरों है ।
मूसल को देखि कै, बनाई तीर कर गांसा, निधि तीर सरपत, हुन्द चूर घीरो हैं ॥
तेहि निधि जाई यदु, वंशी लड़ि कटि मरे, सरपत असि हूब, धार तन गीरो है ।
गौरि सोई तीर को, केवट नोम तरु पर, कृष्ण पद अङ्गद, मारेउ राम टीरो है ॥ ७३ ॥
एक दिन मैलो औ, कुचैला सन दुर्वासा, जाई बैठे नदी तीर, चित बहलाई कै ।
गन्धर्व दुहिता नाम, रत्नाढ्या औ रत्नाचूड़ा, छूत पूर्ण हंसे देखि, मुनिहिं नहाई कै ॥

मुनि शाप चण्डाली, स्वरूप बनि गई सब, मलमास व्रत करि, पूर्व रूप पाई के ।
गौरि दुर्वासा के, प्रताप तरि गई सोई, शिव अवतार गुण, कही हम गाई के ॥ ७४ ॥

॥ ग्रहपति ७० ॥

नर्म्मदा किनार नर्म्म, पुर नाम नगरहिं, गोत्र शार्दूल महं, बिश्वामित्र जायो हैं ।
बडो ब्रह्मचारी शिव, भक्त यज्ञ करें सदा, सचशुमती नारि तार, सुन्दरी सुहायो हैं ॥
शिव पूजा प्रति दिन, पांचो यज्ञ करे नित, भयो वृद्ध विश्वामित्र, पुत्र नहीं पायो हैं ।
गौरि सचशुमती, जोरि युग पाणि कहैं, सुत एक दीजे मोहि, पतिहिं मनायो हैं ॥ ७५ ॥
जाई बारासासि मणि, कर्णिका नहाई करि, चन्द्र कूप जल तें, नहात प्रति दिन को ।
पूजत बीरेश्वर को, बिश्वामित्र नेम युत, जप ध्यान योग तप, कियेउ कठिन को ॥
वरष व्यतीत भये, देखि बीरेश्वर महं, बालक स्वरूप शिव, जानेउ एकीन को ।
गौरी बिश्वामित्र वर, मांगि मेरो सुत बनि, लेहु अवतार नाथ, चरित नवीन को ॥ ७६ ॥
एवमस्तु कही शिव, भये अन्तरधान तब, बिश्वामित्र कहे, समाचार घर जाई के ।
सचशुमती भई, गर्भवती पूर्ण समय पाई, प्रसव कियेउ सुत, सुन्दर सुहाई के ॥
"ग्रहपति" ७० नाम धरि, बिबिध बिधान दान, दियो बिप्र गण कहं, सादर बोलाई के ।
गौरि बिश्वामित्र उर, हरष अधिक भये, बिद्या में निपुण कियो, बालक पढ़ाई के ॥ ७७ ॥
भयो नव वरस को, बालक जबहिं मुनि, नारद गयेउ गाधि, सुत के भवन को ।
बांचि पाणि कहत, नारद सुनु बिश्वामित्र, बारहवां बरस ग्रह, पति है मरन को ॥
गये जब नारद, आयसु लेई पितु मातु, ग्रह पति आई रहे; आनन्द कानन को ।
गौरी काशी जाई तप, जप कियो शिव कर, इन्द्र बनि गये शिव, भक्तहिं यांचन को ॥ ७८ ॥
बहकाये बहुतेरो, मानेई न ग्रहपति, बज्र लेई मारे, ग्रह पति मुर्छाये हैं ।
शिव निज रूप तब, तुरत प्रगट कियो, दया करि महादेव, भूमि तें उठाये हैं ॥
धर्म्मराज इन्द्र मघा, राज्य देई तेहि कहं, माता पिता कहं तार, दिगीश बनाये हैं ।
गौरि ग्रहपति, अवतार शिव मनोहर, पढ़त सुनत दुख, सकल नशाये हैं ॥ ७९ ॥

॥ ऋषिश्वर ७२ ॥

सागर मथन तें, अमृत के कलश लेई, निकसे धन्वन्तरजू, सबहीं देखाई के ।
दैत्यगण छीनिलियो, विष्णु को पुकारे सुर, मोहनी स्वरूप नारी, हरी तहं आई के ॥
कपट के सुधा घट, लियो झट पट हरि, अमृत सुरहिं मद्य, असुर पिलाई के ।
गौरि हरि राहू शिर, चक्र फेंकि काटि लियो, यश रही तिहुं लोक, हरि कर छाईके ॥ ८० ॥

तेहि पाछे बहुतेरी, सुन्दरी सियानी नारी, निकली सागर तें, दानव गहि लियो है।
तेहि के पातालपुरि, राखि दैत्य गण तेहि, समर हराये सुर, देखि रमा पियो है॥
विष्णु पिछुआई गये, पताल असुर संग, मोहे देखि नारी वृन्द, जैते दैत्य तियो है।
गोरी बहु काल रहो, हरि रमे नारि संग, भये सुत बलिष्ट, संग्राम सुर कियो है॥ ८१॥
हारि गये देवता, गयेउ शिव शरणहिं, शिव वृष रूप धरि, पातालहिं गयो है।
विष्णु सुत दैत्य मारि, ललकि पछाड़े हरि, गिरे भूमि पर अति, मूर्छित भयो है॥
जानि शिव बिनय बहु, बिधि कियो विष्णु तब, चक्र राखि निज तहं, दूसरहिं लयो है।
गौरि शिव चक्र देई, भेजेउ वैकुण्ठ हरि, "वृषेश्वर" ७२ अवतार, शिव सुख मयो है॥ ८२॥

॥ पिप्पलाद ७३॥

सुवर्चा नारि दधीचि के, शिव सम सुत हित, व्रत कियो एकादशी, शिव वर दियो है।
वर अनुसार मार, जित तेहि गर्भ आई, बास कियो जेहि तें, विशेष सुख हियो है॥
भयो पूरो काल जब, वृत्रासुर बध हित, इन्द्र आई दधीचि के, अस्थि मांगि लियो है।
गौरि तेहि कर वज्र, बनाई करि दैत्य मारे, इन्द्र पाई राज निज, काज सुर कियो है॥८३॥
सुवर्चा रचि चिता सती, होन लगी जेहि काल, पीपल बिटप नभ, बानि तब भई है।
ठहरु सुन्दरी सती; नारी मुनि दधीचि के, स्वामी तेरो तरो, सुरपुर बास कई है॥
अनि अग्नि महं भस्म, जाई के पीपल छांह, बैठी नारी सकुचाई, माथ कर दई है।
गौरि तेहि काल एक, बालक जनम लियो, शिव कर चिन्ह तन, मन हरी लई है॥ ८४॥
बिनति अनेक बिधि, सुवर्चा नवाई शिर, जोरि युग पाणि कियो, शिशु भगवान को।
शिव शिशु रूप शोभा, परम अनूप देखि, शिव के प्रताप गई, लोक सुख खान को॥
शिवलोक आई मिलि, दधीचि से नारी सोई, सुवर्चा सुयश फैलो, सकल जहान को।
गौरि "पिप्पलाद ७३" रूप, मुनि तेजवन्त कर, धरि गयो अनरण्य, भूप के स्थान को॥८५॥
पद्मा नाम दुहिता, बिवाही लौटि आये मुनि, पिप्पलाद सेवा पद्मा, भली बिधि करती।
धर्म राज काम बश, पतिब्रत भंग तार, करे गये कोपि पद्मा, डांटी तेहि कहती॥
त्रेता युग पद एक, द्वापर दूसर पद, कलियुग तीजो, पुनि चौथो पद कटती।
गौरि पिप्पलाद जप, शनीग्रह दूर जात, शनि केर बूरो फल, तेहि छन हटती॥ ८६॥
शिव शिवा एक बार, करति बिलास दोउ, उन्मत्त चित, जगदम्बा माई बनिके।
गिरिजा बाहर गई, भैरव कुदृष्टि कियो, उमा कोपि श्राप दियो, भैरवहिं भनिके॥
मानुष शरीर धरि, महि बिचरहु तुम, भैरवहुं श्राप दियो, गिरिजहिं ठनिके

गौरि शिव भैरव, बचन मानि अवतरे, मानुष बदन धरे, महेश अवनि पै ॥ ८७ ॥
शिव नाम "महेश७४", गिरिजा नाम शारदा को, लेई अवतरे मेरी, सुत भये तिनके ।
शाप बश काल, बिपरीत भई लीला यह, महेश विख्यात नाम, भयो जग जिनके ॥
शारदा उदर तें, भैरव गण शिव कर, जनम लियेउ जग, करम अधिन के ।
गौरि शिव नाम जग, महेश सुभद्र शोभें, सुमिरत नाशक हैं, बिपद कठिन के ॥ ८८ ॥

॥ अवधूत ७५ ॥

एक दिन शचीपति, शिव दर्शन हित, सभा कियो जेहि महं, रुद्र रबि आये हैं ।
आठो वसु विश्वेदेवा, तेरह उनचास पौन, दिगपाल उपदेव, आदि तहं आये हैं ॥
शिव गये बनि, अवधूत तेहि ठाम तब, शचीधव भूत जानि, निकट बोलाये हैं ।
गौरि तेहि सन पूछे, शिव कहं एहि बेर, राजत कहहु मोहि, श्रम छूटि जाये हैं ॥ ८९ ॥
शिव अवधूत रूप, उत्तर न दिये कछु, शचीपति बज्र तेहि, उपर चलाये हैं ।
शिव भयो नील कंठ, बज्र गिरि जरि भूमि, हर भाल नैन तेज, बिपुल बढ़ाये हैं ॥
सुरलोक जरै लागे, भयेउ बिकल सब, बृहस्पति जानि शिव, इन्द्र समुझाये हैं ।
गौरि बहु बिनति, कियेउ शचीपति तब, भाल नैन तेज शिव, सागर खसाये हैं ॥ ९० ॥

॥ हनुमान ७६ ॥

सीता नारी राम कर, रावन हरन करि, गयो जब राम चित, अधिक उदासी भे ।
बिपिन फिरत रहे, भेंट भई अगस्ति सों, शिव तप उपदेश, सुनि ज्ञान राशि भे ॥
पशुपति अस्त्र तेज, तीर धनु शिव सन, पाई राम हर्ष सीम, कुमुद बिकासी भे ।
गौरि शिव सहाई, यांचन कियो रघुबीर, शिव भये "हनुमान", कानन निवासी भे ॥ ९१ ॥
जंबुद्वीप नव खण्ड, महं किम्पुरुष खण्ड, तेहि बन गिरि पर, केशरि बानर हैं ।
बानर के सरदार, केशरी को नारी एक, अंजनी सुन्दरी अति, सरूप मनोहर हैं ॥
प्रभंजन अनुज शची, पति देखि रति हेतु, समीर शरीर बनि, ढूकेउ भीतर हैं ।
गौरि वायु रति कियो, जानेउ अंजनी जब, श्राप देन लगी वायु, निकसि बाहर हैं ॥ ९२ ॥
बिनय करि अंजनी को, आशिष दियेउ पौन, सुत उपजिहैं तोहि, एक शिव अंश तें ।
देई परितोष तब, शोचि तेहि नाना बिधि, गयो चलि समीर, मदन बिध्वंस तें ॥
अंजनी गयेउ घर, करि डर उर बहु, आखिर कहेउ हाल, कपि अवतंश तें ।
गौरि "हनुमान कर", जन्म भयो पूरो काल, भयो यश शाली, अवतरि कपि वंश तें ॥ ९३ ॥
एक दिन अंजनी, शिखर पर गिरि कर, जाई बैठी गोद लेई, पवन कुमार को

शिखर तें दियेउ, गिराई हनुमान कहं, गयो उड़ि हनुमान, नभ निराधार को ॥
रवि को ग्रसेउ मुख, खोलि कै मारुत सुत, राहु भागि कह्यो इन्द्र, यहं समाचार को ।
गौरि इन्द्र वज्र लेई, कियेउ प्रहार जाई, मानि वज्र महातम, शास्त्र अनुसार को ॥ ९४ ॥
गिरेउ अवनि सुर, भ्राई कै पवन सुत, देखि तेहि पवन, विलाप पसारी है ।
शिव नभबानी तें, कहेउ अवतार मेरो, लेटत अचेत भूमि, चोट लगि भारी है ॥
सुनहु पवन तुम, रोकहु समीर निज, सुर गण गहि हैं, शरण को तिहारी है ।
गौरि तीन कियो पौन, जौन वतलाई शिव, जाई कै चरण गहि, अमर पुकारी है ॥ ९५ ॥
उठि बैठे हनुमान, शिव लीला अद्भुत, विनति अनेक करी, गये सुर धाम को ।
शिव अवतरे "हनु, मान"७६ नाम लेई निज, भयो पहिचान बन, लछुमन राम को ॥
राम के बचन मानि, सीता खोजे निधि टपि, सुरसा अहिन माता, हनि तेहि ठाम को ।
गौरि निधि निशिचर, मारि जारि लंका पुरि, हनि सुत रावन, उजारि है आराम को ॥९६॥
रावन के मद चूर, करि भेंटि सीय सन, छन घन निधि टपि, कपि राम पास को ।
गयेउ कहेउ सभा, चार चले रघुपति, भालु ऋछ अवतार, रावन विनास को ॥
सेतु बांधि सागर के, पार गये रघुवीर, हनुमान बल पाई, पौन उनचास को ।
गौरि धौलागिरि लाई, जिलाई अनुज राम, बरणि गुणानुवाद, राम मुख खास को ॥ ९७ ॥
जाई के पातालपुरि, हनि अहिरावणहिं, कालिका स्वरूप बनि, राम को उबारे हैं ।
लछुमन राम दोऊ, भाई दोऊ कांधे धरि, भूमि पर लाई धरे, अवध कुमारे हैं ॥
कपि दल देखि जै जै, कार कियो बहु बार, हनुमान यश फैलि, रही हर द्वारे हैं ।
गौरि हनुमान जन, शंकट निवारो वेगि, केवल पवन सुत, भरोस तिहारो हैं ॥ ९८ ॥
शंकट मोचन नाम, पवन कुमार तेरो, हेरो मोर ओर, एकबार दया करि कै ।
दुःख शोच दूर करो, देई दरशन मोहि, आपन सानुज राम, कहौं पद परि कै ॥
राम शिव चरण, कमल रति निशि दिन, दिजिये कृपालु मोहि, विनय सुनि जरि कै ।
गौरि हनुमान तब, महिमा प्रताप बल, गये जपि बहु तेरो, भव निधि तरि कै ॥ ९९ ॥

॥ वैश्यानाथ ७७ ॥

नन्दी नाम ग्राम महं, नन्दा नाम वैश्या एक, शिव के परम भक्त, पूजे नित हर को ।
भसम रुद्राक्ष तन, धारन करति सदा, रुद्राक्ष पिन्हाई निज, कुकुर बानर को ॥
जाई शिव मन्दिर, नचावै तेहि गान करि, शिव गयो यांचन, ले मदन सुन्दर को ।
गौरि हाथ सोना कर, कंगन पिहिनि शिव, जाई राजे एक बोर, नन्दी कर घर को ॥१०० ॥

सुन्दर बदन देखि, कंगन मांगेउ नन्दा, तीन रात तेहि संग, रति के करार को ।
कंगन के साथ हेम, लिंग दियो शिव तेहि; कहि एहि राखो नन्दा, नेह नेम सार को ॥
लिंग के बिनाश तें, जीवन नहिं मेरो रहै, "वैश्यानाथ" शिव कहे, बचन उचार को ।
गौरि तेहिकाल वेश्या, नाथ सोये नन्दा साथ, शिव लिंग राखि नन्दा, मन्दिर विचार के ॥१०१॥
शिव लीला कियो, दियो मन्दिर जराई करि, जरि गयो शिव लिंग, वेश्या नाथ रोये हैं ।
चिता को बनाई एक, अनल लगाई दियो, तेहि मधं वैश्या नाथ, आई आप सोये हैं ॥
नन्दा देखि दशा शोचि, जरै चहो तेहि साथ, कूदे लगी वैश्या नाथ, उठे रूप गोये हैं ।
गौरि शिव मुख्य रूप, आपन देखाई दियो, देखि शिव रूप पद, नैन नीर धोये हैं ॥ १०२ ॥
आई है बिमान एक, नन्दा चढ़ि तेहि पर, हरषि तुरत गई, शिव कर लोक को ।
भसम रुद्राक्ष जप, शिव नाम बल तरे, भव निधि सहजहिं, हरि रोग शोक को ॥
शिव नाम महातम, देखहु सुजन गण, दया करि छमि, महादेव सब दोष को ।
गौरि शिव गुण गावे, नाशि पाप अन्तकाल, तरि जात नहि देखे, नर माई कोष को ॥१०३॥

॥ द्विजेश ७८ ॥

शोभत प्रतापी बडो, राजा धनवान अग, भद्रायुष नाम शिव, भक्त एक तप के ।
शिव अवतार ऋषि, ऋषभ तें बर पाई, राज कियो निशंक, बिनाशि अरि भूप के ॥
चित्रांगद दुहिता, सुन्दरि कीर्ति मालिनि को, व्याह करि भोग कियो, राजा शिव जप के ।
गौरि एक बार रानी, लेई के बिपिन गयो, कियेउ बिहार काम, वेग रस रूप के ॥ १०४ ॥
शिव अरु गिरिजा, यांचन चले दोऊ मिलि, शिव बने विप्र एक, शिवा तार नारी है ।
माया कर सिंह रचि, भागि गये नृप पास, केहरि ग्रसन नारि, वदन पसारी है ॥
गोलि करि विप्र नारि, भागि गयो सिंह सोई, विप्र रोवे बहु बिधि, कलपिके भारी है ।
गौरि निज नारी दान, देई आरि चिता नृप, अरन चलेउ जब, गहे त्रिपुरारी है ॥ १०५ ॥
द्विज भयो शिव, अवतार हैं "द्विजेश" नाम, भद्रायुष कुल शिव, भजन तें तारे हैं ।
नारि सुत मातु पिता, सहित बिमान चढ़ि, गयेउ सदेह तरि, यश सन्सारे हैं ॥
चित्रांगद नारि सुत, मातु पितु लेई पुनि, सदेह बिमान चढ़ि, तरे एक बारे हैं ।
गौरि शिवमहिमा, प्रकाश कियो एहि बिधि, आनि लीला भव जन, बिपद को टारे हैं ॥१०६॥

॥ जितनाथ ७६ ॥

अर्बुद भूधर पर, भील अरु भिलनी थी, शिव के प्रेम भक्त, निज एक बार को ।
गये तेहि घर यति, रूप नाम "जितनाथ", रैन राखि घर के, भीतर जितमार को ॥

तेहि रात शिव माया, सिंह बनि भील कहं, खाइ गयो द्वार देखि, अस्थि भिनुसार को ।
गौरि करै भिलनी, बिलाप अति पति हित, शिव दियो बोध तेहि, विविध प्रकार को ॥१०७॥

॥ हंस ८० ॥

चिता ते बरजि तेहि, आपन स्वरूप शिव, दियो देखलाइ नाम, "जित नाथ" धरी कै ।
भील भयो मगधेश, बीरसेन सुत नाम, नल राज कियो जीति, सनसार भरी कै ॥
भद्र देश राजा भीम, दुहिता भिकनि भई, दमयन्ति नाम जेहि, नल राजा बरी कै ।
गौरी "हंस" रूप धरी, नल दमयन्ती साथ, दियेउ मिलाई शिव, जन दुख हरी कै ॥१०८॥

॥ कृष्ण दर्शन ८१ ॥

रवि सुत मनु कहं, भयो दश सुत जग, तेहि महं बन्हिक, नवम सुत नाम को ।
गयो गुरु द्वार, विद्याध्ययन कियेउ बहु, तेहि पाछे सब भाई, पितु धन धाम को ॥
बांटि लियो बन्हिक को, भाग कछु दियो नाहिं, फिरि आयो घर बन्हिक, पूरो करि काम को ।
गौरि पिता सन जाई, कही समाचार बन्हिक, सुनि बोध दियो श्राद्ध, देव तेहि ठाम को ॥१०९॥
अंगिरस मुनि यज्ञ, करत विशाल अति, यज्ञ ताके जाई सुत, वेदहिं पुरावहु ।
यज्ञ अवशिष्ट धन, लेई कै निशंक तब, भवन आपन जाइ, मन फिरि आवहु ॥
गयो बन्हिक पढ़ो दुई, सूक्त यज्ञ पूरो कियो, अंगिरस गयो स्वर्ग, कथा चित लावहु ।
गौरि अवशिष्ट धन, लेन लगे बन्हिक ज्यों, त्योंहीं शिव पूछे, तुम कौन हौ बतावहु ॥११०॥
"कृष्ण दर्शन" नाम, सुन्दर बदन शिव, विप्र रूप धरि, महादेव तहं गये हैं ।
रोकि दियो बन्हिक को, भेजि पिता पास तेहि, सुनि समाचार मनु, शिव ध्यान कये हैं ॥
जानि शिव चरित, तनय संग लेइ मनु, गयो शिव बिनय कियो, शिव खुशि भये हैं ।
गौरि धन लेई भयो, चक्रबर्त्ति राजा जग, बन्हिक को राज कृष्ण, दर्शन दये हैं ॥१११॥

॥ भिक्षुकनाथ ८२ ॥

विदर्भ देश नृप एक, सत्यरथ ताके नाम, शाल्व राजा जीति तेहि, शिर काटि मारे है ।
रानि तार गर्भवती, भागि गई बन रैन, तरु तर बैठी सुत, जनमि दुलारे हैं ॥
गई नदी जल पीवै, ग्राह तेहि गीलि गयो, ब्राह्मणी निधनी गई, तहं तेहि बारे हैं ।
गौरि गोद बालक, बरष एक कर रहे, देखि शिशु वृक्ष तर, बचन उचारे हैं ॥११२॥
काके पुत काहे एहि, ठाम पड़ो रहो मोई, शोचति अधिक बिप्र, नारी अकुलाई कै ।
भिक्षुक स्वरूप "भिक्षु, नाथ" नाम शिव धरि, आये तहं दियो, निज मूरति देखाई कै ॥
कही समाचार शिशु, जनम वृतान्त शिव, दियो तेहि बालक को, नारिहिं बुझाई कै ।

गौरी पूर्व जनम , वृतान्त सब कर शिव , कहे समुझाई सोई , कहौं हम गाई कै ॥ ११३ ॥
मांडव्य प्रसिद्ध देश, नृप शिव भक्त बड़ो , तेहि राजधानी आये , रिपु एक बेर कै ।
कियो कोलाहल रिपु, राजा तजि शिव पूजा , गयो देखै मन्त्री आवै , लेई तेहि घेर कै ॥
रिपु शिर काटि लियो , सचिव तुरत जब , देखि तेहि कोपि नृप , बानि बोले टेर कै ॥
गौरी सोई नृप , अवतरे सत्य रथ नाम , सुत जोर तरु तर , देखि नारी हेर कै ॥ ११४ ॥
मांडव्य नरेश नारी , सौतिन को विष देई , मारि तेहि कारण , निगलि ग्राह धाई कै ।
बालक तोहार गोद , दान लेई जन्म काटे , सत्यरथ सुत राज, पुनि निज पाई कै ॥
तोहि संग तरि जैहें , कहि शिव गुप्त भये , लेई गये बिधवा सो ,शिशु हर्षाई कै ।
गौरि दोउ बालक को, पोसेउ सनेह युत , शांडिल ते बिद्या दान, मिलि दोउ भाई कै ॥११५॥
एक दिन धन घट , पाई तीर नर्म्मदा के , गयो घर दोऊ भाई , दियो तेहि माई कै ।
भयो खुसी अति काटि , बरस परम सुख , दूसर बरष नृप , सुत बन जाई कै ॥
गंधर्व दुहिता देखि, पाणि गही तेहि कर, राज्य पाई बिदर्भ को, ब्राह्मणी को लाई कै ।
गौरि धर्म्म गुप्त नाम, भयो नृप सुत कर , बिप्र सुत नाम शुचि , व्रत तार भोई कै ॥ ११६ ॥

॥ नरजेश्वर ८३ ॥

तापस मुनीश व्याघ्र , पाद सुत उपमुनि , मांगो एकबार दूध , जननी से आपनो ।
दूध नहीं रहो घर , चूरो आंटा जौ के जल , दियो लानि पीयो उप, मुनि बिलखावनो ॥
छीरनिधि लाभ हित , प्रण किया उपमुनि , बन जाई शिव लिंग , करि एक थापनो ।
गौरी तप कियो भारी , शची पती रूपधारी , प्रगट भयेउ शिव , सुन्दर सुहावनो ॥ १७ ॥
बकवाद भई दोउ , संग कछु काल तक , भसम लियेउ कर , उपमुनि आपनो ।
फेंके चहैं इन्द्र पर , निज तन पर मुनि , दया वश शची पति , तन लागि कांपनो ॥
कर गहि थांमि लियो , शिव "नरजेश्वर", मुख्य रूप भलो विधि , मुनि दरशावनो ।
गौरी उपमुनि पाई , छोटिया अनोखो एक , दूध दधि घृत अरु , शहत गिरावनो ॥ ११८ ॥
शिव पति हित उमा , तप जब बन करै , यांचन भेजेउ शिव , मुनीश्वर गण को ।
सकै न फेराई मत, गिरिजा के जाई कोउ, गयो "जटाधारी"८४ रूप, शिव तहं छन को ॥
करिकै बिबाद शिव , याकेउ लजाई करि , मुख्य रूप आपन , देखाये दरशन को ।
गौरी बर हर निज, मांगि लियो गिरि सुता, शिव लीला सुखद, कामद नित जन को ॥११९॥
नर्तक नट रूप धरि , महादेव नाच गान , बिबिध बिधान कर , मैना हिमाचल हीं ।
जाई कियो मांगे बर , गिरिजा शुभग कर , दान सुनि हिमाचल , बदन बिकल हीं ॥

देखि मैना निषेध , करति बहु भांति तेहि , शिव रूप सुखद चिन्ह , देखेउ सकलहीं ।
गौरी "नर्त्तकनट८५", गिरिजा को दान लियो, गिरिजा भवानी रानी , कैलास अचलहीं॥१२०॥
हिम गिरिराज अरु , मैंना मत फेरे शिव , वैषाव के रूप धरि , गयो हिमाचल पास ।
सिखावन देई बहु , तेरो मत टारि दियो , गिरिजा बिवाह शिव , रोकेउ आनन आस ॥
सप्त ऋषि जाई अम, सकल छोड़ाई दियो , शिव उमा बिवाह को, उपाई बताई भास ।
गौरी "द्विज८६" अवतार, शिव लियो एहि बिधि, गाई शिव चरित, कटत जन भव फांस ॥१२१॥

॥ अश्वत्थामा ८७ ॥

द्रोणाचार्य्य द्विज वर , कौरव के गुरु रहे , जेहिते धनुष बिद्या , सिखेउ कौरव सब ।
अमर बलिष्ट सुत , शिव अंश अवतार , बर मांगि लियो तप , करि द्रोणाचार्य्य तब ॥
समब पाई शिव , अवतरे द्रोणाचार्य्य घर, "अश्वत्थामा" नाम धरि , जनमेउ जग जब ।
गौरि तब कौरव को, बल मिलि अधिकाई, राज्य की बड़ाई पाई, मिलि तेहि ऋद्धि नव ॥१२२॥
कौरव के पक्ष करि , मारि सुत पांडव के , देखि अरजुन तप , कियो बन जाई के ।
पशुपति अस्त्र शिव , दियेउ प्रसन्न होई , आये घर अरजुन , फिरि हर्षाई के ॥
अश्वत्थामा ब्रह्मअस्त्र , छाड़ेउ अरजुन पर , पशुपति अस्त्र छाडि , अरजुन हटाई के ।
गौरि अश्वत्थामा बाण ,उत्तरा के गर्भ मारि , परिक्षित तन हरि , रक्षा कियो जाई के ॥१२३॥
कृष्ण देखि लीला , अश्वत्थामा शिव रूप जानि , शोचि करि अरजुन , कर गहि जाई के ।
अश्वत्थामा शरण , गहाये वासुदेव हरि , दियो तब दोऊ कर , बन्दाई मिलाई के ॥
अश्वत्थामा आशिष , अनेक दियो पांडव को , रहेउ मुदित चित , शुभ बर पाई के ।
गौरि अश्वत्थामा गुण , बरणि सुनाई साधो , श्रवण करहु तजि , छल कपटाई के ॥ १२४ ॥

॥ किरातेश्वर ॥

राजा चन्द्रवंशी एक , ययाति प्रसिद्ध नाम , रहे तेहि पांच सुत , छोटा नाम पुरु हैं ।
रानी शरमिष्टा ते , जनम भयो जेहि कर , सोम कुल यश ज्योति , मूल तरु गुरु हैं ॥
तेहि कुल शन्तनु , नृप कहं दुई रानी , गंगा सरस्वती सुनि , व्यास सुख गुरु है ॥
गौरी गंगा सुत भीम , नृप बलशाली भयो , तापस प्रसिद्ध इन्द्र , जित मित कुरु हैं ॥१२५॥
सत्यवती गर्भ तें , जनम लियो दुई सुता , शन्तनु नरेश कर , बड़ो यशवान है ।
चित्रांगद विचित्रवीर्य्य , तेहि महं सम नामि , राजा मारि चित्रांगद , कई बलवान हैं ॥
चित्रांगद विचित्रवीर्य्य , तेहि महं सम नामि , राजा मारि चित्रांगद , कई बलवान हैं ।
बिचित्रवीर्य्य राज पाई, भोग औ विलास कियो, काम वश रानी देखि, मोहे बैठिकाम हैं ॥
गौरी काम जनित , सूजाक रोग वश नृप , पुत्र हीन मरि गयो , फल काम बाण है ॥ १२६ ॥

शन्तनु के कुल नष्ट, देखि सत्यबती रानी, वेदव्यास कहं सेवि, पाई सनतान को ।
बड़ी रानी सुत भये, धृतराष्ट्र नृप जग, जनम ते आंधी कछु, देखै न जहान को ॥
छोटी रानी सुत भये, पांडु धर्म्मशील बड़ो, नृप दासी व्यास द्वारा, बिदुर सुजान को ।
गौरी जनमाई जग, विष्णु के परम भक्त, व्यास यश एहि कवि, कहैं करि गान को ॥ १२७ ॥
सुबल की कन्या नाम, गांधारी को धृतराष्ट्र, व्याह कियो धूम धाम, बरात लगाई कै ।
राजा सूरसेन सुता, कुन्ती को बिवाहे पांडु, बसुदेव बहिन जो, फुफु थी कन्हाई कै ॥
पांडू को दूसरि रानि, माद्री नाम रही पुनि, धृतराष्ट्र सुत शत, दियो जनमाई कै ।
गौरी पांडु पांच सुत, युधिष्ठिर भीम अरु, अर्ज्जुन जनम लियो, कुन्ती द्वारा आई कै ॥१२८॥
नकुल सहदेव दोऊ, सुत भये पांडु कर, माद्री रानी उदर, प्रतापी बली भारी है ।
देवक दुहिता नाम, पारशवी विदुर सो, व्याही गई समय पाई, बिधि अनुसारी हैं ॥
दुर्य्योधन धृतराष्ट्र, बड़ो सुत बैर भाव, राखी खल पांडव तें, काल मति मारी है ।
गौरी भीम बल देखि, डाह तें बिकल चित, मारै तेहि दुर्य्योधन, उपाई बिचारी है ॥१२९॥
भीम बचे गरल के, लड्डू खाई हरि दया, लखा घर भीतर तें, पांडव उबरे है ।
विदुर सम्मति फल, बचि गये पांचो भाई, काशी के बाहर चले, भीम निरडरे हैं ॥
मारग हिडम्ब नाम, दानब को मारे भीम, पांचो भाई मिलि चक्र, पुरहिं उतरे हैं ।
गौरि मत्स्य बेधी पांचो, भाई कर द्रौपदी के, गहे जाको गान, महाभारतहिं करे हैं ॥१३०॥
धृतराष्ट्र पुनि डाकि, लियेउ पांडव कहं, आधो राज बांटि दियो, मनहिं बिचारी कै ।
खांडवप्रस्थ राजधानी, भयेउ पांडव कर, तहं बसि राजसूय, यज्ञ कियो भारी कै ॥
अर्ज्जुण सुभद्रा कहं, द्वारका तें छल करि, हरि के बहिन को, वलात लियो हरिकै ।
गौरि अरजुन के, चरित सुनु साधु गण, कहौं जैसे "किरातेश्वर", भये रूप धारि कै ॥१३१॥
श्वेतकी प्रतापी राजा, यज्ञ कियो बड़ो भारी, दुर्ब्बासा बताये घृत, अग्निकुण्ड डारे हैं ।
बारह बरस लगि, वन्हि अकुलाई विधि, मति अनुसार कृष्ण, अर्ज्जुण गोहारे हैं ॥
खांडव कानन को, जराई दियो एक दम, जल थल मय दैत्य, रचे छल सारे हैं ।
गौरि दुर्य्योधन को, धोखा भयो बडो भारी, थल जानि जल गिरे, वसन संभारे हैं ॥ १३२ ॥
हंसे सब दुर्य्योधन को, देखि करि नृप गण, सकुचित मन तब, दुर्य्योधन ठानि कै ।
जूआ खेलि धन नारि, जीति लियो दुर्य्योधन, दुशासन खिंचै चीर, द्रौपदी रिसानी कै ॥
दुर्व्वासा आशीष बल, वसन बढ़त जात, थाकि हारि दुर्य्योधन, खड़े पछतानि कै ।
गौरि पांचो भाई को, बारह वर्ष बनबास, दियो दुर्य्योधन ने, काल छल सानि कै ॥ १३३ ॥

रवि एक बरतन, दियो हरि पांडव को, जेहि पर भोजन, धरत बढ़ जाई है ।
घटत न भोजन, रहत भरीपूरी नित, जब लगि द्रौपदी, भोजन नहिं खाई है ॥
दुर्योधन मन काम, पूरी करै दुर्वासा, पांडव समीप गये, समय जब पाई है ।
गौरि मांगि भोजन, गयेउ अभिषेक हित, शिष्य लेई मुनि पांडु, सुत अकुलाई है ॥१३४॥
नभ वाणि अनुसार, कृष्ण सुमिरन कियो, कृष्ण आई द्रौपदी तें, रवि बरतन को ।
लिन्हेउ मंगाई तेहि, मह शाक पात एक, देखि खाये सन्तुष्ट, कियेउ सब जन को ॥
फिरि नहिं आये दुर, वासा मुनि शिष्य लेई, गगन के पथ गये, आपन भवन को ।
गौरि कृष्ण उपदेश, शिव तप करै कियो, कहि गुप्त भयो तहं, हरि तेहि छन को ॥ १३५॥
व्यासहु सम्मति दियो, शिव तप कर आई, अर्युण किन्हेउ तप, इन्द्र कर पाहिले ।
दियो दरशन शची, पति वृद्ध बिप्र रूप, मुख्य रूप पाछे देखे, जस मन चहिले ॥
शचीपति कियो, उपदेश शिव तप कर, कियो शिव तप, अर्युण बात गहिले ।
गौरि शिव तप बल, लीला फैलि चहुं दिशि, शिव चले देवै, दरशन सुर कहिले ॥ १३६ ॥
जेहि काल अर्युण, तप करै वन मह, मूक दैत्य भैंस वनि, गयो तेहि पास को ।
दुर्योधन भेजे एहि, राक्षस को जानि लियो, धनु वान कर गहे, दानव बिनाश को ॥
किरात स्वरूप धरि, शिव बहु गण लेई, भील तन वीर रस, कौतुक विलास को ।
गौरि शिव यांचन, अर्युण कहं तेहि छन, करै गयो लीला शुभ, मालिक कैलास को ॥१३७॥
शिव मारि वान लियो, प्राण छन दैत्य कर, तेहिकाल अर्युण, छाड़े निज बान को ।
जानि निज वान तें, विनाश भयो निशिचर, वान लेवै गयो अर, जुन तेजवान को ॥
शिव गण भीलतन, कहि तेहि "किरातेश", स्वामी मेरो मारि लियो, राक्षस के प्राण को ।
गौरो वान जनि लेहु, बिनु पुछे स्वामी मेरो, कहि कटु वानि अर, जुन बलवान को ॥ १३८ ॥
"किरातेश्वर" शिवगण, लेई अर्युण साथ, युद्ध कियो भली विधि, तब रिसिआई कें ।
हारे नहिं अर्युण, गगन उड़ाई शिव, लेई गयो तहं पुनि, लड़े खिसियाई कें ॥
हरखे विपुल बल, देखि अर्युण कर, शिव निज रूप तब, दिन्हेउ देखाई कें ।
गौरि पशुपति अस्त्र, देई अर्युण कहं, ऋद्धि सिद्धि राज दियो, शिव हर्षाई कें ॥ १३९ ॥
किरातेश्वर अवतार, शिव कर एहि विधि, भयो सुनु चरित, ललित मन लाई कें ।
ज्योति लिंग द्वादश, औतार शिव पुनि कहौं, जेहि सुनि लहें सुख, जन अधिकाई कें ॥
शिव के चरित नित, गाई शेष सुर मुनि, नारद शारद रहें, सदा सकुचाई कें ।
गौरि शिव अवतार, लीला निधि थाह नहिं, पावें कवि कोविद, जौं गावें मन लाई कें ॥१४०॥

सोमनाथ८९ महाकाल९०, विश्वनाथ९१ बैद्यनाथ९२, नागेश९३ओंकारनाथ९४, सुखद सुहाई है ।
मल्लिकार्जुन९५ रामेश्वर९६, त्र्यम्बक९७ केदारनाथ९८, घुसमेश्वर९९ अरु भीम, शंकर१०० बताई है ॥
द्वादश अवतार शिव, ज्योति लिंग नाम धरे, जेहि जपि पूजि मन, काम सिद्ध पाइ है ।
गौरि शत अवतार, शिव के समाप्त भये, गाये विघ्न दूर होत, शंकर दोहाई है ॥ १४१ ॥
सौराष्ट्र नगर शिव, सोम नाम ज्योति लिंग, राजै जेहि पूजि चन्द्र, दक्ष शाप टारे हैं ।
चन्द्र कुण्ड सुन्दर, सोहात सिद्ध दाई तहं, लही पूर्ब्ब वत कान्ति, सोम जेहि द्वारे हैं ॥
मल्लिकार्य्युन लिंग श्री, नगर बिराजै पुनि, जाइकै मनाये जहं, गुह सुत प्यारे हैं ।
गौरि लौटि आये नहिं, गुह शिव वसे तहं, जेहि पूजि नर जग, पावैं फल चारे हैं ॥ १४२ ॥
उज्जैन नगर मह, राजैं महाकाल लिंग, शिव जहं दियो दैत्य, दूषण जराइ कै ।
विन्ध्याचल भूधर, ऊपर ॐकार नाथ, विन्ध्य दुख दूर कियो, जहं शिव जाइ कै ॥
दुई रूप प्रणवेश, प्रणवस्थल नाम, पार्थिव महादेव नाम, शिव तहं पाई कै ॥
गौरी केदारेश्वर के, रूप नर नारायण, हिमगिरि पर शोभै, आसन लगाई कै ॥ १४३ ॥
भक्त के निमित्त भीम, मारि भीम शंकर जू, विश्वनाथ शिव काशी, धामहिं बिराजते ।
त्रंबक गौतम हित, नदी गौतमी के तहं, तट महादेव प्रभु, भली विधि छाजते ॥
देवनाथ चिताभूमि, रावण निमित्त भये, नागेश औतार वन, दारुक बिराजते ।
गौरी घुश्मासुर को, जिलाये घुश्मेश्वर शिव, रामेश्वर सेतुवन्ध, शोभैं राम काजते ॥ १४४ ॥
शिव अवतार शत, वर्रानि सुनाये जौन, सुजन समाज तौन, चित्त देई गावहु ।
शिव अवतार शत, चरित ललित जग, छल तजि गाई साधो, सुख नित पावहु ॥
शिव नाम सुमिरन, मनकाम पुरवत, जपि शिव नाम साधो, कलुष नशावहु ।
गौरि शिव अवतार, शत गाये एहि विधि, पढ़ि तेहि नेह युत, दया दरशावहु ॥ १४५ ॥
शिव के गुणानुवाद, कहौं कोहि विधि हम, बात अचरज बड़ो, जानि नहिं जाई हो ।
आदमपुर ग्राम मह, पिता मोर मरि गयो, विश्वनाथ पुनि तेहि, दिह्नेउ जिलाई हो ॥
कुशल बरारी घाट, रेल पै चढ़ाई करि, विश्वनाथ काशी धाम, लिन्हेउ संगाई हो ।
गौरि पौष शुक्ल पक्ष, दुतिया के तिथि मंह, नव रात राखि तहं, लिन्हेउ मिलाई हो ॥ १४६ ॥
विश्वनाथ सुमिरब, मणि कर्णिका घाट, पिता जू हमारो पाये, अन्त काशी जाई कै ।
सुनि अचरज लगि, सबहिं जगत मह, विश्वनाथ यश चहुं, दिशि रहो छाई कै ॥
सुजन समाज गण, मुदित भयेउ मन, दुष्ट जन बहु तेरो, रहेउ लजाई कै ।

गौरि विश्वनाथ यश, मिलि परिवार सब, भक्ति युत निशि दिन, रहे जस गाई के ॥ १४७ ॥
विश्वनाथ करुणा तें, मन्दिर बनायो एक, पिता जू हमारो गुरु, देव धाम जाई के ।
कियो स्थापना, मुदित मन तहं पुनि, शिव लिंग सांगापांग, काशी सों तें लाई के ॥
काली थान दक्षिन, इनारा के किनारा पर, मन्दिर विराजै विश्वनाथ रहै झलकाई के ।
गौरि जन मन काम, सकल पुरात शिव, जगत सतत भांति, विविध पुजाई के ॥ १४८ ॥
सुनेउ सप्ताह कथा, श्री भागवत कर, एकादश बार पिता, मोर हर्षाई के ।
तुला दान करि कियो, तीरथ भ्रमण पुनि, जगदीश गया काशी, प्रयाग तीर्थ न्हाई के ॥
विन्ध्याचल चित्रकूट, अयोध्या मथुरा बृन्दावन, तीरथ भ्रमण कियो, शंकर दोहाई के ।
गौरी अन्त शुभगति, काशी महं जाई लहे, सम्वत उन्नैस सौ, उनचास शुभदाई के ॥ १५० ॥
एक दिन षष्ठी तिथि, आसिन दशहरा महं, पिता जी हमारो उठे, पूजि दुर्गा माई के ।
खाई के प्रसाद सोए, शय्या निज जाई करि, देखि यमदूत मून्दे, नैन मुर्झाई के ॥
हाहाकार मची घर, सकल विकल भये, रोयो बहु हम, विश्वनाथ के दोहाई के ।
गौरि विश्वनाथ भेजि, दूत बहुतेरो निज, दाहिनो श्रवण हीन, दिन्हेउ जिलाई के ॥ १५१ ॥
खोले नैन भयो चैन, पिता जी हमारो जब, कियो बर्णन सब, हाल समुझाई के ।
सुनि अचरज लीला, विश्वनाथ जी के सब, रहे बार बार शिर, नाई गुण गाई के ॥
फैलो विश्वनाथ यश, भुवन चतुर्दश, दुष्ट गण फिरि गयो, भवन लजाई के ।
गौरि विश्वनाथ के, शरण गये सुख होत, विश्वनाथ देत मन, कामना पुराई के ॥ १५२ ॥
गौरी अरु शीतल, औ बासुदेव सन्तलाल, सुत चार छाड़ि भव, उदधि अपार में ।
पाई मुक्ति परम, मिलेउ बिश्वनाथ महं, फैलो रहो यश चहुं, दिशि सन्सार में ॥
शिव अवतार रहे, शिव भये अन्त पुनि, रहत कैलास नित, धरम प्रचार में ।
गौरि दरशन मोहि, देहो बिश्वनाथ साथ, रखहु सदेह मोहि, शिव सकार में ॥ १५३ ॥
गौरि अरु शीतल औ, वासुदेव वोकालत, जज के अदालत में, भागलपुर करते ।
सन्तलाल डाकटरि, करत रहत सब, मिलि एक साथ पिता, आज्ञा अनुसरते ॥
विश्वनाथ रखहु, सकल परिवार मेरो, एक साथ कुशल ते, पद शीस धरते ।
गौरि बार बार विश्व, नाथ जू मनाओं तोहि, सुमरि सतत जन, भवरोग हरते ॥ १५४ ॥

अथ गौरीशंकरायण

॥ अथ शिवलिङ्गावली ॥

॥ अथ अष्टमखण्ड ॥

॥ अथ पूर्व्व के लिङ्गों का वर्णन ॥

विधि निरूपित लिंग, तीर्थराज प्रयागहिं, ब्रह्मेश्वर नाम शुभ, कामद सुहात हैं ।
सोमेश्वर लिङ्ग दश, हयमेध तीर्थ पर, जाई जहं उपद्रव, सकल नशात हैं ॥
भारद्वाजनाथ, माधवेश शिवटंक महं, नागेश्वर शंकटेश, नगर पुजात हैं ।
काशी अविमुक्तेश्वर, तारेश्वर भूतेश्वर, भूरेश्वर भटकेश्वर, लिंग गौरि गात हैं ॥ १ ॥
मणिकृतनाथ, गोधुमेश्वर आनन्द वन, रामेश्वर लिङ्ग आदि, अनेक सुहात हैं ।
पटना नगर राजैं, दूरेश्वर सूर्गेश्वर, वैजनाथ दिशि पूर्व्व, शुभग सोहात हैं ॥
चौरी लिंग पूर्व्व दिशि, कामद धनद शोभैं, बूढ़ानाथ गैबीनाथ, अनेक बतात हैं ।
गौरि सिद्धिनाथ, कामनाथ मांडनाथ लिङ्ग, बिमलेश्वर ब्रह्मेश्वर, व्यासेश्वर गा हैं ॥ २ ॥
ज्ञानेश्वर भीमेश्वर, पूरेश्वर कोटेश्वर, फूलेश्वर शुक्रेश्वर, पूरब सुहात हैं ।
अचलेश्वर सूर्य्येश्वर, हुंकारेश कुमारेश, बटेश्वर कर्द्दमेश, भुवनेश भात हैं ॥
यज्ञ हेतु विधि एक, बार हरि पास गये, पूछि भुमि तेहि हेतु, हरि बतलात हैं ।
गौरि चित्रकूट गिरि, मन्दाकिनि नदी बीच, धनु दूब भुमि हरि, विधिहिं देखात हैं ॥ ३ ॥
विधि जाई शिव तप, यज्ञ करि कियो तहं, द्वादश अंगुली, ऊंचो, हरि मूर्त्ति भात हैं ।
शिव दियो दरशन, गंगा रही तेहि ठाम, मन्दाकिनि नाम पाई, सुखद सुहात हैं ॥
गोवध के पाप द्विज, बध पाप गये तहं, किये अभिषेक जग, छनहिं नशात हैं ।
गौरि मत्तगयन्द के, लिंग शिव कर तहं, शोभत हरत पाप, तीरथ विख्यात हैं ॥ ४ ॥
मन्दाकिनि तट, मत्तगयन्द सम्मुख नाम, शिव गंगा कर पाई, कवि अस गात हैं ।
बिनु मत्तगयन्द के, पूजन सुजन गण, चित्रकूट यात्रा फल, तनिको न पात हैं ॥

गौरि गिरि संकर्षण, कोट नाम तीर्थ पर, कोटेश्वर लिंग राजै, पुराण बतात हैं ।
जेहि पूजे हजार, सुरभिदान फल होत, कोविद कवीश सुर, नर मुनि गात हैं ॥ ५ ॥
दक्षिण पश्चिम ओर, चित्रकूट गिरि वर, तुगरण्य गिरि तट, गोदावरि भात हैं ।
पशुपति लिंग शिव, सुन्दर बिराजैं तहं, जेहि राम पूजे भक्त, पुराण सुनात हैं ॥
ताके दिशि दक्षिणहिं, कालिंजर गिरि ढिग, मुक्तक्षेत्र नाम एक, तीरथ विख्यात हैं ।
गौरि नीलकंठ शिव, लिंग राजैं जेहि पर, जेहि पूजि कलिमल, सहज नशात हैं ॥ ६ ॥
नीलकंठ लिंग तें, दक्षिण ओर मधुवन, रहै तेहि महं अत्रि, तप हित जात हैं ।
अत्रि घोर तप वश, शत वर्ष वारि नहिं, पड़ी काहु जगत, अधिक अकुलात हैं ॥
अनुसूया पूजति, पार्थिव लिंग मन देई, गंगा लेई रहै तहं, शिव गुण गात हैं ।
गौरि अत्रि नैन खोलि, मांगि जल नारि सन, कमंडल कर लेई, अनुसूया धात हैं ॥ ७ ॥
पथ देखि नारि एक, खड़ी पूछे तेहि सन, अनुसूया कहं बोलि, सुरसरि बात हैं ।
शिव एहि ठाम रहे, देखत पूजन तोर, हमूं तेहि हेतु एहि, ठाम रहि जात हैं ॥
कहि एहि गंगा नदी, जल होई बहि गयो, कमण्डल जल भरि, अनुसूया लात हैं ।
गौरि अत्रि जल पान, करि सुनि हाल सब, गंगा मे नहाई सोई, गौतमी कहात हैं ॥ ८ ॥
शिव दियो दरशन, गंगा तट पर तब, मांगि मन मानी वर, अत्रि मुनि पात हैं ।
गंगा रही तेहि ठाम, नाम भई मन्दाकिनि, जाई जहं साधु मुनि, सकल नहात हैं ॥
शिव लिंग अत्रीश्वर, नाम राजै पूर्णकला, जेहि पूजि धन जन, मिलैं बहुतात हैं ।
गौरि लिंग अत्रीश्वर, दियो जल अधिकाई, गयो दुख दूर लोग, सुखी दिन रात हैं ॥ ९ ॥
नर्म्मदा किनार बहु, शिव लिंग शोभै जग, जेहि पूजि आनन्द, मङ्गल नर पात हैं ।
परमेश्वर सुखेश्वर, ब्रह्मेश्वर रमेश्वर, बिमलेश्वर मदनेश्वर, कुमारेश्वर गात हैं ॥
मण्डपेश्वर अवतारेश्वर, तीक्षणेश शूलेश्वर, कंटकेश धूतकेश, करेश्वर भात हैं ।
गौरि धनुर्द्धरेश्वर, भौमेश्वर इन्द्रेश्वर, कुंभेश्वर कुबेरेश, लिंग झलकात हैं ॥ १० ॥

॥ नन्दिकेश्वर ॥

शोभत अधिक, फलदाई शिव लिंग एक, रेवा नदी तट, नन्दीकेश्वर बतात हैं ।
युधिष्ठिर जीति कौ, कौरव दल कृष्ण सन, उपदेश लेई तार, दरशन पात हैं ॥
तीरथ समीप तेहि, नाम हत्याहरण की, ब्रह्महत्या नाशक, शुभग जग भात हैं ।
गौरि तहं जाई पाप, सकल नशाई जात, रोग दूर होत, मिलै धन बहुतात हैं ॥ ११ ॥
पश्चिम किनार रेवा, नदी के कणिकपुरि, जहं एक बिप्र वंश, उतथ्य बसात हैं

काशी जाई मरि गयो, रहे सुत सात तेहि, नारि तार बूढ़ो अति, रोगी दिन रात हैं ॥
मरन समय निज, कौतुक करति अति, काशी धाम महं चित, चलन चहात हैं ।
गौरि मेरो अस्थि काशी, जाई सुरसरी महं, राखियो हे तात बात, कहो मरि जात हैं ॥१२॥
सुत बड़ो तार नाम, रहेउ सुबाहु सोई, लेई चले अस्थि निज, माई बिलखात हैं ।
मारग भवन एक, बिप्र कर जाई रहे, सन्ध्याकाल विप्र दूहे, गैया निज जात हैं ॥
बछिया को मारि अति, दूध नहीं पिये दियो, तेहि ते सुरभि मन, अति खिसियात हैं ।
गौरि काल बिप्र कर, बालक को मारि हम, कीजिहौं कसर, गाई शोचि मनस्रात हैं ॥१३॥
प्रातकाल मारि सींग, भोंकि के बालक बिप्र, श्वेतरंग गाई कालो, रंग बनि जात हैं ।
भागि चलो डोरो तोरो, द्विजहत्या हरण को, धाई तहं गाई रेवा, नदिहिं नहात हैं ॥
बाहर निकलि कालो, रंग उड़ि गये सब, पूर्ब्बवत रूप पाई, हत्या विनशात हैं ।
गौरि अस्थि लेई अम्ब, देखेउ सुबाहु सब, गुण हत्या हरण को, देखि भौचकात हैं ॥ १४॥
गये कछु दूर पथ, देखेउ सुन्दरि नारि, खड़ो होई सादर, पुछति कुशलात को ।
कहो समाचार द्विज, सुनि कहैं नारि सोई, गंगा हम राजौं शीश, शिव जन जात को ॥
आज तिथि सप्तमि, माधव मास शुक्लपच्छ, रेवा जाई बसौं हत्या, हरण निकात को ।
गौरि नन्दिकेश्वर के, लिंग शोभै शिव जहं, तहं फेंके अस्थि दियो, शुभगति मात के ॥ १५॥
ऋषिका शंकर भक्त, द्विज नारी विधवा थी, पूजति सप्रेम शिव, लिङ्ग दिन रात को ।
सुर नाम राचस, बिवस काम तेहि संग, भोग करै चहै, नारि डाकि गुहरात को ॥
शिव भये प्रगट, तुरत मारि सुरदैत्य, नन्दिकेश लिङ्ग नाम, भयेउ विख्यात को ।
गौरि गंगा वर देई, सप्तमी शुक्ल वैशाखहिं, जात तहं प्रति बर्ष, रेवा शुभ गात को ॥ १६॥
जननी की हड्डी दियौं, रेवा मे खसाई बिप्र, नन्दिकेश लिङ्ग पास, सुनि गंगा बात को ।
तेहिछन जल तें, सुन्दरि नारि रूप धरि, माता तार निकसेउ, तन झलकात को ॥
देखि द्विज हर्ष उर, करत प्रणाम बहु, आशिष दियेउ बहु, विधि निज तात को ।
गौरि चढ़ि कनक, विमान गयी सुरपुर, तीरथ प्रताप जग, परम विख्यात को ॥ १७॥
नैमिष कानन महं, शोभत तीरथ एक, नाम जाको जग, हत्याहरण बतात हैं ।
पवन कुमार तहं, नन्दि उपदेश सुनि, रावन विनाश हेतु, तप करै जात हैं ॥
तप कियो कठिन, प्रगट भये महादेव, जोरि कर हनुमान, विनति सुनात हैं ।
गौरि नाम पवनेश, लिंग महादेव कर, भयेउ भारत महं, परम विख्यात हैं ॥ १८ ॥
एक दिन रेवा नदि, तीर विधि रमापति, करि अभिषेक बैठि, दोउ बतियात हैं ।

॥ ब्रह्मेश्वर ॥

विधि कहैं बड़ो हम, हरि कहैं बडो हम, एहि विधि कहि दोऊ, बात प्रतिबात हैं ॥
तेहि काल ओपहिं तें, आप दोऊ बीच महं, ज्वाला एक निकसि, अधिक धधकात हैं ।
गौरि तेहि ज्योति तें, प्रगट भयो शिव लिंग, जेहि देखि बिधि हरि, दोऊ छकि जात हैं ॥१९॥
धरणि तें ऊंचो चार, अंगुलो ऊपर रहे, धरणी के नीचे चार, अंगुलो ढुकात हैं ।
विधि हरि दोऊ मिलि, सम्मति कियेउ तब, अन्त खोजै तेहि कर, दोऊ उठि धात हैं ॥
शूकर के रूप धरि, हरि गये नीचे ओर, विधि अन्त खोजवे को, उपरहिं जात हैं ।
गौरि दोऊ थाकि गयो, पाये नहिं थाह कछु, कवि कथा बरणे को, बडो सकुचात हैं ॥२०॥
बिधि हरि आपुसहिं, कियेउ करार एहि, प्रथम जो अन्त लेई, लिंग कर आत हैं ।
बडो तेहि जगत, सतत मानि पूजियहि, सुनि हरि शूकर, शरीर नीचे जात हैं ॥
छूवन चहत जब, लिंग हरि तेहि छन, तुरत बढ़त लोक, अतल को धात हैं ।
गौरि तसे वितल, सुतल तलातल लिंग, रसातल पताल, पहुंचि के बिलात हैं ॥ २१ ॥
शेष के समीप जाई, खडो भयो रमापति, शिव लिंग लुप्त देखि, अधिक लजात हैं ।
हरि फिरि गये रेवा, तट जाई चूप चाप, छगुनी बहुत बैठि, जोहत बिधात हैं ॥
विधि कर आपन, पसारि लिंग छूअन को, तुरत भुवरलोक, लिंग बढ़ि जात हैं ;
गौरि सूर्य्यलोक गयो, बढ़ि करि शिव लिंग, विधि नहिं छूई सके, बडो पछितात हैं ॥२२॥
एहि विधि स्वर्ग लोक, चन्द्रलोक तारालोक, शुक्रलोक भूमिलोक, होई लिंग जात हैं ।
गुरुलोक सप्तऋषि, लोक होई महर्लोक, तेहि पाछे जनलोक, विष्णुलोक यात हैं ॥
स्कन्दलोक शिवलोक, धेनुलोक गयो लिंग, तहं जाई लुप्त भयो, ज्योति झलकात हैं ।
गौरि बिधि अधिक, लजाई बेठे धेनुलोक, सुरभि केतकी पुष्प, विधि समुझात हैं ॥ २३ ॥
चलिये रमेश पास, साखि बनि दोऊ जन, कहिहौं कि विधि शिव, लिंग छूई आत हैं ।
मानि बानि तेहि कर, हरषि विरञ्चि तब, गयो जहं रमापति, बैठे पछितात हैं ॥
सुरभि केतकी दोऊ, कहै सुनु नारायण, विधि शिव लिंग छूए, देखि हम आत हैं ।
गौरि तेहि काल नभ, बानी भयो बड़ो भारी, जेहि सुने विधि हरि, आनन उठात हैं ॥२४॥
कहे शिव सुरभि को, जेहि मुख धेनु मोर, झूठ बोलि तेहि मुख, मैल कछि खात हैं ।
केतकी को पूजन, समय निज लिंग पर, चढ़ावै अशुद्ध फूल, शापित बनात हैं ॥
विधि हरि विनति, अधिक कियो शिव कर, अपराध क्षमै शीश, आपन नवात हैं ।
गौरि शिव लिंग रूप, प्रगट भयेउ तहं, ब्रह्मेश्वर नाम पड़ो, सुबद सुहात हैं ।२५।

॥ पश्चिम के लिंगों का वर्णन ॥

द्रुपदपुरि रामेश्वर , कालेश्वर शिव लिंग , मथुरा में गोपेश्वर , रंगेश्वर भात हैं ।
कनौज निकट लिंग , सदाशिव शिव कर , द्वारका में हरद्वार , केश्वर सुहात हैं ॥
पश्चिम समुद्र तट , तीर्थ गोकरण नाम , महाबल शिव लिंग , तहं भलकात/हैं ।
गौरी महाबल यश , सुनिये सुजन गण , शिव गुण गान मन , कामना पुरात हैं ॥ २६ ॥

॥ महाबललिंग ॥

महाबल लिंग , गणपति निरूपण कियो , जहं जाई शिव , पूर्ण अंश लेई भात हैं ।
कनक मन्दिर महं , राजत शंकर लिंग , जाके द्वारपाल , सुरदल दिनरात हैं ॥
विष्णु विधि इन्द्र आठो , बसु विश्वेदेव रबि , सोम तारा बायु गण , पूरब सोहात हैं ।
गौरि अग्निगण , पितृगण चित्रगुप्त मृत्यु , रुद्रगण मन्दिर के , दच्छिण लखात हैं ॥ २७ ॥
सुरसरि नदी आदि , परम बिख्यात जग , निधियुत पश्चिम के , द्वारहिं देखात हैं ।
पवन कुबेर चण्डी , जगदम्ब भद्रकाली , उत्तर दुआर राजैं , पुराण बतात हैं ॥
चित्रसेन विश्वावसु , गन्धर्व सकल नित , महाबल लिंग पास , जाई/करि गात हैं ।
गौरि मुनि गण सुर , गण नर गण जग , पूजत सप्रेम लिंग , मनोरथ पात हैं ॥ २८ ॥
कृतयुग श्वेतरङ्ग , त्रेता लाल रङ्ग लिंग , द्वापर से पीलो रङ्ग , कलि श्याम भात हैं ।
महाबल लिंग गुण , वान बडो चारो युग , महिमा पुराण शिव , अधिक बतात हैं ॥
मित्रसह राजा सूर्य्य , वंशी तहं जाई तरे , ताके कथा अचरज , परम बतात हैं ।
गौरि तनि ध्यान देई , सुनिये सुजन सोई , शिव कथा सुनि कलि , कलुष नशात हैं ॥ २९ ॥

॥ मित्रसह ॥

मित्रसह राजा धर्म्मी , शील सूर्य्यवंश महं , भयो वीर धीर बल , वान वेद ज्ञात हैं ।
मदयन्ती नारी एक , सुन्दरी अनोखी तेहि , जेहि लेई नृप बन , आखेट को जात हैं ॥
काल बश मति गति , मारि गई राजा कर , जन्तु जीव मारे , बेकसूर अधिकात हैं ।
गौरि मित्रसह बन , राक्षस को मारे एक , भाई तासु देखि दशा , बडो बिलखात हैं ॥ ३० ॥
राक्षस को भाई , धरि विप्र रूप नृप पास , गयो जोरि पाणि , दीन बचन सुनात हैं ।
राजा छल जानि नहिं , पाककर्त्ता तेहि निज , बनाई दयाल चित , घर फिरि आत हैं ॥
मित्रसह राजा निज , गुरु को नेवत देई , भोज करै बडो भारी , भवन बोलात हैं ।
गौरि नर मांस रांधि , पाककर्त्ता खल सोई , सबहिं परोसि , नृप भोजन करात हैं ॥ ३१ ॥
देखि नर मांस उर , कोपेउ वशिष्ठ गुरु , शाप दियो नृप कहं , दैत्य बनि जात हैं ।

कानन प्रचंड भूत, राक्षस स्वरूप धरि, मित्रसह मुनिगण, अधिक सतात हैं ।
एक दिन विपिन, निहारि एक मुनि कहं, नारि संग भोग करैं, गहि तेहि खात हैं ॥
गौरि नारि शाप दियो, स्त्री के प्रसंग काल, प्राण तेरो छुटि हैं, नरेश कंप गात हैं ॥ ३२ ॥
शाप देई मुनिनारी, सती होई पति पास, गई सुरपुर नृप, बडो पछितात हैं ।
मित्रसह राक्षस के, नाम कलमाष्पाद, एक निशि घर, मदयन्ती कर जात हैं ॥
नारी संग भोग मांगि, नारी जानि शाप हाल, भोग नहीं करै दियो, नरेश लजात हैं ।
गौरी तजि नारी निज, विपिन गयेउ नृप, पाछे पाछे हत्यानारी, प्रतिपद घात हैं ॥ ३३ ॥
फिरत कानन एहि, विधि पुरि मिथिला के, गये तहं गौतम तें, भेंट होई जात हैं ।
हत्यानारी दूर हित, पाप नाशै निज पुनि, पूछेउ उपाई मुनि, गौतम बतात हैं ॥
महाबल लिंग तट, तीरथ गोकर्ण कर, अघहर वर दाई, सुन्दर सुहात हैं ।
गौरि तहं जाईबेको, दियो उपदेश मुनि, कारण तहार साधु, तुमहिं सुनात हैं ॥ ३४ ॥

॥ सुमिनि ॥

गौतम कहत एक, वार हम महाबल, लिंग पूजे गयो व्रत, रखि शिवरात हैं ।
करि अभिषेक तीर्थ, सलिल गोकर्ण महं, पूजेउ सप्रेम लिंग, चित्त उमगात हैं ॥
देखे एक बुढ़िया, कुरूप बाल झुल झुल, शिर फहरात आत, जर जर गात हैं ।
गौरि भूखी तृषित, मांगेउ अनाज भीख, हंसि एक विप्र दियो, हाय वेलपात हैं ॥ ३५ ॥
कूढ़ि करि फेंकि दियो, वेल पात लिंग पर, रात भर जागि मांगि, भीख कौलटोत हैं ।
प्रात होई शिवरात, व्रत रखि भूलि करि, मूरछि अवनि पडी, बडो बिलखात हैं ॥
तेहि काल साधु के, समाज मुनि गण तहं, देखेउ विमान एक, आवै झलकात हैं ।
गौरि देखि अचरज, लागि मोहि पूछि हम, शिव दूत नारि कथा, सबहिं सुनात हैं ॥ ३६ ॥
सुनिये सुचित शिव, सेवक यह नारी रही, आगिलो जनम महं, ब्राह्मणी की जात हैं ।
सुमिनी विख्यात नाम, पति के मरण पाछे, भयो विभिचारौं शूद्र, संग फंसि जात हैं ॥
शूद्र पति पाई काम, और अधिकाई भई, मांस मद मक्ष्य नित, खात दिन रात हैं ।
गौरि एक दिन नारि, मांस के भक्षण हित, बकरी समुझि वत्स, सुरभी मंगात हैं ॥ ३७ ॥
सुमिनि निषिद्ध नारी, मारि तेहि शिव कही, तीन वार कुमती के, वश तेहि रात हैं ।
प्रात कहै धग्गर को, खाई सिंह गाई वत्स, बीते कछु काल नारी, यमपुर जात हैं ॥
धर्म्मराज तेहि कुल, चंडालहिं जन्म दियो, सोई नारी आज राखि, व्रत शिवरात हैं ।
गौरि अनजाने पूजी, महाबल शिवलिंग, जेहि पूजी पाप रोग, शंकट नशात हैं ॥ ३८ ॥

करि शिवरात ब्रत, मित्रसह महाबल, लिंग पूजै जाई तीर्थ, गोकर्ण नहात हैं ।
करि अभिषेक पूजी, महाबल लिंग नृप, तेहि छन ब्रह्महत्या, आपुहिं नशात हैं ॥
दैत्य रूप छूटि गाई, बिमान सुन्दर एक, शिव लोक तेहि पर, चढ़ि नृप जात हैं ।
गौरि शिव लिंग, महाबल के प्रताप नृप, तरि गयो भवनिधि, मुक्तिपद पात हैं ॥ ३९ ॥
शचिव नरेश कर, सम्मति कियेउ तब, वशिष्ठ को बहु बिधि, मनाइँ संगात हैं ।
मदयन्ती सन दूई, बालक जनाये तब, अंशुमान अंशुक, जो परम बिख्यात हैं ।
रविकुल बचि गयो, एहि बिधि साधु जन, शंकर पुराण कथी, लिखि यश गात हैं ।
गौरि महाबल लिंग, चरित मुदित मन, सुनिये सुजन गण, गुण अधिकात हैं ॥ ४० ॥

॥ उत्तर के लिंगों का बर्णन ॥

नैमिष क्षेत्र महं ललि, तेश्वर शंकर लिंग, ललित भवानी, निरूपित नित भात हैं ।
दधीचेश लिंग, निरूपित रहे दधीचि के, जाकी कथा भली विधि, पूर्व गाई आत हैं ॥
गोकर्ण क्षेत्र महं, चन्द्रभाल राजैं शिव लिंग, जाकी कथा बैजनाथ, सहित सुनात हैं ।
गौरि सोई कथा कहौं, बरनि सुजनगण, श्रवण सकल मन, कामना पुरात हैं ॥ ४१ ॥
एक समय रावण, हिमालय पर जाई करि, तप कियो कठिन, शंकर दिन रात हैं ।
आखिर शोचेउ मन, अग्नि कुण्ड खनि एक, काटि शिर आपन, शंकर पै चढ़ात हैं ॥
एहि विधि नव शिर, काटि अग्नि कुण्ड महं, चढ़ायो औढ़र ढ़र, शिव ढरि जात हैं ।
गौरि शिव देई, दर्शन कहे मांगो वर, पाई दशमुख पुनि, पूर्ववत भात हैं ॥ ४२ ॥
जोरि कर रावण, कहत मोहि राज देहु, सकल जगत कर, सुर नरजात हैं ।
सुर कर बध मेरो, होई जनि महाराज, रहिये भवन मेरो, बिनती सुनात हैं ॥
कहें शिव एवमस्तु, लिंग लेई जाओ घर, दूई रूप लिंग बनि, शिव झलकात हैं ।
गौरि मोहि मारग, धरिहौ यदि दशशीश, तेहिठाम अचल, रहौहौं दिन रात हैं ॥ ४३ ॥
कामर बनाई दूई, राखि दोऊ लिंग तहं, रावण चढ़ाई कांधी, मंजूषा ले जात हैं ॥
गयो कछु दूर पथ, लागेउ पिशाब तेहि, करै लघुशंका, दशशीश अकुलात हैं ।
देखि पथ गोप एक, बैजू नाम जार रहे, रावन तेहि कामर, धरन बिनबात हैं ॥
गौरी बैजू कछु काल, धारन करार करि, रखि कांधा कामर को, चित बिस्मात हैं ॥ ४४ ॥
रावन पेशाव, बेहिसाब कियो तेहि ठाम, जल कुण्ड गाढ़ो एक, तहं बनि जात हैं ।
बैजू अति देरी देखि, कामर राखेउ तहं, शिव लिंग दोउ गिरि, मही गड़ी जात हैं ॥
करि लघुशंका लंका. पति शिव लिंग दोऊ, लागेउ उठाई सकै, लिंग न उठात हैं ।

गौरि दशमौलि पद, अंगूठो तें चांपि लिंग, अधिके उसास उर, घर फिरि जात हैं ॥ ४५ ॥
आगिल की ओर लिंग, चन्द्रभाल नाम पड़ो, सुन्दर गोकर्ण क्षेत्र, कामद सुहात हैं ।
पाछिल की ओर लिंग, वैजनाथ नाम पड़ो, चिताभूमि पूर्ण अंश, शिव तहं भात हैं ॥
माघ बदी चतुर्दशी, लेई शिवरात्रि लगि, अर्द्धरात्रि शङ्ख घण्टा, अमर बजात हैं ।
गौरि जय जय शब्द निशि, करत अलख सुर, सुने तेहि केवल, जो महादेव ध्यात हैं ॥४६॥
शोभत जगत सुर, प्रयागहीं शिव लिंग, ललितेश्वर देवेश्वर, परम विख्यात हैं ।
रुद्रेश्वर लिंग, वृद्ध प्रयाग विराजैं शुभ, कनखल क्षेत्र लिंग, दक्षेश्वर भात हैं ॥
जेहि के निकट शोभैं, सती कुण्ड अघहर, मन काम लहैं जाई, नर जो नहात हैं ।
गौरि बिल्व गिरि बेल, वृक्षमूल बिल्वेश्वर, लिंग शुभदाई शिव, कामना पुरात हैं ॥ ४७ ॥
दक्षेश्वर निकट, सोहात नीलगिरि एक, तेहि पर नीलेश्वर, शिवलिंग भात हैं ।
गङ्गातट शोभत, हरत पाप जन कर, तेहि ठाम भीमचण्डी, धाम झलकात हैं ॥
आनन्द मङ्गल होत, किये दर्शन तेहि, शङ्खध्वनि प्रतिदिन, आपुहि सुनात हैं ।
गौरी नील गिरि पै, असमर्चित्त द्विज कहं, नील नाम रखि शिव, ढ़रि प्रगटात हैं ॥ ४८ ॥
बिल्वेश्वर लिंग के, निकट त्रिमूर्त्तिनाथ, शोभैं जहं रक्तजल, तीरथ सुहात हैं ।
तेहि ठाम नन्दीश्वर, लिङ्ग महादेव कर, भद्रेश्वर अरु भैरवेश्वर, बतात हैं ॥
शालिहोत्रनाथ, शालिहोत्र कहं विद्या दियो, कुमुदितीर्थ तट, चन्द्रनाथ झलकात ।
गौरि तह चन्द्रमा, पूजेउ लिंग थापि करि, तेहि के प्रताप शिव, भालहिं शोभात हैं ॥ ४९ ॥
सुरसरि बीच शोभैं, सोमेश्वर शिव लिङ्ग, जाके नाम कुब्जाम्र, औ पूर्णतिथि गात हैं ॥
अग्नितीर्थ महं राजे, अग्नीश्वर शिव लिङ्ग, बाधीतीर्थ महं, पवनेश्वर शोभात हैं ।
जेहि के पश्चिम ओर, गङ्गातट तपोवन, तहं लक्ष्मन गुरु, आयसु ले जात हैं ॥
गौरी मेघनाद बध, फल क्षयीरोग तहं, तप करि लक्ष्मन, सहज छोड़ात हैं ॥ ५० ॥
थापि एक लिङ्ग, शिव कर लक्ष्मन तहं, जाके नाम लक्ष्मन, नाथ बतलात हैं ।
नैपाल सुहावै पशु, पति नाम शिव लिङ्ग, मुक्तनाथ दूजो लिङ्ग, परम विख्यात हैं ॥
उत्तर की दिशि शिव, लिङ्ग नाम बर्णन, कियो सन्त सुनि तेहि, बडो हरषात हैं ।
गौरी चारो दिशि शिव, लिङ्ग नाम बर्णन, कियो पढ़ि जेहि कलि, कलुष नशात हैं ॥५१॥

॥ लिंगपूजन कारण ॥

शिव एक दिन सती, दहन विरह दुख, जाई करि दारुवन, चित्त बहलात हैं ।
मनोहर रूप धरि, नंगी होई खोलि लिंग, खडी होई मुनि नारि, गणहिं देखात हैं ॥

मुनि गण बाहर, रहेउ घर तौन काल, काम वश मुनि नारि, बड़ी अकुलात हैं
गौरि मुनि नारि लिंग, शिव गहि मिलि सब, मैथुन कियेउ शिव, बड़ी हरषात हैं ॥ ५२
आये मुनिगण निज, सदन जबन देखि, तबन किलोल काम, वश नारी गात हैं
शाप दियो लिङ्ग नाश, होहु गिरि एहि छन, सुनि मुनि बानि शिव, लिङ्ग खसि जात है
गिरि भूमि लिङ्ग उठि, लहकि धहकि पुनि, ज्योति तेज बड़ो, चहुं दिशि फैलि जात है
गौरि ज्योति बढ़ो लिङ्ग, पहुंचो अमर लोक, देखि अकुलाई बिधि, हरि को मनात हैं ॥ ५३
आये सुर गण शिव, चरण नवाये शिर, छमा करु अपराध, विनति सुनात है
मुनि गण जानि नहिं, मोहन स्वरूप तब, माया लपटाई तोहि, भरम भूलात हैं
सुनि सुर बानि मानि, आपन कसूर मुनि, पद गहे शिव कर, भीत मन गात हैं
गौर शिव ढरि कहे, पूजहु हमार लिंग, चूक सब माफ होई, सृष्टि बचि जात है ॥ ५४
पूजे शिव गण शिव, लिङ्ग को प्रथम तब, तेहि पाछे मुनि गण, पूजो हरखात हैं
लिङ्ग जूटि शिव को, बदन जाई एहि विधि, लिङ्ग धाम जीव प्राण, हर वेद गात है
लिङ्ग महं पूर्ण रूप, सतत बिराजें शिव, देत देखलाई जब, चित्त उमगात हैं
गौरि लिङ्गपूजन को, कारण सुनाये तोहि, पूजि शिव लिङ्ग, भवनिधि तरि जात हैं ॥ ५५ ॥

॥ अन्धकेश्वर ॥

दानव प्रचण्ड कच्छ, सुत को अन्धक नाम, बिधि तप करि बर, मन मानो पात हैं
जीति सुर गण निधि, नैर्ऋति के गर्त महं, बास करे सैन लेई, उपद्रव मचात हैं
शिव सुनि विनति, सकल सुर गण कर, अन्धक के संग युद्ध, करबे को जात हैं
गौरि धरि अन्धक, त्रिशूल राखि शिव तहं, आपन बनाई गण, लिंग रूप भात हैं ॥ ५६ ॥
नाम अन्धकेश्वर को, भई पूजि मनकाम, पावत सकल जन, अबै पूजि आत हैं
अन्धक पवित्र भयो, पायो सद्गति पुनि, बनि शिव गण जीतो, यश जग छात हैं
शिव के समान वेगि, ढरत न कोऊ भाई, भजहु सतत शिव, जन दुख घात हैं
गौरि बालकसिद्धि निज, अशुभहिं परिहरि, दीजिये चरण रति, राम दिनरात हैं ॥ ५७ ॥

॥ सुदर्शन ॥ देवल, बटुक, दधिचीश्वर लिङ्ग ॥

तनय दधीचि एक, नाम तार सुदर्शन, नारि कर नाम कबि, दूकुला बतात हैं
शिवलिंग दधीचि के, थापित पूजत नहिं, नारी पिछु अधिक, बेहाल दिनरात हैं
एक दिन दधीचि जू, नेवत पुरे गयो कहं, शिव लिंग पूजे कहो, सुत चलि जात हैं
गौरि लिंग पूजा को, बिसारे काम मद वश, रहेउ सुदर्शन, आई शिवरात हैं ॥ ५८ ॥

काशी जाई दधीचि जू , पूजे विश्वनाथ लिङ्ग , तेहि शिवरात वर , छोटि नहिं पात हैं ।
शिव के पूजन तजि , काममद मतवारो , सुदर्शन व्रत नहिं , कियो शिवरात है ॥
नारी सङ्ग भोग करि , कलुष विकार सुनि , चधिक लजाई शिव , पूजन को जात है ।
गौरि बिनु अभिषेक , शिव को पूजेउ सोई , क्रोध करि उमापति , तेहि दरशात हैं ॥ ५९ ॥
शाप देई तेहि जड , करि दियो महादेव , जड बनि सुदर्शन , तहं रहि जात हैं ।
हाहाकार मची वहु , दधीचि फिरेउ घर , देखि दशा सुत कर , बडो पछितात हैं ॥
गिरिजा पूजन कियो , तप कियो उमा कर , शङ्कर सहित जग , दम्ब दर्शात हैं ।
गौरि जग जननी , उठाई शिव गोद महं , सुदर्शन राखि करि , शिवहिं मनात हैं ॥ ६० ॥
चारो दिशा राखि तेहि , पूजन के योग्य कियो , पूजे तेहि फल ब्रह्म , भोजन के पात हैं ।
छमि अपराध महा , देव प्रभु वर देई , भैरव वटुक नाम , बालक रखात है ॥
भद्रक नरेश नित , ध्वजा राखि शिव कर , ब्रह्म भोज करावत , ध्वजा गिरि जात हैं ।
गौरि एक दिन पूजे , भैरव वटुक नृप , बिनु ब्रह्म भोज ध्वजा , आपुहिं गिरात हैं ॥ ६१ ॥
शिव देई दर्शन , लिङ्गहिं समाई गयो , दधीचीश्वर लिङ्ग नाम , जगत बिख्यात हैं ।
पूजि तेहि मनोरथ , मिलत सहज सब , शिव गुण गान शिव , लोक पहुंचात हैं ॥
सुदर्शन नाम कोऊ , देवल जगत कहैं , कवि मुनि कोबिद , सुयश शिव गात हैं ।
गौरि शिव शिव शिव , शिव शिव शिव शिव , जपहु सतत मन , कलुष नशात हैं ॥ ६२ ॥
दक्ष प्रजापति कहं , रहेउ सत्ताईस सुता , सोम संग व्याह करि , दियो एकरात हैं ।
रोहिनि तें प्रेम अति , रखत सतत चन्द्र , देखि दशा सोम नारी , अपर कुढ़ात हैं ॥
पिता सन जाई कही , दक्ष समुझाये विधु , तेहु पर शशि नेह , रोहिनि रखात हैं ।
गौरि दक्ष शशि कहं , क्षयी रोग शाप दियो , चन्द्रमा उदास चित , वडो पछितात हैं ॥ ६३ ॥
विधि उपदेश सुनि , गयेउ सौराष्ट्र देश , मृत्युंजय मंत्र जपि , पूजे गुहतात हैं ।
थापि लिङ्ग महादेव , प्रगट भयेउ शिव , प्रति मास घटो वढ़ो , वर देई जात हैं ॥
पूर्ण अंश लेई शिव , सोमेश्वर लिङ्ग महं , रहे तट चन्द्रकुंड , सुन्दर सुहात हैं ।
गौरि एहि बिधि सोम , शाप छुटि गयो साधो , भये शिव जन फल , चारो जग पात हैं ॥ ६४ ॥

॥ मल्लिकार्जुन ॥

गुह जब रूस करि , क्रौंच गिरि जाई रहे , गिरिजा सहित शिव , जानै तहं जात हैं ।
गुह तीन योयन पै , वास कियो जाई करि , देखि दशा शिव शिवा , अधिक लजात हैं ॥
नाम मल्लिका र्ज्युंण के , धरि लिङ्ग रूप शिव , रही तेहि ठाम नित , जगत पुजात हैं ।

गौरी तहं अमावस , शिव प्रति मास जात , उमा प्रति पूर्णमासी , जाई तहं मात हैं ॥ ६५ ॥

॥ महाकाल ॥

नगर उज्जैन एक , शिव भक्त विप्र रहे , पूजत पार्थिव शिव , हर गुण गात हैं ।
रत्नमाल गिरि पर, दूषण दानब रहे , करि विधि तप खल , बल बर पात हैं ॥
देव मुनि नर जीति , दूषण निशङ्क रहे , एक दिन नगर , उज्जैन चलि जात हैं ।
गौरी देखि शिव भक्त , विप्र पूजै पार्थिव को , सैन्य लेई दैत्य कोपि , तेहि पर धात हैं ॥ ६६ ॥
फटि गयो धरणि , समाई गयो दैत्य सब , शिव तेहि छन लिङ्ग , रूप प्रगटात हैं ।
हुंकार के शब्द कियो , दैत्य सब जरि गयो , पाई दरशन द्विज , बड़ो हर्षात हैं ॥
महाकाल नाम भयो , जेहि जपि तीन बार भूत प्रेत डाकिनी औ , शाकिनी नशात हैं ।
गौरी रोग कठिन , छूटत पूजे महाकाल , मनकाम सिद्ध होत , महिमा विख्यात हैं ॥ ६७ ॥
मणिभद्र शिव गण , उज्जैन नरेश कहं , चन्द्रसेन नाम जाके , लोग बतलात हैं ।
चिन्तामणि दियो जेहि , पिहनि प्रकाश बाल , रवि सम नरपति , शोभा अति पात हैं ॥
शिव के परम भक्त , पूजै शिव दिन रात , नृप गण बहुतेरो , छीनै तेहि धात हैं ।
गौरी तेहि काल मणि , पिहनि नरेश सोई , महाकाल लिङ्ग पूजै , भक्ति प्रेम गात हैं ॥ ६८ ॥
बालक को गोद लेई , गोपी तेहि काल गई , महाकाल दरशन , करि प्रफुलात हैं ।
बालक पार्थिव लिङ्ग , घर आई तेहि छन , पूजेउ चोराई देखि , तेहि तार मात हैं ॥
फेंकि दियो पार्थिव , उठाई माई गोप कर ; शिव दरशन दियो , शिव हरषात हैं ।
गौरी हेम भवन , बनेउ तेहि कर तहं , शिव के प्रभाव देखि , मातु सकुचात हैं ॥ ६९ ॥
बैर तजि नृप गण , देखि लीला अद्भुत , महाकाल लिङ्ग पूजि , गोप गृह चात हैं ।
हनुमान आपुहिं , प्रगट होई शिव गुण , गान करि बोध दियो , यश जग छात हैं ॥
महाकाल महातम , गायो हनुमान बहु , गोप नाम श्रीकर , धरि बतलात हैं ।
गौरी पीढ़ी आठम , जनम लेई नन्द गोप , कृष्ण अवतार हरि, जेहि घर जात हैं ॥ ७० ॥
गोप कहं जेहि ठाम , दरशन दियो शिव , तहं शिव लिङ्ग एक , सुन्दर सुहात हैं ।
गोपेश्वर लिङ्ग जग , धनद जनद अति , राजैं महाकाल ढ़िंग , महिमा सुनात हैं ॥
महाकाल महाकाल , महाकाल नाम शिव , हरी दुख जन धन , देत अधिकात हैं ।
गौरी शिव महातम , सुनिये सुजन गण , विधि हरि सुर मुनि , शिव गुण गात हैं ॥ ७१ ॥
शोभत ॐकार नाथ , लिङ्ग महादेव कर , नर्मदा किनार जहं , रेवा निकसात हैं ।
नारद बचन सुनि , विन्ध्याचल गिरि तहं , थापि शिव लिङ्ग तप , करै बैठि जात हैं ॥

दियो दरशन शिव , मेरु को जीतन हित , वर जोई विन्ध्याचल , मांगे सोई पात हैं ।
गौरी तारयंत्र तीर्थ , प्रगट भयेउ शिव , यंत्र लिङ्ग तारेश्वर , परम विख्यात हैं ॥ ७२ ॥
विन्ध्याचल निरूपित , लिङ्ग नाम अमरेश्वर , जगत प्रसिद्ध भयो , गुण विपुलात हैं ।
बाढ़ै लगे विन्ध्याचल , शिव बरदान पाई , बाढ़त बाढ़त गिरि , गगन ठेकात हैं ॥
सूर्य्य गति बन्द भई , गरम परम भयो , जरै लगे तरु जीव , सागर सुखात हैं ।
गौरि शिव सन जाई , सुरगण तेहि छन , कियेउ पुकार अति , सृष्टि अकुलात हैं ॥ ७३ ॥
शिव अनुमति पाई , गयो तब बृहस्पति , अगस्त्य समीप जाई , बड़ो बिलखात हैं ।
अगस्त्य गयेउ , विन्ध्याचल के निकट तब , देखि मुनि विन्ध्याचल , शीशहिं नवात हैं ॥
रहु एहि बिधि जब , लगि फिरि आवौं नहिं , कहि मुनि अगस्त्य , दक्षिण दिशि जात हैं ।
गौरी फिरि आये नहिं , अगस्त्य रहेउ गिरि , विन्ध्याचल तेहि भांति , अबहुं देखात हैं ॥७४॥

॥ केदारनाथ ॥

रुचि मुनि कहं एक , नारी रूपवती रही , आकूति प्रसिद्ध नाम , जाके बतलात हैं ।
विष्णु तप कियो मुनि , पाई सुत बरदान , हरि के समान हूई , मांगो वर पात हैं ॥
आकूति के गर्भ होई , हूई रूप रमापति , जन्म लियो नाम नर , नारायण गात हैं ।
गौरि हिमाचल के , केदार नाम शिखर पै , मुनि नरनायण , तप हित जात हैं ॥ ७५ ॥
थापि शिव लिङ्ग , बद्रीबन महं तप कियो , एक बार लिङ्ग होई , हर प्रगटात हैं ।
देहुँ दरशन पूर्ण , रूप होइ महादेव , राजेउ "केदार नाथ", नाम जग पात हैं ॥
पांडव छोड़ावै पाप , गये तहं जेहि छन , भैंसा रूप बनि शिव , भागि तब जात हैं ।
गौरी सुनि बिनति , अनेक पाछो धड़ तहं , राखि आगे धड़ देश , नेपाल पठात हैं ॥ ७६ ॥

॥ भीमशङ्कर ॥

रावन के भाई कुंभ , करण के नारी नाम , करकटी रही व्यास , देव बतलात हैं ।
तेहि कर सुत भीम , दैत्य नाम रहे एक , जनक मरन हाल , सुनि खिसियात हैं ॥
सह्य गिरि वसि तप , कियो विधि कर खल , पाई वर युद्ध करै , हरि संग घात हैं ।
गौरि कियो समर , अमरपुर जाई सोई , विष्णु संग बड़ो भारी , कवि अस गात हैं ॥ ७७ ॥
नभवानी भयो सुनु , उपदेश मेरो हरि , जाहो घर रण तजि , भीम न हरात हैं ।
काम रूप नृप जाई , प्रिय धर्म्म कहं जब , दीजिहैं विपुल दुख , भूरि उत्पात हैं ॥
तेहि छन भीम को , जिनाशि तेहि ठाम हम , राजिहौं स्वरूप लिङ्ग , कहौं सत्य बात हैं ।
गौरि सुनि भीम हरि , दोउ रण त्यागि दियो , नाशै प्रिय धर्म्म नृप , भीम दैत्य घात हैं ॥७८॥

जाई दैत्य कामरूप , देखि प्रिय धर्म कहं , दयनारी मिलि रूप , पूछैं गुरु तात हैं ।
बांधि करि दोउ कहं , राखि कारागार महं , तहं पुनि पार्थिव , पुजत देखलात हैं ॥
क्रोध करि मारे धाये , लिङ्ग तें प्रगटे शिव , हुंहुंकार करि भीम , तुरत जरात हैं ।
गौरी भीमशङ्कर के , नाम शिव लिङ्ग भयो , शुभद सुखद अति , जन दुख घात हैं ॥ ७९ ॥
भीम के भसम उड़ि , शिव स्वांस बल बहु , गिरि भूत उत मही ,जड़ी बूटी भात हैं ।
भयेउ प्रसिद्ध बड़ो , तेहि हेतु काम रूप , जड़ी के प्रताप भूत , डाकिनि नशात हैं ।
भूत वश करि काम , यादू करतेहि बल , करत फिरत साधु , जेते तेहिपात हैं ।
गौरी महादेव लिङ्ग , गायो भीमशङ्कर के , शिव के प्रताप बड़ो, चहुंदिशि छात हैं ॥ ८० ॥

॥ विश्वनाथ ॥

काशी धाम सम धाम , दूसर न कोई भाई , काशी भूमी सम भूमी , कोऊ न सुहात हैं ।
राखत त्रिशूल पर , शङ्कर चढ़ाई जेहि , प्रलय काल जलमय , सृष्टि सब मात हैं ॥
शिवा वाम कर देखि , विष्णु उपजाई माई , शिव हरि कहं तप , आदेश सुनात हैं ।
गौरी तप करैं हरि, काशी धाम जल चली , वाराणसी भूमि रमा, पति सोई जात हैं ॥८१॥
नाभि तें कमल हरि कर , उपजाये शिव , देखि हाथ दाहिनो , विरञ्चि उपजात हैं ।
कमल के फूल पर , रखि दियो महादेव , जलज के अन्त खोजै , विधि उठि धात हैं ॥
पायो पार नहीं फिरि , आई बैठे तेहि ठाम , नारायण जाई तहं , विधिहिं देखात हैं ।
गौरी तेहि काल फूल , कमल बिलाई गयो , महादेव तेहि ठाम , पाई हरषात हैं ॥ ८२ ॥
शिरहिं सुलाये शिव , मणि गिरि कान कर , मणिकर्णिका नाम , ठाम बतलात हैं ।
काशी भूमि त्रिशूल तें, राखेउ उतारि शिव , पांच कोश फैली मही , काशी नाम पात हैं ॥
लिङ्ग राखि निज शिव , नाम अविमुक्त भये , विश्वनाथ नाम जग , परम विख्यात हैं ।
गौरी काशी महातम , विश्वनाथ गुण बहु , निगम पुराण सुर , मुनि सब गात हैं ॥ ८३ ॥
विश्वनाथ भक्तिमुक्ति , दाई विश्वनाथ लिङ्ग , पूजन करन सुर , मुनि नर धात हैं ।
काशी के निकट एक , ग्राम महं साहू एक , रहेउ कृपिण अति , शिवहिं भुलात हैं ॥
साधु मुख उपदेश , सुनि नारी वृन्द बहु , शिव विश्वनाथ दर , शन हित जात हैं ।
गौरी बधू कृपिण की, जावे चाही वाराणसी , पति तार खरच की , डरहिं रोकात हैं ॥ ८४ ॥
नारी हठ देखि गयो , वनिक विपिन चलि , तहं बैठि शोच साहू , करे बहुतात हैं ।
शिव साधु भेष धरि , दियो उपदेश तेहि , सुनि तेहि साहू , नारी पास तब जात हैं ॥

लेई नारी काशी धाम , विश्वनाथ दरशन , पूजन सप्रेम करि , भाग सहरात हैं ।
गौरी काशी तीरथ , प्रसिद्ध विश्वनाथ लिङ्ग , पूजन समान पुण्य , दूसर न भात हैं ॥ ८५ ॥
काशी महं लिङ्ग बहु , तीरथ अनेक ठाम , कामद सुखद अरु , धनद सुहात हैं ।
शेष अरु शारद , नारद मुनि योगी यति , थाके गाई गुण निधि , पार नहिं पात हैं ॥
जपत सतत लिङ्ग , पूजत सप्रेम सब . विश्वनाथ महिमा , जगत में विख्यात हैं ।
गौरी शिव लिङ्ग अति, काशीहिं प्रसिद्ध राजैं, नाम ताके यथा शक्ति, लिखि बतलात हैं ॥८६॥
कृत्तिवासुकेश , वृद्धकालेश्वर कलशेश , पशुपति केदारेश , कामेश सुहात हैं ।
शंकर त्रिलोचन , चंडेश गरुडेश अरु , नन्दीकेश प्रतिकेश , लिंग बहुतात हैं ॥
बिष्णु सुर लोलार्क , केशव मुख कालेश्वर , मीहर सोमेश अरु , रवीश्वर भात हैं ।
गौरी रामेश्वर , हरिश्वर वागेश्वर लिङ्ग , भूमीश्वर धनेश्वर , काशी झलकात हैं ॥ ८७ ॥
हरिकेश दण्डपाणि , गुणनिधि शिव गण , अधिप कुबेर भयो , शिव यश छात हैं ।
गणेश अधिप गण , महादेव सुत भयो , विधि शिव बल सृष्टि , रचि देखलात हैं ॥
विष्णु लीला बहु विधि , मायाभरी देखलात , शिव बल स्वामी, सब कर बनि जात हैं ।
गौरी काशी महातम , भली काशी धाम महं , देत देखलाई जब , विश्वास रखात हैं ॥ ८८ ॥

॥ त्र्यम्बक ॥

एक बार जगत , अकाल भयो बड़ो भारी , वारि नहीं पड़ो , शत वर्ष बीति जात हैं ।
ब्रह्मशैल निकट , दक्षिण ओर जाई करि , गौतम बरुण तप, कियो कठिनात हैं ॥
एक हाथ गर्तकुण्ड , गौतम बनाई तहं , बरुण ते जल अक्षय , वर लेई पात हैं ।
गौरी अक्षय कुण्ड देखि , धाये जीव गण बहु , मुनि गण नर गण , सुनि तहं धात हैं ॥ ८९ ॥
बसे मुनि बृन्द जाई , तेहि ठाम मिलि करि , डाह रखि गौतम तें, शोचैं दिन रात हैं ।
एक दिन गौतम की , दाई गई पानी भरे , तेहिकाल मुनि नारी , गण तहं आत हैं ॥
कियो तकरार दाई , संग जानि बूझि सब , दाई बिनु पानी लेई , रूसी घर जात हैं ॥
गौरी जाई अहिल्या , गौतम कुण्ड पर तब , मुनि नारि संग बहु , विधि झगरात हैं ॥ ९० ॥
मुनि नारि बृन्द बात , कहो पति सन जाई , उलटो पुलटो झूठो , बातहीं बनात हैं ।
सुनि बाणि मुनि गण , गणपति तप कियो , गणेश शङ्कर सुत , दरश देखात हैं ॥
गौतम को दुख देहु , छल करि तेहि प्रभु , मुनि गण बर करि , बदन तें पात हैं ।
गौरी गणपति चीण , अङ्ग गाई रूप बनि , गौतम समीप तब , खड़ो होई जात हैं ॥ ९१ ॥
गौतम के खेत जाई , चरै लगी गाई सोई , गौतम उठाई तृण , सुरभी हटात हैं ।

गिरी भूमि मरि गई , लगेउ गोहत्या तेहि , देखि के सकल मुनि , देश तें भगात हैं ॥
विनय सुनि गौतम की , मुनि गण एक बार , दया करि शुद्ध बनै , उपाई बतात हैं ।
गौरि शतवार , परिक्रमा कियो मुनि गण , गौतम कोटि पार्थिव , पूजन तब जात हैं ॥ ९२ ॥
थापि शिव लिङ्ग तेहि , ठामहिं गौतम मुनि , कियो शिव तप , महादेव ढरि जात हैं ।
गङ्गा दान वर मांगि , जोरी युग पाणि मुनि, विनय सुनि शिव गङ्गा, जटा तें गिरात हैं ॥
मोहनी अनूप रूप , नारी बनि गङ्गा आई , बोलति शङ्कर सन , चित सकुचात हैं ।
गौरी गंगा विनय मानि, महादेव तेहि ठाम, पूर्ण अंश होई तेहि, लिङ्गहिं समात हैं ॥ ९३ ॥
गंगा नाम गौतमी , प्रसिद्ध भयो तेहि ठाम , निकसी दूसर शाखा , ब्रह्म शैल आत हैं ।
रूप नदी वहि गयो , गौतम नहाये तहं , नहात तुरत पाप , सकल नशात हैं ॥
गौतम पवित्र रूप , देखि तेजवन्त अति , मुनि गण क्षोभ मन , अधिक लजात हैं ।
गौरी कूवे जल , प्रति बाढ़ो गयो गौतम के , आवै देखि सुरसरि , गुप्त होई जात हैं ॥ ९४ ॥
सुनि नभ वानी शत , बार ब्रह्मशैल कर , कियो परिक्रमा मुनि , गौतम बतात हैं ।
पद पड़े गौतम के , अहिल्या चरण नाये , शोभ मुनि गण नारी , सहित मनात हैं ॥
गंगा भई प्रगट , नहाये मुनि गण जाई , सकल नशाई पाप , शुद्ध बनि जात हैं ।
गौरी शिव लिङ्ग नाम , त्र्यम्बक सुखद अग , शोभत गौतम तट , परम विख्यात हैं ॥ ९५ ॥
शिव दियो अवधि , रहन सुरसरि कर , गौतम स्वरूप कर , एहि बदलात हैं ।
जब लगि वैवस्वत , मनु नहिं आवै गंगा , तबलगि रहो इहां , तासों जौन जात हैं ॥
सिंह राशि गुरु वार , पूर्ण अंश गंगा राजें , महादेव शिवा संग , पुराण बतात हैं ।
गौरी तेहि दिन अभि , वैकि गंगा पूजे लिङ्ग , गौतमी शुभद गंगा , जगत सुहात हैं ॥ ९६ ॥

॥ वैद्यनाथ ॥

गाई वैद्यनाथ लिङ्ग , कथा इम पूर्व महं , जहं चन्द्रभाल गुण , कथा पढ़ि जात हैं ।
वैजू गोप एक बार , भोज कियो भारी घर, नाना बिधि भोजन , कुटम्ब को जमात हैं ॥
बिनु वैजनाथ पूजे , वेजू खावै वैठि गयो , याद पड़ी बैजनाथ , कौर ज्यौं उठात हैं ।
गौरी छाड़ि परोसन , धाई वैजनाथ लिङ्ग , पूजै वैजू गयो जात , सब भौंचकात हैं ॥ ९७ ॥
धाये बहु वैजू पाछे , देखि वैजू पूजे लिंग , शिव देखि प्रेम भक्ति , तहं प्रगटात हैं ।
बैजू कहं वर देई , नाम राखि वैजनाथ , बैजू सुख भोग करि , शिव लोक जात हैं ॥
बैजनाथ महातम , गोप गण चहुं दिशि , गाई विपुलाई गुण , जगत फैलात हैं ।
गौरी वैजनाथ पूजे , रोग पाप दूर होत , मनोरथ सिद्ध होत , पुराण बतात हैं ॥ ९८ ॥

॥ रामेश्वर ॥

नल नील गिरि तरु , सागर खसायो बहु , भसत डुबत नहिं , सेतु बनि जात हैं ।
मुनि गण आये , रघुनाथ के मङ्गाये बहु , शिव लिङ्ग सेतु पर , थापि हरखात हैं ॥
बजायो नलसुन्दरी , मनायो हरि शंकर को , महादेव लिङ्ग तें , प्रगटि दरशात हैं ।
गौरी रामेश्वर लिंग , नाम भयो तेहि कर , जेहि पूजि रामचन्द्र , रावन नशात हैं ॥ ९९ ॥
वर पाई रघुवर , सागर के पार गये , रावन के सैन संग , लडे बहुतात हैं ॥
रामेश्वर बर बल , हने राम दशशीश , विभीषण राज देई , जानकी को पात हैं ॥
गंगाजल लाई जो , चढ़ावै रामेश्वर पर , मुक्ति जन सायुज्य , पावत कवि गात हैं ।
गौरी रामेश्वर लिंग , सुखद धनद अति , जनद प्रचण्ड लिंग , कलिकाल भात हैं ॥ १०० ॥

॥ नागेश ॥

राक्षसी दारुका एक , तप कियो शिवा कर , उमा ढरि करि तेहि , कहं दरशात हैं ।
नगर मांगे उ एक , कोउ नहीं मारे मोहि , पतिहुं हमार नहीं , मारै कोउ पात हैं ॥
जाऊं जहं हम माई , दारुका विपिन तहं , संग मेरो जाई रहै , गिरिजा मनात हैं ।
गौरी बर पाई निधि , पश्चिम किनार जाई , नगर योजन सोलह , रचि बसि जात हैं ॥१०१॥
दारुक नाम पति रहै , दारुका राक्षसी कर , तेहि संग भोग करै , खुसी दिन रात हैं ॥
पकरि मारत जीव , गण नर गण बहु , उर्व्वमुनि पहं तब , मुनि गण जात हैं ॥
शाप दियो उर्व्व मुनि , आज तें भूतल नहीं , जीव कहं मारि हैं , राक्षस मुनि पात हैं ।
गौरी निधि बीच जाई , बसी बन लेई तब , दारुका सागर रही , कियो उतपात हैं ॥ १०२ ॥
जहाज पकरि निधि , डुबाई सकल जन , नाश करै दारुका , राक्षसी दिन रात हैं ॥
एक बार जहाज के , जन को पकरि करि , कारागार बांधि रखि , चित हरषात हैं ।
नाग नाम साहू एक , शिव भक्त तेहि महं , कारागार रही शिव , पूजन करात हैं ।
गौरि पूजै पार्थिव , बनाई नाग जन लेई , दारुका दारुक दोउ , देखे तेहि जात हैं ॥ १०३ ॥
मारै लगे तेहि जब , शंकर पुकार कियो , नाग जन शिव आई , तेहि दरशात हैं ।
पशुपति शस्त्र देई , मारै कहे दैत्य कहं , दारुका पुकारे शिवा , तेहि ठाम आत हैं ॥
दारुका दारुक कहं , शिवा को मनाई शिव , दया करि विपुलाई , तुरत बचात हैं ।
गौरी पशुपति अस्त्र , राखि महादेव तहं , नागेश्वर नाम धरि , तहं रहि जात हैं ॥ १०४ ॥
बोले शिव नैषध , नरेश विभ्रसेन कहं , जब लगि आवै नहीं , दैत्य न नशात हैं ।
बीते बहुकाल विभ्र , सेन शिव तप करि , नाव पाई एक दिन , तहं चलि जात हैं ॥

पशुपति अस्त्र लेई, मारेउ दारुका अरु, दारुक राक्षस दल, सकल नशात हैं ।
गौरी लिङ्ग नागेश्वर, शोभत सागर बीच, भलो विधि अरव की, लङ्का द्वीप भात हैं ॥ १०५ ॥

॥ घुस्मेश्वर ॥

दक्षिण दिशि तिरिदेव, नगर सुहावै एक, तहं एक बिबुध, सुधर्मा बसात हैं ।
नारी तार सुदेहा को, पुत्र नहीं रहे कोऊ, सुत हित पति ढिग, बड़ो बिलखात हैं ॥
फूल की परिक्षा लेई, देखे न कपाल सुत, पति तार अधिक, उदास होई जात हैं ।
गौरी नारी अनुमति, लेई कै सुधर्मा तब, दूसर बिवाह घुस्मा, सङ्ग वार लात हैं ॥ १०६ ॥
घुस्मा कहं भयो सुत, सुन्दर परम एक, देखि तेहि सुदेहा, अधिक पछितात है ।
डाह बश शिर काटि, फेंकेउ तलाव एक, जहं घुस्मा पूजि हर, पार्थिव गिरात हैं ॥
देखि सुत माथ करै, रोदन विपुल घुस्मा, महादेव दया करि, तहं प्रगटात हैं ।
गौरी घुस्मा सुत को, जिलाये महादेव तब, घुस्मेश्वर लिङ्ग बनि, तेहि ठाम भात हैं ॥ १०७ ॥

लिङ्ग कांड शङ्कर, पुराण गाये एहि साधो, सुनिये सुचित होई, कलुष नशात हैं ।
धन जन सुख भोग, सकल विलास मिलै, छल तजि जबै जन, शिव गुण गात हैं ॥
शिव के प्रताप छाजै, चहुंओर दृष्टि कर, दया करि जन पर, शिव दरशात हैं ।
गौरी शिव गुण गाई, पाई फल चार जग, सदे प्रभाव शिव, शिवलोक जात हैं ॥ १०८ ॥
शिव शिव शिव शिव, शिव शिव शिव शिव, शिव शिव शिव शिव, शिव शिव कहिये ।
शिव शिव शिव शिव, शिव शिव शिव जपि, लिजिये सकल फल, जौन मन चहिये ॥
शिव शिव शिव शिव, शिव शिव शिव भजि, सुखी औ निरोगी मन, सब काल रहिये ।
गौरी शिव शिव शिव, शिव शिव शिव शिव, शिव शिव शिव नमी, शिव पद गहिये ॥ १०९ ॥
शिव शिव शिव शिव, शिव शिव शिव भजु, सोए जागे उठे बैठे, एक शिव नाम को ।
शिव हैं अनादि देव, जेहि विधि विष्णु सेवैं, शिव नाम जपि जन, जात शिव धाम को ॥
शिव नाम जप नहिं, वैरथ कबहुं होत, शिव शिव जपि जन, पावै सब काम को ।
गौरी शिव सुमिरत, प्रेम तें प्रगट होत, देत देखलाई शिव, जन सब ठाम को ॥ ११० ॥
शिव के गुणानुवाद, कहौं केहि विधि हम, बात अचरज बडा, जानत नारद मुनि ।
काम करें अद्भुत, मूओ को जिलावैं शिव, खोओ धन मिलत, फिरत भाग जन गुनि ॥
निधन को धन देत, बांझ को अनेक पुत्र, शिव के पूजन तें, सतत सुख एहि सुनि ।
गौरी शिव चरण, सरोज उर धरुं सदा, बर लेहो दरशन, पाई कै सहज पुनि ॥ १११ ॥

श्रीगणेशाय नमः।

॥ अथ गौरीशंकरायण ॥







॥ अथ नवम खण्ड ॥

॥ अथ शिवनाम, भस्म औ रुद्राक्ष महात्म ॥

॥ अथ शिवनाम महात्म ॥

शिवनाम गाई बिष्णु, भयो तिहुंलोकनाथ, शिवनाम गाई विधि, सृष्टि को रचात हैं ।
शिवनाम गाई शेष, बसुधा को भार धरैं, शिवनाम गाई सुर, जगत पुजात हैं ॥
शिवनाम गाई पिता, मेरो काशी जाई मरे, शिवनाम गाई पिता, मुक्तिपद पात हैं ।
गौरी शिवनाम के प्रताप भये सिद्ध बहु, शिवनाम जन मन, कामना पुरात हैं ॥ १ ॥

॥ अथ सुमती कथा ॥

शिवनाम सम नाम, दूसर न कोऊ जग, अघहर, दुखहर, प्रवर सुहाई है ।
सुनिये गुणानुबाद, शिवनाम कर कछु, शिवनाम महातम, व्यास बहु गाई है ॥
शिवनाम महिमा, सुमतौ नाम द्विजनारी, स्वामी के मरन पाछे, पापिनी देखाई है ।
गौरी शूद्र संग रही, काटे दिन रात सोई, काम वश लाज धर्म्म, सकल नशाई है ॥ २ ॥
एकदिन शूद्रपति, बाहर गयेउ घर, बकरा को मारि नारि, मांस तार खाई है ।
बत्स बध काल शिव, नाम कहो एकबार, पति देखि कहै सिंह, मारिकै पराई है ॥
मरि करि अन्तकाल, गयो यमपुर नारि, धर्म्मराज पाप देखि, चण्डाली बनाई है ।
गौरी भई सुमती, जनम लेई आंधी जग, कुरूप अधिक दुख, बहु विधि पाई है ॥ ३ ॥
काटी दिन कष्ट सही, फागुन बदि चतुर्द्दशी, मांगत मांगत भीख, दूर चलि जाई है ।
तीरथ गोकर्ण गई, महाबल लिंग पास, बैठि मांगि भीख, कछु बेलपात पाई है ॥
जानि बेलपात फेंकि, भूमि खिसियाई करि, दैवयोग महाबल, ऊपर पराई है ।
गौरी तेहि रात शिव, रात काटि एहो विधि, शिवनाम सुनि जागि, पाप छुटि जाई है ॥ ४ ॥

॥ इन्द्रसेन कथा ॥

प्रात गई कछु दूर, मरि गई नारी सोई, शिवगण तेहि एक, बिमान चढ़ाई है ।
लेई गयो शिवलोक, दासी भई शिवा कर, शिवनाम गुण बहु, भलो देखलाई है ॥
इन्द्रसेन राजा एक, पापी भयो दुराचारी, ब्रह्महत्या जीवहत्या, करै अधिकाई है ।
गौरी बन जाई एक, बार देखि मुनिवृन्द, बकवाद निन्दा करि, मारै तेहि धाई है ॥ ५ ॥
आहर प्रहर नाम, कहो धाये मुनि पर, शिवनाम धोखो एहो, बिधि नृप गाई है ।
तेहि काल सिंह एक, मारि खायो राजा कहं, शिवगण भूपहिं, बिमान पै चढ़ाई है ॥
शिव द्वार तेहि पर, आसन बैठाये निज, राखि चण्ड नाम गण, आपन बनाई है ।
गौरी मुख्य भित्र बडो, अग्निकोन बास करै, हर के पुजनकाल आपुहीं पुजाई है ॥ ६ ॥

॥ असमचित्त कथा ॥

असमचित्त विप्र एक, नगर उज्जैन बसै, परनारीगामी पापी, दुष्ट अधिकाई है ।
चोर दगाबाज, दुराचारी भारी भयो सोई, लूटत जगत भभी, कछु न डराई है ॥
मायाचैत्र गयो एक, बार द्विज देवबश, देखि मुनिगण बैठी, शिवगुण गाई है ।
गौरी साधु भेष धरि, सुनि शिवनाम गुण, सुनत सुनत कथा, पाप छूटि जाई है ॥ ७ ॥

॥ नील कथा ॥

सुनि उपदेश पाई, गंगा तट महा गिरि, जाई शिव तप कियो, शिव दर्शाई है ।
नील नाम राखि तार, आपन बनायो गण, नीलेश्वर लिंगनाम, शंकर धराई है ॥
शिवनाम जपि एक, बार बहु पापी जन, तरे भवनिधि दुख, तनिको न पाई है ।
गौरी शिवनाम उठै, बैठे सोये जपु साधो, शिवनाम भवरोग नाशक दवाई है ॥ ८ ॥
राजा है करोड़ सप्त, मंत्र कर 'नमः शिवाय', 'नमः शिवाय' मंत्र सम, कोऊ न देखाई है ।
विधि हरि नारद, शारद सुरगण पुनि, तारक मन्तर सोई, जपि फल पाई है ॥
गौरी शेष महीधार, धरैं कहो 'नमः शिवाय', 'नमः शिवाय मन्त्र', मनकामना पुराई है ।
'नमः शिवाय' जपे पाप, कष्ट सब दूर होत, बदन पवित्र होत, ऋद्धि सिद्धि पाई है ॥ ९ ॥

॥ दशार्ह राजा कथा ॥

यदुवंशी राजा एक, दशार्ह विख्यात नाम, व्याहो काशी नरेश, दुहिता घर लाई है ।
कलावती नाम शिव, भक्ति करै निशि दिन, पूजति पार्थिव लिंग, प्रीति उर छाई है ॥
जपति सतत मन्त्र, 'नमः शिवाय', 'नमः शिवाय', दुर्वासा जौन बिधि, तेहि सिखलाई है ।
गौरी एकदिन व्रत, करि बैठी कलावती, कामवश भोग करै, पति तहँ आई है ॥ १० ॥

कूए बरजोरी तन, बदन लगाये निज, लागो आग सम अति, गरम तपाई है ।
छाड़ि तन मन्त्र के, प्रभाव जाने नरपति, गर्ग मुनि पास तब, मन्त्र लेवे जाई है ॥
यमुना किनार जाई, गर्गमुनि मन्त्र दियो , "नमः शिवाय" मन्त्र जपे, नृपहिं सिखाई है ।
गौरी मन्त्र पाई बोलि, "नमः शिवाय" एकबार, पाप भस्म होई अग्नि, सुख बहराई है ॥ ११ ॥
पाप सब जरि गयो, जपे मन्त्र "नमः शिवाय", राजा फिरि घर निज, बधू पहं आई है ।
भोग कियो नारी संग, ठंढो तन पाई तार, मुक्ति अधिकार भयो, यश जग छाई है ॥
"नमः शिवाय" मन्त्र सूते, बैठे उठे जपो भाई, जात पात विचार न, मन्त्रहिं दिखाई है ।
गौरी 'नमःशिवाय' रस, अमृत के पान करि, अजर अमर बनि, शिवलोक जाई है ॥ १२ ॥

॥ अथ भस्म महात्म ॥

भसम प्रकार दुई, महा भसम स्वल्प भस्म, महा भस्म शिव मुखय, रूप बतलाई है ।
स्वल्प भस्म तीन भांति, श्रोत स्मार्त लौकिक के, नाम गुण भलो विधि, नारद सुनाई है ॥
वेद रीति अनुसार, धारो भस्म श्रोत कहैं, पुराण रीति धारी भस्म, स्मार्त कहलाई है ।
गौरी सनसारी अग्नि, उपजी भसम कहं, लौकिक बताई जग, सुर मुनि गाई है ॥ १३ ॥
श्रोत अरु स्मार्त भस्म, धरहीं केवल विप्र, लौकिक भसम सब, योग्य बतलाई है ।
वेद मन्त्र अनुसार, भसम लगावें विप्र, अपर अक्षर नाम, लेई के लगाई है ॥
यज्ञ भस्म विप्र कहं, अवश्य लगान होय, भसम लगावे अधि, कार सब पाई है ।
गौरा कछु कुल अरु, बरण बिचार नहीं भसम लगाये जीव, शिवलोक जाई है ॥ १४ ॥
बालक तरुण वृद्ध, नर नारी सब जन, तरि जात यदि तन, भसम लगाई है ।
भसम कपाल तन, देखि यमदूत भूत, निकट न जात तेही, छाड़िके पराई है ॥
भसम लगाये तन, रोग नहीं होई कभू, पाप सब नाश होत, पुण्य विपुलाई है ।
गौरी तजि कपट, लगाओ तन भसम को, भसम प्रताप बहु, जीव तरि जाई है ॥ १५ ॥
श्राद्ध यज्ञ जप तप, हवन के कालहुं में, भसम लगावे शिव, पुराण बताई है ।
भसम लगाये काज, सकल सुफल होत, प्रेतयोनि छूटि जाई, भसम दोहाई है ॥
भसम लगाये तन, गंगा अभिषेक फल, तुरत मिलत विधि, नारद सुनाई है ।
गौरी नित भसम, लगाओ है कसम तोहि, भसम प्रताप धन, जन सुख पाई है ॥ १६ ॥
जल देई भसम, मध्यान्ह काल लगि नर, तेहि पाछे बिनु जल, भसम धराई है ।
बिनु जल सन्यासी, भसम नित तन रखें, त्रिपुण्ड बनाई भाल, सुखद सुहाई है ॥
भ्रकुटी से दोनो भौंह, अन्त तक भसम को, त्रिपुण्ड, कपाल धरें, विधि बतलाई है ।

गौरी रेखा प्रथम, मध्यमा सी खों'चहु भाल, तीजो अनामिका वीच, अंगुष्ठ लगाई है ॥ १७ ॥
वेल समी पलास, पीपल बड आम कर, लकडी अघोर मंत्र, पढ़िके जलाई है
भसम उत्तम सोई, वेद शिवानल नाम, अवशुद्ध वस्तु जारि, भसम बनाई है
तिल यव हविषा, विशुद्ध वस्तु अग्नि देई, होम की भसम जग, सुखद सुहाई है
गौरी चिता भसम, पुरावै मनकाम सिद्ध, मंत्र सिद्ध होई जपे, बिधि बतलाई है ॥ १८ ॥
प्रणव आतम शुचि, लोक श्रुतिगण सुक्ति, सवन दिवौक देव, त्रिपुण्ड, देखाई है
शिर कर्ण ललाट, नासिका मुख नेत्र कंठ, भुजा हाथ उदर, पांजर छाती छाई है
नाभि मुष्क त्रिवली औ, जांघ मध्य भाग दोउ, चरण बत्तीस ठाम, भसम लगाई है
गौरी आठो वसु सप्त, दिग्धेश आठो पुनि, दिक्पति आठो इन्द्र, नाम अधिपाई है ॥ १९ ॥

॥ दुर्य्यन कथा ॥

नाम दुर्य्यन एक, नरेश यवनदेश, पाप भारी विशेष, कियेउ अधिकाई है
मृत्यु भयो राजा कर, गयो यमलोक नृप, पाप अनुसार दण्ड, बडो तहं पाई है
रुधिर के कूप महं, रहे तीन शत वर्ष, तेहि पाछे पिशाच, जनम तार जाई है
गौरी शत वर्ष बन, बास कियो नरपति, पिशाच स्वरूप धरि, अति दुखदाई है ॥ २० ॥
भूख अरु पियास तें, विकल अधिक होई, आखिर मरेउ नृप, दुख बहु पाई है
तेहि पाछे क्रम करि, सिंह अजगर बिछू, सूअर गर्दभ स्वान, कर योनि पाई है
वृषभ हरिण कपि, भैंसा काक खच्चर औ, बकरी मछली चूहा, आदि योनि जाई है
गौरी भयो चौबीस, जनम नरपति कर, पच्चीस जनम ब्रह्मराचस बनाई है ॥ २१ ॥
रहत कानन महं, मारी बहु जीव, खावै, एकवार वामदेव योगी तहं आई है
वामदेव वदन, भसम रही सब ठाम, खावै तेहि धावै, ब्रह्मराचस ढिठाई है
छूवत बदन वाम, देव कर शुद्ध भयो, भसम प्रभाव योनि, राचसी नशाई है
गौरी एक काल दान, धरणि कियेउ कछु, तेहि के प्रसाद एहि, त्रिधि तरि जाई है ॥ २२ ॥

॥ शवर कथा ॥

शवर अधम जात, पाई शिवलिंग एक, सिंहकेतु पञ्चाल, नरेश पहं आई है
पूजन विधान पूछे, कही नरपति सब, उपदेश मानि चिता, भसम लगाई है
पूजे नित लिंग, चिता भसम लगाई करि, भरि मोद नारी निज, प्रसाद खिलाई है
गौरी एकवार शिव, यांचन गयेउ तेहि, पूजाकाल चिता भस्म, शंकर चोराई है ॥ २३ ॥
देखि नहीं भसम, चसम मून्दी कानै बहु, नारी पतिव्रता तार, चिता निर्माई है

शवर सम्मुख जरि, गई चिता महं नागी, सोइ चिता भस्म लेई, शवर लगाई है ॥
पूजि शिवलिंग भ्रम, वश डाकि नारि कहं, नारी जीतो होई आई, प्रसाद उठाई है ।
गौरी लीला अचरज, देखिकै शवर तव, भसम प्रभाव चहुं, दिशि जग छाई है ॥ २४ ॥

॥ वज्रबाहु कथा ॥

राजा नाम वज्रबाहु, दशारण्य देश कर, रहे जेहि रानी रूप, बतो बहुताई है ।
बडीरानी गर्भवती, भई जेहि काल महं, द्वेष करि छोटी रानी, गरल पिलाई है ॥
विष वश नारी रोगी, पायो सुत एक तव, रोगी देखि तेहि राजा, घोर खिसलाई है ।
गौरी राजा घर तें, बाहर करि दियो तेहि, रोई कान्दी रानी पद्मा, वेश्य गृह आई है ॥ २५ ॥
राखेउ आदर साथ, रानी कहं वेश्य सोई, रानी सुत रोग हरे, कीन्हेउ उपाई है ।
हारे बैद्यगण सब, मरि गयो राजा सुत, गोद राखि तेहि रानी, रोई अधिकाई है ॥
ऋष्य नाम मुनि शिव, भक्त आये तेहि काल, भसम मन्तर युत, वदन लगाई है ।
गौरी उठि बैठेउ, नरेश सुत तेहि समय, भद्रायुष नाम पड़ी, भसम दोगाई है ॥ २६ ॥
पाई राज्य पिता कर, ऋष्य उपदेश सुनि, भसम लगाई पूजे, शिव हरखाई है ।
भोग सुख बिबिध, प्रकार जग करि नृप, अन्तकाल राजे शिव, लोक महं जाई कै ॥
भसम प्रभाव कहों, कहां लगि गाई हम, विधि शेष शारद, गायेउ विपुलाई कै ।
गौरी नित भसम, लगाई पूजो शिवजू को, राज करि जग अन्त, शिवलोक पाई कै ॥ २७ ॥

॥ अथ रुद्राक्ष महात्म ॥

एक समय शिव तप, सहस बरस लगि, कियो तेहि पाछे दोउ, नयन उघारी है ।
गिरी दुई बून्द जल, मही पै बिटप भये, जेहि तें रुद्राक्ष फैली, जगत प्रचारी है ॥
अवध काशी मथुरा, औ गौडदेश सह्यगिरि, फैली तरु रुद्राक्ष की, इत सम सारी है ।
गौरी पाप हरत, नशत भव रोग सब, लवै नर नारी तन, रुद्राक्ष को धारी है ॥ २८ ॥
सकल अमर सब, रुद्राक्ष तें जप किये, सिद्ध होत एहि बिधि, वचन उचारी है ।
मांस लहसुन मद, पलांडु निषिद्ध वस्तु, खाद्य नहिं होत जो, रुद्राक्ष तन धारी है ॥
आंवलो के फल सम, रुद्राक्ष उत्तम होत, जगत रुद्राक्ष नहीं कोई दुखकारी है ।
गौरी गुंजा फल सम, रुद्राक्ष फलद अति, रुद्राक्ष बडाई गाई, भक्ो मुखचारी है ॥ २९ ॥
कांटा हीन कटे फटे, कृत्रिम रुद्राक्ष कहं, धारण निषिद्ध करि, बिधि बतलाई है ।
भूत यमदूत दैत्य, सर्प बिछू सिंह आदि, दुष्ट जन्तु देखि तन, रुद्राक्ष पराई है ॥
शिखा पर रुद्राक्ष, सतत रहै जेहि कर, अकाल मृत्यु भय तेहि, कबहुं न आई है ।

गौरी धरि रुद्राच, बदन रहै जबै जन, बसी जग सुखी सदा, शिवलोक जाई है ॥ ३० ॥
एक मुखी रुद्राच, शंकर रूप मुक्तिदाई, ब्रह्महत्या पाप आदि, सकल नशाई है ।
दुइमुखी रुद्राच, गोबध पाप दूर करै, तीनमुखी रुद्राच, विपुल धनदाई है ॥
चतुर्मुख रुद्राच, मनुष्य बध पाप हरै, पंचमुखी रुद्राच, अधिक सुखदाई है ।
गौरी शोभै षटमुखी, रुद्राच स्कन्द सम, सप्तमुखी रुद्राच तें, राज्य जन पाई है ॥ ३१ ॥
अष्टमुखी रुद्राच, बटुक भैरो रूप सोहैं, नवमुखी रुद्राच, स्वरूप दुर्गा माई है
दशमुखी रुद्राच, शोभत रूप जनाइंन, एकादशमुखी रुद्र, रूप कहलाई है ॥
द्वादशमुखी रुद्राच, हरत रोग रवि हूव, तेरह मुखी विश्वदेव, रूप बतलाई है ।
गौरी चतुर्दशमुखी, रुद्राच ललाट पर, धरे पाप दूर होत, अन्त मुक्ति पाई है ॥ ३२ ॥
शतदाना माला मोच, दाई हैं रुद्राच कर, एक सौ चालीस दाना, माला रोग हरती ।
बत्तीस दाना वाला माला, धनदाई अति होत, पन्द्रह दाना वाला माला, अभिचार करती ॥
माला एकसौ आठ दाना, वाला सर्व सिद्धिदाई, रुद्राच कै माला सम, अपर न धरती ।
गौरी धनदाई सुख,दाई सुतदाई जग, रुद्राच धारन किये, सवनिधि तरती ॥ ३३ ॥
पुत्रजीवा माला देत, सुत जग धारकहीं, मणिजा की माला धन, बुद्धि अति करती ।
मोती माला भाग्य की, बढ़ावैं अति धारक कै, कुश माला धारक कै, पाप सब हरती ॥
सोना अरु रूपा कर, माला सब काम साधै, श्वेतशोला माला धारै, देत गति धरती ।
गौरी माला कमल, धनद जग माहीं शोभै, रुद्राच की माला, चारो फल बश करती ॥ ३४ ॥
मुकुट रुद्राच दाना, पांच सौ पचास कर, शिर पर धरे शिव, रूप होई जात है ।
तीन सौ रुद्राच के, बनाई यज्ञोपवीत को, तीन लर पहिनि, अधिक सुख पात हैं ॥
एक शत एक राखि, रुद्राच गर्दन पर, मनकाम सिद्ध होत, कलुष नशात हैं ।
गौरी तीन रुद्राच, धारन करु शिखा महं, सुखी धनी बनो जग, सतत सोहात हैं ॥ ३५ ॥
पांच दाना दाहिनो श्रवण बाम कान षट, रुद्राच धारन किये, अति सुख पाई है ।
भुजा हाथ तेहि विधि, एक शत दश कटि, रुद्राच धारन किये, पाप छूटि जाई है ॥
रुद्राच धारन कै, विधान शिवपुराणहिं, विधि भलो विधि मुनि, नारद बुझाई है ।
गौरी अब रुद्राच, धारन कर महातम, सुनिये जवन शिव, पुराण बताई है ॥ ३६ ॥

॥ देवदत्त कथा ॥

रहे एक नृप देव, दत्त नाम झाडी वृच, नीचे कूप पर नित, पूजा शिव करते ।
एक दिन बैताल, दरश दियो तेहि कहं, बेश्या एक आई है, सो बात तेहि करते ॥

बैल मारी वैश्य कहँ, एहि छन नरपति, लीला अचरज होईहैं, देखे सोई चहते ।
गौरी जेहि काल नर, पति को बैताल बोले, तेहि काल वैश्य बैल, संग आई रहते ॥ ३७ ॥
बांधि करि बैल निज, कूप ढ़िग तरुमूल, वैश्य गयो झाडा फिरे, तब तेहि बार को ।
फिरि आये वैश्य खोले, लागेउ वृषभ निज, सिंग भोंकि पेट दियो, बैल तेहि फार को ॥
आये यमदूत शिव, दूत दोऊ तेहि छन, युद्ध करि भारो बहु, यमदूत सार को ।
गौरी दखलाई शिखा, वैश्यके रुद्राक्ष एक, शिव दूत लेई गयो, वैश्य पाप टार को ॥ ३८ ॥

॥ महानन्दा, बानर, कुक्कुर, सुधर्मा, तारक कथा ॥

महानन्दा वेश्या एक, बानर कुक्कुर कहं, रुद्राक्ष पिन्हाई दोऊ, गाती औ नचावती ।
मृत्यु भई जब तेहि, बानर कुक्कुर कर, रुद्राक्ष प्रभाव नृप, घर जन्म पावती ॥
काश्मीर राजा भद्र, सेन कर पुत्र भयो, बानर सुधर्मा नाम, पुराण बतावती ।
गौरी तार मन्त्री सुत, तारक के नाम धरि, कुक्कुर जनम लियो, रुद्राक्ष तरावती ॥ ३९ ॥
सतत रखत तन, तारक सुधर्मा दोऊ, रुद्राक्ष बदन पर, संग दोउ रही के ।
पराशर जाई एक, बार नरपति गृह, पूर्व जन्म हाल दियो, भद्रसेन कही के ॥
देखि भाल पाणि कहे, आज के सातम दिन, सुत तेरो मरिहैं, परम दुख सही के ।
गौरी शिव पूजन, उपाई बतलाई मुनि, राखे सुनि भद्रसेन, दोऊ प्रन गहीके ॥ ४० ॥
पूजत पार्थिवलिंग, शिव कर नृपसुत, भूमि पडे मुर्छाई, हाहाकार मची है ।
भसम लगाई तन, मन्त्र पढ़ि पराशर, जल छींटे तेहि पर, गयो सोई बची है ॥
उठि कहे यमदूत, आयो मोहि लेईवे को, महाबीर आई तेहि, मारे युक्ति रची है ॥
गौरी शतरुद्री जप, रुद्राक्ष प्रभाव बचे, रुद्राक्ष प्रभाव देखि, नृप भलो यंचो है ॥ ४१ ॥
सागर की थाह पाओ, सिकता तारा गिनो बरु, शिवनाम भसम, रुद्राक्ष गुण भारो है ।
गिनि नहीं सकि शेष, शारद नारद मुनि, कवीश्वर पण्डित, सकल मन हारो है ॥
नवखण्ड पुराण, शंकर कर पुरो भयो, गाई लहै मनोरथ, सब तनधारो है ।
गौरी ध्यान देइ शिव,गुण गान करु भाई, महादेव दुख जन, सकल निवारो है ॥ ४२ ॥
शिव शिव शिव शिव, शिव शिव शिव शिव, शिव शिव शिव शिव, हरदम जपिये ;
हर हर हर हर, हर हर हर हर, वं वं वं कहि, काल कलि खपिये ॥
भोला शंभु महादेव, नाम जप तप करि, शिव के प्रताप भव, निधि मन टपिये ॥
गौरी शिव महिमा, सुजन गण गान करु, जानि मति हीन मोहि, काव्यदोष झपिये ॥ ४३ ॥

॥ इति ॥



श्री गणेशायनमः





श्री सरस्वत्यैनमः

॥ अथ गौरीशंकरायण ॥

॥ अथ दशमखण्ड ॥

॥ अथ व्रतमहात्म्य ॥

शिव व्रत जेते सुख,दाई हर रोचक हैं, तेहि किये जन सुखी, होत सन्सार मे ।
सुदि बदि अष्टमी, औ शुक्ल कृष्ण एकादशी, सुदि बदी त्रयोदशी, करे नेमसार मे ॥
चतुर्द्दशी सुदी बदी, चारो चन्द्रवार पुनि, बारह व्रत शिव कर, प्रिय सुखाकार मे ।
गौरी व्रत करि सुख, भोगी बहुविधि जग, तरत सहज भव, सागर अपार से ॥ १ ॥
अष्टमी मे फलाहार, एकादशी बदि फल खावै, एकादशी सुदि व्रत, निर्जल करिये ।
त्रयोदशी फलाहार, चतुर्द्दशी फल खावै, एकादशी सुदि व्रत, निर्जल करिये ॥
सोमवार व्रतमहं, भोजन करिये कछु, एहि बिधि व्रत शिव, पूजक को चहिये ।
गौरी शिव व्रत करि, हरि पाप सब जग, सागर अगाध भव, सहजहिं तिरये ॥ २ ॥
चार वस्तु मुक्तिदाई, शिव पूजा रुद्र जप, शिव व्रत काशी में, मरन शुभदाई है ।
सब व्रतराज शिव, रात्रि व्रत विधि कहैं, जेहि के प्रताप मुक्ति,पद जन पाई है ॥
दिन रात पूजि शिव, कीर्तन श्रवन पुनि, जागो रैन पूजै हर, कछु नहीं खाई है ।
गौरी शिवरात्रिव्रत, नर नारी युवा वृद्ध, सकल करिये भव, कलुष नशाई है ॥ ३ ॥

॥ शिवरात्रिव्रत ॥

फालगुण बदि चतुर्द्दशी, शिवरात्रि व्रत कहै, तेहि दिन रात व्रत, निर्जल रखिये ।
रैन चारो पहर मे, पूजा कर शिवलिंग, संध्या समय पार्थिव, बनाई लिंग पूजिये ॥
नवेद विविध धरि, पूजो लिंग पार्थिव को, अष्टशत मन्त्र पढ़ि, जल लिंग ढरिये ।
गौरी शिवलिंग पे, चढ़ाई बेलपात बहु, नवेद चढ़ाई शिव, शिव शिव भजिये ॥ ४ ॥
गुरु मन्त्र पढ़ि शिव, पञ्चाक्षरी मन्त्र पढ़ि, चन्दन कुंकुम आदि, शिवलिंग पूजिये ।
अक्षत तील कालो पुष्प, कमल धतुरा आदि, कनेर दीपक धूप, लेई लिंग पूजिये ॥
देख अर्घा गंगाजल, अर्घा दुग्ध दधि अर्घा, शहत के अर्घ्य तें, नहाई लिंग पूजिये ।
गौरी तन भसम, रुद्राक्ष धरि लिंग पूजो, पूजी फल चारो कर,तन गत [illegible]जिये ॥ ५ ॥

गोधुम लखोहर सो, यव के लखोहर पुनि, धान के लखोहर ले, लिंगहिं चढ़ाईये ।
मन्दार गेंदा बेला सो, चमेली अर्क पुष्प आदि, बेलपात धतूरा ले, शिवगुण गाईये ॥
पहर दूसर दूनो, तीजो तीनगुनो करि, चौथो चारगुनो करि, सामग्री बढ़ाईये ।
गौरी जागी दिन रात, पूजि शिवलिंग पुनि, विप्रगण भोजन, कराइ मुक्ति पाईये ॥ ६ ॥
एहि विधि उद्यापन, करि पाप नाशि सब, धन जन विविध, प्रकार जग पाईये ।
शिवरात व्रत सन, आनो फलदाई होत, कहौं कथा श्रवन, मगन चित लाईये ॥
शिवरात व्रतराज, सुखद धनद जग, अनद आमद रखि, शिवगुण गाईये ।
गौरी शिवरात व्रत, सुर नर मुनि करैं, हरैं पाप एकबार, करि मनभाईये ॥ ७ ॥

॥ निषाध कथा ॥

भील एक निषाध, रहेउ पापी दुराचारी, हिंसक बाधक दुख,दाई जग भारी है ।
पोसै माता पिता सुता, सुत दारा एहि विधि, भोजन उपाई बन, बहु जीव मारी है ॥
एक दिन माता पिता, क्षुधा तें ग्रसित अति, निषाध बोलाई दीन, वचन उचारी है ।
गौरी मोहि भोजन, दिजिये केहु विधि सुत, जाहु अबी यदि तोहि, ममता हमारी है ॥ ८ ॥
चलेउ निषाध बन, शिकार खेलन तब, दिन भरि खोजि बहु, एकहुं न पाई है ।
शाम भयो शौच आदि, करि नदी तट पर, बेल तरु डाल पर, बैठेउ लुकाई है ॥
आयेउ प्रथमबार, मृगी एक पानी पिये, निषाध मारन तेहो, धनुष उठाई है ।
गौरी मृगी देखि विनय, कियेउ निषाध पहं, लौटन सौगन्ध खाई, घर फिरि जाई है ॥ ९ ॥
जेहि काल धनुष, उठाये मारे हरिणी को, निषाध कछुक बेल,पात मही गिरो है ।
बेल तरु नीचे एक, शिवलिंग रहो तहां, तेहि पर बेलपात, चलेउ बिथिरी है ।
रही शिवरात दिन, पूजे लिंग अनजाने, व्रतधारी निषाध, आखेटहि जिहिरी है ॥
गौरी शोच निषाध, कियेउ बिपुलाई मन, दूसर पहर जब, हरिणी न फिरी है ॥ १० ॥
दूसर पहर आई, मृगी एक पुनि तहं, देखि तेहि मारे भील, धनुष उठाई है ।
बिनति अनेक विधि, करिके कसम खाई, मृगी लौटै करार के, घर फिरि जाई है ॥
पूर्व्वंचत बेलपात, तेहि छन लिंग पर, गीरे बहु दूजो पूजा, शिवलिंग पाई है ।
गौरी तीजो पहर, हरिण आये तेहि विधि, कहि गये घर हर, भील तें पुजाई है ॥ ११ ॥
चौथीबार भोर काल, भूख तें बिकल अति, मृगझुंड सब देखि, धनुष उठाई है ।
गिरी बेलपत्र शिव, लिंग पर छूटो पाप, मृग कहे मारो मोहि, भील सकुचाई है ॥
पुण्य के प्रताप मृग, झुंड नहीं मारो तब, ज्ञान बिपुलाई कही, मृगहिं बुझाई है ।

गौरी शिव दर्शन, दियेउ निषाध काहं, मृग गण देवतन, तेहि छन पाई है ॥१२॥
शिव वरदान तें, निषाध ऋंगवेरपुर, राज कियो राम दर, भाई घर जाई कै ।
राम सो मिताई करि, नाम स्कन्द भयो, भोगी सुख तरि गयो, मुक्ति पद पाई कै ॥
शिवलोक जाई शिव,गण भयो भील पति, सुरपुर सुरगण, गयो घरखाई कै ।
गौरी शिवरात व्रत, पूजन शंकर लिंग, अनजाने किय फल, देत पखवाड़ कै ॥ १३ ॥

॥ गुणनिधि ॥

अनजाने गुणनिधि, शिवरात व्रत रखि, पूजे शिवलिंग पाप सकल नशाई है ।
कलिंग नरेश तेहि,विधि गुणनिधि भये, प्रथम खंड कवित, षड़तालिसहिं गाई है ॥
सौमिनि दुहिता द्विज, शिवरात व्रत बल, अनजाने जगदम्ब, सखी बनि आई है ।
गौरी कथा सौमिनि की, मिलसह कथा पुनि, महाबल लिंग, वर्णन भए गाई है ॥ १४ ॥

॥ विमार्षण ॥

राजा नाम विमार्षण, किरात नरेश रहे, वीर धीर नारी नाम, कुमुदती पाई है ।
करत वरत नित, चतुर्दशी कर नृप, पूजत शंकर लिंग, शिवगुण गाई है ॥
मांस खाई मदिरा, पियत विपुलाई नृप, विपरीत देखि नारी, पूछि पति आई है ।
गौरी कहै किरात, पश्चिम सुनु प्रिया मोर, कहूं कथा तोर निज, गाई समुदाई है ॥ १५ ॥
पूर्व काश रहे हम, कुकुर क्षुधित अति, एक रात शिवरात, लिथि दुख खाई कै ।
फिरेउ सकल दिन, भोजन न पायो कछु, सन्ध्या काल शिव के, मन्दिर रहे जाई कै ॥
देखेउ पूजन शिव, रात भरि भूखो रहो, जागि करि नवेद को, टेरी घरखाई कै ।
गौरी खावे लगे तेहि, काल मारी शिव भक्त, अवनी पडेउ हम, तवै मुर्झाई कै ॥ १६ ॥
प्राण गयो छूटि तेहि, पुण्य की प्रताप भये, किरात नरेश हम, नर तन पाई कै ।
पूर्व जन्म कपोतरी, रही तुम प्रिया मोर, मांस को टुकरो गहो, चोंचहि उठाई कै ॥
भागी चली गृद्ध एक, पीछा कियो तोहि तब, जाई बैठी तुम शिव, मन्दिर पै जाई कै ।
गौरी तोहि गृद्ध घात, घायल कियेउ तहं, मरी तुम गिरी महो, लिंग निकटाई कै ॥ १७ ॥
तेहि के प्रताप तुम, नारी हो हमारी प्यारी, दूसर जनम हम, सिंधुराजा होईहौं ।
संजय सुता होई तुम रानी होगी मेरी तब, तीसर जनम हम, सौराष्ट्रेश होईहौं ॥
कलिंग नरेश सुता, नारी तुम मेरी होईहौ, चौथो जन्म गान्धार, नरेश हम होई हौं ।
गौरी देश मगध, सुता होई करि तुम, व्याहौ मोहो होऊ एक, संग रंग जोई हौं ॥ १८ ॥
पांचम जनम हम, उज्जैन नरेश होई, दशारणय सुता तोहि, व्याही घर लैहौं ।

छठम जनम में, भनर्त्त राजा होई हम, ययाति की कुल तोहि, व्याह करि पैहौं ॥
सातम जनम देस, पांडव को राजा होई, भद्रवर्ण नाम धरि, बडो काम कैहौं ।
गौरी नृप बैदर्भ के, सुता बसुमती तुम, स्वयंवर जीति तोहि, घर लेई ऐहौं ॥ १९ ॥
बहु काल पीछे मुनि, अगस्त्य तें ज्ञान पाई, बन जाई शिव को, भजन बहु करिहौं ।
शिव दर्शन पाई, सुफल पूजन तप, जप मनकाम सिद्ध, करिकै बिचरिहौं ।
चढिकै बिमान एक, तोहि संग शिवपुरी, जाई बास करिहौं, सुन्दर बपु धरिहौं ॥
गौरी शिव भजन, पूजन, ब्रत चतुर्दशी, महिमा सहज भव, निधि हम तरिहौं ॥ २० ॥

॥ अथ प्रदोषब्रत ॥

बरत तेरस चयो, दशी को प्रदोष कहै, बरत बिधान शिवपुराण बखानो है ।
प्रात अभिषेक करि, पूजि शिवलिंग पुनि, दिन भर नेमयुत, ब्रत रखै प्रानी है ॥
तीन घड़ी दिन रहे, करि अभिषेक पुनि, श्वेत बस्त्र ओढ़ि संध्या, करै सुखदानी है ।
गौरी काल प्रदोषहिं, पूजि शिवलिंग कहं, ब्राह्मण भोजन करै, तवै सनमानी है ॥ २१ ॥
दान देई दक्षिणा, आयसु लेई बिप्र कर, हविष्य भोजन बिनु, लवण के करिये ।
ब्रह्म हत्या पाप मल, तुरत बिनाश होत, मन काम सिद्ध होत, ब्रत यदि धरिये ॥
आपद निकट नहीं, आवै केहु काल कछु, धन सुखद होत, मित्र बनै रहिये ।
गौरी चन्द्रसेन कथा, महाकाल उपाख्यान, त्रयोदशी ब्रत गुण, वही सोई पढ़िये ॥ २२ ॥
सत्यरथ त्रयोदशी, ब्रत करि पाये सुत, धर्मगुप्त नाम भयो, कथा सोई गाई है ।
भिक्षुक औतार शिव, महिमा आठम खण्ड, तोहि साधु जन हम, पढ़िके सुनाई है ॥
चित्ररथ राजा भयो, दशी ब्रत करि रहै, जगदम्ब शाप तें, असुर जन्म पाई है ।
गौरी सुर जीते सब, नाम भयो वृत्रासुर, सुरपुर राज छीनि, इन्द्रहीं भगाई है ॥ २३ ॥
गये इन्द्र बृहस्पति, शरण वृत्तान्त कहे, गुरु उपदेश तें, प्रदोष ब्रत किये है ।
ययाति के अस्थि लेई, बज्र बनवाई पुनि, रणभूमि वृत्रासुर, मारी यश लिये है ॥
प्रदोष ब्रत कार्तिक तें, करत प्रारंभ जन, वर्ष अन्त लगि एक, बार चित्त दिये हैं ।
गौरी शुक्लपक्ष शनि, महं जों प्रदोष मिलै, वड़ो फलदाई होत, बोध राखो हिये हैं ॥ २४ ॥
मध्यान्ह समय शिव, तिल जल आमल सों, नहाई चढ़ावै बहु, नैवेद यतन सों ।
प्रदोष काल दीपक, जलावै लेई गाई घृत, शंकर मन्दिर महं, हित परिजन सों ॥
पूजै शिव शत रुद्री, सुनै परिक्रमा करि, भक्ति युत गुरु पुरो, हित द्विज गण सों ।
गौरी शिव पूजन, करावै करै विधि युत, जाई बसै शिवलोक, मानुष वदन सों ॥ २५ ॥

॥ अथ एकादशीव्रत कथा ॥

कृष्णपक्ष एकादशी,व्रत राखि दिन भरी, प्रदोष समय शिव.लिंग पूजा करिये ।
त्रयोदशी व्रत जुब, पूजि महादेव लिंग, विप्र को जेमाइ भव, रोग पाप हरिये ॥
विप्र के आदेश लेई, भोजन करिये तब, गुरु पितु मातु विप्र, पद आई परिये ।
गौरी एकादशी व्रत, करिये विधान एहि, मनकाम सिद्ध होत, शंका परिहरिये ॥ २६ ॥
शुक्लपक्ष एकादशी, दिन रात व्रत करि, निरुजल रहै यदि, पूर्ण फल होत हैं ।
प्रदोष पूजा करि यदि, व्रत नहीं राखि सकै, दूध पान करि रात, अर्द्ध फल खोत है ॥
एकादशी व्रत महं, लवण भोजन जनि, करिये सतत शिव, पूजन उद्योत है ।
गौरी भवनिधि महं, एकादशी व्रतराज, अन्तकाल तरवै को, सुखदाई पोत है ॥ २७ ॥
सूर्य वंश मानधाता, राजधानी अवधहिं, अन्न को अकाल भयो, पानी नहीं परी है ।
किये उपाइ बहु, यतन निफल भये, वन आई लोमश, संकुल पद धरी है ॥
एकादशी विधि व्रत, कही समुझाई मुनि, व्रत कियो एकादशी, झड़ी तब भारी है ।
गौरी एकादशी वृत, मुचुकुन्द जन कहं, रामहं फलद भयो, सदा शुभ धरी है ॥ २८ ॥
मुचुकुन्द बलशाली, भयेउ प्रचण्ड अति, जनक विदेह भयो, जग सब जानी है ।
राम मुनि लोमश के, उपदेश मानि वृत, एकादशी करि सेतु,बन्ध निर्म्मानी है ॥
हनि दशशीश सीता, लेई गयो रामचन्द्र, जाकी लीला रामायण, बहुत बखानी है ।
गौरी एकादशी वृत, करिये मुदित मन, पाप हरै सुख मिलै, कहै कवि ज्ञानी है ॥ २८ ॥

॥ अथाष्टमी वृत ॥

अष्टमी वरत सुख, दाई प्रिया शिव कर, दिन भरि वृत करि, पूजै महादेव को ।
माघ बदि अष्टमी को, निर्जल वृत करै, कालाष्टमी भैरव सोई, जनम है शंकर को ॥
विधि विष्णु विवाद, मिटायो काटि पंचमुख, एक अवतार शिव, लीला अवसर को ।
गौरी लीला भैरव के, गाई है काठखंड, पढ़िये सुचित शुभ, लीला उमावर को ॥ ३० ॥
मार्ग सुदि अष्टमी को, वृत राखि विधिवत, प्रदोष काल तब पूजै, लिंग उमावर को ।
मनकाम सिद्ध होत, पावै सुख अधिकाई, विपद बिलाई जात, नित्य वृतधर को ॥
धन जन अधिकाई, पाई हर्षाई रहै, अन्त आई बसै शिव,लोक मनोहर को ।
गौरी वृत अष्टमी को, लकुलीश साधो, बाधा सब दूर होत, दोहाई शंकर को ॥ ३१ ॥

॥ अथ सोमवार वृत सिमन्तिनी उपाख्यान ॥

सोमवार वृत को, विधान वृत त्रयोदशी, समान बताई शिव, पुराणहिं गाई कै ।

महिमा प्रभाव बड़ो, सुनिये सुजन मण, कहौं समुझाइ तोहि, मिक उपाय के ।
पाञ्चालदेश न्टप, चित्रबर्म्मा नाम एक, रहे तेहि सुता भया, तिथि योग पाई ।
गौरी राजा ज्योतिषिन डाकि के दिखाई तेहि, कहे देखि ज्योतिषी आनन, विचारि के ॥ २२ ॥
लक्षण सुन्दर सब, देखौं याको नरपति, कुलक्षण मोहि एक, दुःख दुभाई है ।
चौदह बरस महं, खोई पति सुता तोर, विधवा बनिहैं मोहि, गनना लगाई है ॥
सुनि शोच कियो अति, नरपति तेहि काल, गये कछु दिन सुता, अवसर पाई है ।
गौरी याज्ञवल्क्य घर, न्टपसुता सिमन्तिनी, गयो मुनि नारी को, चरण शिरनाई है ॥ २३ ॥
कही समाचार सब, रोइ बिलखाइ अति, दया लागी मुनि नारी, निकट बैठाई के ।
सोमवार व्रत उर, देश कियो तेहि तहं, देई परितोष दियो, सदन पैठाई के ॥
गयो कछु काल बूझ, सेन सुत चित्रांगद, संग दियो चित्रबर्मा दुहिता बिहाई के ।
गौरी चित्रांगद गोता, नल के सुन्दर अति, चित्रबर्मा घर तब, रहे हरषाई के ॥ २४ ॥
एक दिन यमुना, लहर हवा खावे गयो, नाव चढ़ि साथ सखो, सब कहु लेई के ।
दैव योग नाव डूबी, डूबि गयो सब जन, सुनि चित्रवर्मा परे, भूमि मुर्छाई के ॥
सिमन्तिनी भयो पति, हीन तन छीण अति, सती ते बराजि राखि, माय लपटाई के ।
गौरी सोमवार व्रत, करति सतत नारी, प्रतिदिन शिवपूजा, करति हढ़ाई के ॥ २५ ॥
चित्रांगद डूबो जल, देखि सर्प नारी बहु, मिलो सब धरि तेहि, तक्षक निकट को ।
लेई गयो देखि तेहि, तक्षक पूछेउ हाल, राखि तीन वर्ष तेहि, सादर निकट को ॥
बिनय सुनि अस काल, देई तेहि रत्न बहु, सग सुत निज भेजि, यमुना के तट को ।
गौरी अक्षकामग, चढ़ाई उपजाई दियो, टरे शिव नाशे दुख, बिपद संकट को ॥ २६ ॥
तेहि दिन संध्या काल, यमुना किनार नारी, सिमन्तिनी गयो पूजा, हेतु असनान को ।
चित्रांगद देखि रानी, बदन निकट गयो, पूछि हाल सकल, सकुचि निज प्राण को ॥
भयो पहिचान पति, पाई सिमन्तिनी निज, चित्रबर्म्मा आयो घर, करि सनमान को ।
गौरी प्रभु कष्ट तें, बचाये माता पिता निज, चित्रांगद राज कियो, सकल बखान को ॥ २७ ॥
चित्रांगद सिमन्तिनी, सोमवार व्रत करे, भोजन कराबे द्विज, विप्र नारी दिवसौं ।
तेहि राज देवमित्र, सारस्वत विप्र दोऊ, रहे मित्र प्रेमी अति, सुखो सदा दिवसौं ॥
देवमित्र सुत नाम, सुमेधा विख्यात भयो, सारस्वत सुत नाम, वान है पंडितसौं ।
गौरी दोऊ पिता के, बचन मानि एक बार, गयो दरबार चित्रांगद धन हितसौं ॥ २८ ॥

पिता उपदेश सुनि, सामवान नारी रूप, धरो गयो सुमेधा, पुरुष रूप सोई के ।
सिमन्तिनी जानि गई, पूजि शिवरानी जानि, होय धन जन बहु, पायि रूप गाई के ॥
छल फल सामवान, नारी भयो सचमुच, पिता तार बिलखिउ, बहुबिधि रोई के ।
गौरी सिमन्तिनी बानी, मानि उमा सत्यता, पूजे पाये सुत दूनो, ज्ञान निपुनाई के ॥३९॥
सामवान बिवाह, भयेऊ सब बिधि युत, सुमेधा के संग शिव, पुराण बखानी है ।
सोमवार व्रत धरि, विधवा न होत कभु, सुत मिलै अपुत्र को, व्रत सुखखानी है ॥
सोमवार व्रत किये, संकट कटत सब, सोमवार व्रत काल, कलुष नशानी है ।
गौरी सोमवार व्रत, करिये मुदित मन, सुजन समाज व्रत, महिमा सुहानी है ॥ ४० ॥

॥ अथ उमा महेश्वर व्रत ॥

नाम उमा महेश्वर, बरत वार्षिक एक, मनोरथ सिद्धदाई, सुखद सुहाई है ।
चैत्रमार्गशीर्ष शुक्ल, अष्टमी चौदश तिथि, पूर्णमासी अमावस, व्रत दिन आई है ॥
प्रात अभिषेक करि, मण्डप बनाई एक, राखिके कलश पांच, वस्त्र पंपाई है ।
गौरी तेहि पर धरि, मूर्त्ति शिव शिवाकार, शिव कर शंख चक्र, गदा पद्म आई है ॥ ४१ ॥
शिवा को अनेक विधि, आभूषण देई तब, पूजिये शंकर शिवा, मन्तर उच्चारि के ।
ब्राह्मण भोजन तब, कराई दक्षिणा देई, विदा करि मधुर, भोजन शुभ कारि के ॥
एक बर्ष दश पच, करिये बरत एहि, शतरुद्री पढ़ि शिव, लिंग जल ढारि के ।
गौरी उमा महेश्वर व्रत नारी शारदा को, दियो भली विधि भव, निधि जग तारि के ॥४२॥
वैदभ नाम द्विज कहं, सुता भई रूपवती, शारदा विख्यात नाम, कवि बतलाई है ।
बूढ़ो बिप्र संग एक, नरेश आदेश बश, व्याह भई तेहि कर, घर पति आई है ॥
तेहि दिन सर्प काटे, मरि गयो पति तार, अपार विपद पड़े, दुख अधिकाई है ।
गौरी एक दिन पिता, भवन पधारी नारि, दुख भरि मन अग, काहु ना सुहाई है ॥ ४३ ॥
एकदिन पिता माता, बाहर गयेउ तार, तेहि दिन वैध्रुव, अंधक मुनि आये हैं ।
शारदा की सेवा तें, प्रसन्न भयो मुनि सोई, दियेउ आशिष तेहि, अति सुख पाये हैं ॥
पति तें आपन तुम, पाओ एक सुत नारी, महतारी पिता माता, सुनि भौंचकाये हैं ।
गौरि मुनि कहैं उमा, महेश्वर व्रत करु, विधान बताई सुनि, चले चित लाये हैं ॥४४॥
जान लगे घर पिता, शारदा न जान देत, राखिउ मनाई मुनि, आपन भवन को ।
विधि युत व्रत रखि, शारद सेवेउ मुनि, मुनिहुं पूजन उमा, किन्हेउ यतन को ॥

गिरिजा दरश दियो, हाल कही शारदा के, पूर्व जन्म द्राविड़ के, विप्र ज्ञानघन को ।
गौरि नारी रही छोटी, द्विज कर जाई साई, पति को दुलारी अति, मोहे तन मन को ॥४५॥
विप्र एक परोसिया, कर गहि तेहि कर, भाग ..र चाहे तेहि, डांटी वह नारी है ।
लाज वश काम के, विवश होई मरि गये, सोई विप्र बूढो भयो, सर्प जेहि मारी है ।
शारदा के पति वसे, पाण्डव सुदेश मह, तीन शत आठ दूर, योजन सभारी है ।
गौरी तेहि संग ताहि, स्वप्न मह भेंट होई, भोगी तेहो संग सत, जगत तोहारी है ॥४६॥
गोकर्ण तीर्थ क्षेत्र महं, तेहि सग मिलि जग, पाई के विविध सुख, भोगि तरि जैहैं ।
कहो उमा गुप्त भई, अ धक को मिली नैन, शारदा को गर्भ भयो, सुत एक लैहैं ॥
शारदेश नाम तेहि, लेई बहु काल बीते, गई तीर्थ गोकर्ण, जहां पति पैहैं ।
गौरी उमा महेश्वर, व्रत के प्रताप नारी, पति संग तरि गई, कवि नित गैहैं ॥४७॥
भाषा शिवपुराण, कवित में समाप्त भयो, शिव जू बनायो निज, भक्तन भलाई के ।
शिव कर भक्त रहो, ग्रंथ मह छाई भाई, हेत पाठ भव निधि, सहज टपाई के ॥
तजि छल कपट, विश्वास करि शिव पर, पढ़हु दीजिहैं मन, करुना पुराई के ।
गौरी कछु कविता की, रीति नहीं जानों हम, शिव जू बनायो कह्यं, शिव के दोहाई के ॥४८॥
त्रिलोकमणि मिश्र सुत, रहे लछुमन मिश्र, जाके सुत विरञ्चि लाल, मिश्र पांच मिश्र हैं ।
लछुमन मिश्र अनुज, गोकुल मणि मिश्र कर, पुत्र घुटरू मिश्र, झगरू मिश्र, चखी मिश्र हैं ॥
विरञ्चि लाल मिश्र कर, पुत्रचार भयो जग, गौरी शीतल वासुदेव, सन्त लाल मिश्र हैं ।
गौरी चारो भाई रहैं, जगत एकत्र मिलि, सुमिरि सकल शिव, शिवा के चरित्र हैं ॥४९॥
शिव अवतार रहे, पिता जू हमारो जग, वरस अनेक शिव, गंज वास करि के ।
सुरसरि काटो छोड़, वसे मिरजाफरी में, सेवे गुरु चरण, सकल परि हरि के ॥
कालो माई भक्त वड़ो, कालिका प्रसाद मिश्र, भयो गुरुदेव पिता, जू के अवतरि के ।
गौरी लेई मंत्र कालो, माई के हमारो पिता, जपि नित गये अन्त, भव निधि तरिके ॥५०॥
खरिक निवासी गुरु, देव महाराज मेरो, कालिका प्रसाद मिश्र, कर सुत रहई ।
देवि प्रसाद मिश्र, परम विख्यात जग, हरि अवतार जग, सबकोई कहई ॥
महिमा अपार वड़ो, दया करि दीक्षा दिन्हों, किन्हों नेहाल दियो, फल सस चहई ।
गौरी गुरुदेव दया, ऋद्धि सिद्धि चारो फल, सदेह कैलास मे, निवास नित लहई ॥५१॥
विश्वनाथ करुणा तें, मन्दिर बनायो एक, पिता जू हमारी गुरु, देव धाम जाई के ।

किहो स्थापना , मुदित मन तं पुनि , शिव लिंग सांगोपांग , काशी जोतें कोई ..
काशी धाम दक्षिण , गंगा के किनारा पर , मन्दिर विराजै नाथ , शोभ झलकाई को
गौरी जब मन कास , सकल पुरावें शिव , जगत सतत भांत , विविध पुजाई को
सुनै सप्ताह कथा , श्री भागवत कर , एकादशवार पिता , मोर हर्षाई को
तुलादान करि कियो , तीरथ भ्रमण पुनि , जगदीश गया काशी , प्रयाग शुभदाई को
बिन्ध्याचल चित्र कूट , अवध कानन वृन्दा , मथुरा आनन्द पांच , जगत सोहाई को
गौरी अन्त शुभगति , काशी महं जाई लहे , पिता जू हमारो गुण , रहौं शिव गाई कौ
एक दिन षष्ठी तिथि , आश्विन दसहरा महं , पिताजू हमारो उठे , पूजी दुर्गा माई को
खाइ के प्रसाद सोये , शय्या निज जाई करि , देखि यमदूत सून्हे , नैन मुंदाई को
हाहाकार मची घर , सकल विकल भये , रोयो बहु हम , विश्वनाथ को दोहाई को
गौरी विश्वनाथ भेजे , दूत बहुतेरो निज , दाहिनो श्रवण लिनु , दिन्हेउ जिलाई को
खोले नैन भयो चैन , पिताजी हमारा जब , कियो वर्णन सब , हाल समुझाई को
सुनि अचरज लाला , विश्वनाथजी के सब , रहे बार बार शिर , नाई गुण गाई को
फैलो विश्वनाथ यश , भुवन चतुर्दश , महिमा अपार रहो , तिहुं लोक छ
गौरी विश्व नाथ के , शरण गये सुख होत , विश्वनाथ देत सब , कामना पुराई को
पिता के बचन मानि , रहा घर सब कोई , एक साथ करि सेवा , पिता के यतन सें
तेरह शत दस साल , परम विमान भयो , पिताजू हमारो तब , शरद पतन सें
पौष मास मरे वर , प्राण लौटि आयो पुनि , लै गयो काशी तेहि , जननी मतन सें
गौरी काशी महं जाई , प्रह्लादघाट घर निज , नव दान ददे पिता , जीवन रतन लै
गौरि चरु शीतल , श्री वासुदेव लखनलाल , सुत चार छाड़ि भव , उदधि अपार सें
पाई मुक्ति परम , मिलेउ विश्वनाथ महं , फैला रहो यश चहुं , दिशि मनुसार सें
शिव अवतार रहे , शिव भये अन्त पुनि , रहस कैलास नित , धरम प्रचार सें
गौरि दर्शन मोहि , देतो विश्वनाथ साथ , रखहु सदेह मोहि , शिव सकार में
पिताजू पठायो देव , नागरी औ अंगरेजी , फारसी औ बंगला , आदम सुत चार को
जेहि के प्रताप करें , ओकालत वजी कर , गौरी चरु शीतल औ , वासुदेव कार को
गौरी किया काम सुनु , लियो कार भागलपुर , मुंगेर जमुई हाजी , पुर औ विहार को
पाछे पितु उपदेश , सुनि तजि दियो तेहि , रहो घर करत , ओकालत बिचार को